प्राचीन भारत का इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास,
(30 लाख B.C. - 712 A.D.)

- अध्ययन की सुविधा के लिए प्राचीन भारत के इतिहास को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–
- **प्रागैतिहासिक काल (Pre Historic Era)-**वैसा काल जिसका लिखित साधन उपलब्ध नहीं है, और मानव पूर्ण रूप से सभ्य नहीं बना था, उस काल को प्रागैतिहासिक काल या प्राक् काल कहते हैं।
- इस काल के बारे में प्राप्त जानकारी उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर किया जाता है। जैसे–हड़प्पा सभ्यता के पूर्व का काल।
- **आद्य–ऐतिहासिक काल (Proto Historic Era)-**वैसा काल जिसमें लिखित साधन उपलब्ध है, लेकिन अभी तक उसका अर्थ हमलोग नहीं निकाल पाये हैं, उस काल को आद्यऐतिहासिक काल कहा जाता है।
- **हड़प्पा सभ्यता** का काल आद्यऐतिहासिक काल के अन्तर्गत माना गया है।
- **ऐतिहासिक काल (Historic Era)-**वैसा काल जिसमें हमारे पास लिखित साक्ष्य है और उसका अर्थ भी निकाल लिया गया है, साथ ही मानव पूर्ण रूप से सभ्य भी बन गया था। उस काल को ऐतिहासिक काल कहा जाता है। जैसे–600 B.C. से अभी तक का काल।

प्राचीन भारत के इतिहास का स्रोत

- **पुरातात्विक स्रोत**–इसके अन्तर्गत हमलोग निम्नलिखित तथ्यों को शामिल कर सकते हैं–

(1) **अभिलेख**–यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है। अभिलेख के अध्ययन को अभिलेखशास्त्र या **एपीग्राफी** कहा जाता है। भारत में **हड़प्पा सभ्यता** के अभिलेख अभी तक नहीं पढ़ा गया है, वह अशोक का अभिलेख है।

- सर्वप्रथम अशोक के अभिलेख को **जेम्स प्रिंसेप** ने 1837 में पढ़ा था, जो ब्राह्मी लिपि का है।
- अशोक के अभिलेख को **चापड़** ने लिखा था।

अशोक के अधिकांश अभिलेख ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है। इसके साथ ही खरोष्ठी, अरमाइक और ग्रीक लिपि का भी प्रयोग किया गया है।

- **ब्राही लिपि**–परम्परा के अनुसार इस लिपि के जनक भगवान ब्रह्म है। यह बायें से दायें लिखा जाता है। इसको सर्व प्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।
- **खरोष्ठी लिपि**–इसका जन्म अरमाइक लिपि से माना गया है, जो दाएँ लिखा जाता है।
- अशोक के अभिलेख **प्राकृत** (अर्द्धमागधी) भाषा में लिखा गया है।

अभिलेख का नाम		संबोधित शासक का नाम
प्रयाग प्रशस्ती	–	समुद्रगुप्त
ऐहोल अभिलेख	–	पुलकेशिन द्वितीय
हाथी गुम्फा अभिलेख	–	खारबेल
गिरनार अभिलेख	–	रूद्रदामन
मेहरौली लौह स्तंभ	–	चन्द्रगुप्त – II
मंदसौर अभिलेख	–	कुमार गुप्त प्रथम
मधुवन, बांसखेड़ा	–	हर्षवर्द्धन

(1) **बोगाजकोई अभिलेख**–यह मध्य एशिया से प्राप्त हुआ है, जो 1400 ई. पूर्व का है। इसे संधि पत्र अभिलेख भी कहा जाता है। इस अभिलेख से स्पष्ट होता है कि आर्य लोग मध्य एशिया से चलकर सर्वप्रथम ईरान में रूके थे और यहीं से दो शाखाओं में बँटकर पूर्व तथा पश्चिम चले गए। पूर्व में आकर वैदिक सभ्यता को जन्म दिया और पश्चिम में जाकर पश्चिमी सभ्यता को जन्म दिया।

- इस अभिलेख में वैदिक देवता **इन्द्र, वरूण, मित्र** और **नासत्य/अश्विन** का उल्लेख किया गया है।

(2) **बेसनगर का गरूड़ स्तंभ**–यह अभिलेख मध्यप्रदेश में स्थित है। बेसनगर का प्राचीन नाम विदिशा है।

- यह अभिलेख यूनानी शासक हेलियोडोरस से संबंधित है।
- इस अभिलेख से स्पष्ट होता है कि यूनानी शासक हेलियोडोरस ने भागवत धर्म को अपना लिया था, क्योंकि इसने अभिलेख में स्वयं को भागवतम् कहा है।
- **पर्सीपोलिस और बहिस्तून अभिलेख**–प्राचीन काल में ईरान या फारस की राजधानी पर्सीपोलिस था। इन दोनों अभिलेख से यह स्पष्ट होता है कि भारत पर सर्वप्रथम ईरानी शासक डेरियस प्रथम या दारा प्रथम ने आक्रमण किया था।
- भारत पर सर्वप्रथम ईरानियों (फारसी) ने आक्रमण किया। इसके बाद **यूनानियों** ने आक्रमण किया था।
- **मूर्तिकला**–मूर्तिकला से भी हमलोगों को प्राचीन भारत के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त होता है। हड़प्पा सभ्यता से ही मूर्तिकला का निर्माण शुरू हो गया था। कुषाण काल में मूर्तिकला का अधिक विकास हुआ और गुप्तकाल में इसका सर्वाधिक विकास हुआ।

(1) **गंधार कला** – यह वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। प्राचीन काल में गंधार राज्य की राजधानी तक्षशिला था। इस क्षेत्र में जिस कला का उद्भव एवं विकास हुआ उसे गंधार कला कहा गया।

- **हिन्द + यूनानी** (ग्रीक) के मिश्रण से गंधार कला का जन्म हुआ था।
- भगवान बुद्ध की मूर्ति सर्वप्रथम गंधार कला के अंतर्गत बनाया गया, जो यूनानी देवता अपोलो के समान है

(2) मथुरा कला – गंधार कला विदेशी है, जबकि मथुरा कला पूर्णतः स्वदेशी है। गंधार कला और मथुरा कला का अधिक विकास कुषाण काल में हुआ था।

- **चित्रकला**–मूर्तिकला के समान ही चित्रकला से भी प्राचीन भारत के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है, जिसमें कुछ चित्रकला प्रमुख है।

(1) अजन्ता की चित्रकला–यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है यहाँ पर कुल 29 गुफा था, लेकिन वर्तमान में 6 गुफा ही सुरक्षित रूप में बचा हुआ है। जैसे–1, 2, 9, 10, 16, 17 इसमें 16, 17 गुप्तकालीन माना गया है।

- **प्रारंभ में सातवाहन वंश के शासकों** ने इसका निर्माण कराया था, और सबसे अधिक विकास गुप्तकाल में हुआ।
- यह जातक कथाओं पर आधारित चित्रकला है। यह बौध धर्म की महायान शाखा से संबंधित है।

गुफा संख्या 16 में मरण्णासन राजकुमारी का चित्र दया का भाव प्रदर्शित करता है और गुफा संख्या 17 में माता एवं शिशु का चित्र महत्वपूर्ण है, जिसको चित्रशाला कहा गया है।

(2) एलोरा की चित्रकला–यह भी महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिला में है। प्रारंभ मं यह 43 गुफा थी, लेकिन 1990 में उत्खनन के बाद 28 गुफा और मिली। इस प्रकार वर्तमान में कुल 71 गुफा है।

- **यह राष्ट्रकूटों से संबंधित है।**
- यह **सनातन धर्म, बौद्ध धर्म** और **जैनधर्म** से संबंधित है।
- **एलिफेंटा की चित्रकला**–यह मुम्बई से लगभग 9 किमी. की दूरी पर स्थित है। इसका प्राचीन नाम **धारानगरी** था। पुर्तगालियों ने यहाँ पर पत्थर की विशाल हाथी की मूर्ति के कारण इसका नाम एलिफेंटा रख दिया।
- **यह भी राष्ट्रकूटों के द्वारा** बनाया गया है।
- यह शैव धर्म से संबंधित है, क्योंकि यहाँ से विश्व प्रसिद्ध भगवान शिव की त्रिमूर्ति मिली है।
- **बाघ की चित्रकला**–यह मध्य प्रदेश में धार जिला मे नर्मदा की सहायक नदी बाघ नदी के किनारे बाघ नामक गाँव में अवस्थित है। यहाँ से कुल 9 गुफा मिली है, जो गुप्तकालीन है।
- यह चित्रकला बौद्ध धम्र के महायान शाखा से संबंधित है।
- **सिक्का**–सिक्का से प्राचीन भारत के सामजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त ाहोती है। सिक्का के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (न्यूमिसमेटिक्स)** कहा जाता है।
- भारत में सर्वप्रथम 600 ई. पू. में चाँदी का सिक्का जारी किया गया, जिसको आहत (ंचमाक्डर्ढ) कहा गया है।

साहित्य में इसको कर्षापण कहा गया है। यह चाँदी का टुकड़ा जहोता था, जिसपर पेड़–पौध, चंद्र, सूर्य आदि की आकृति अंकित होता था इस पर तिथि क्रम और शासक का नाम नहीं लिख गया है।

- भारत में सर्वप्रथम **सोने** का सिक्का **हिन्द–यूनानी** ने जारी किया था।
- सर्वप्रथम लेखयुक्त या तिथिक्रम और आकर्षक सिक्का **हिन्दी–यूनानियों** नें जारी किया था।
- **सबसे अधिक सोने का सिक्का गुप्त शासकों ने जारी किया था।**
- सबसे अधिक **शुद्ध सोने का सिक्का कुषाणों** ने जारी किया था।
- **भवन एवं स्मारक**–भवन एवं स्मारक से भी सभी अवस्था, कला एवं संस्कृत और तकनीकी के बारे में जानकारी मिलती है जैस–राजप्रसाद, मंदिर निर्माण शैली, बिहार, स्तूज, चैत्य, अवशेष।
- **राजप्रसाद**–चन्द्रगुप्त मौर्य ने पटना के कुम्हरार में 80 स्तंभ वाला राजप्रसाद (राजमहल) का निर्माण कराया था, जिसके अवशेष कुम्हारा संग्रहालय में सुरक्षित है। इस राजप्रसाद की तुलना ईरान की राजधानी पर्सीपोलिस के राजमहल के साथ किया गया है।
- यह राजप्रसाद **लकड़ी** का बना हुआ था।
- **मदिर निर्माण शैली**–इससे वास्तुकला या स्थापत्य कला के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसके अन्तर्गत तीन प्रकार की शैली को शामिल किया जाता है।

(A) नागर शैली–हिमालय से लेकर विंध्य तक के क्षेत्र में यह शैली लोकप्रिय है। यह शैली मुख्य रूप से **उत्तर भारत में** प्रचलित है। जैसे पूरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, **दिलवाड़ा का जैन मंदिर,** भुवनेश्वर का लिंग राज मंदिर।

(B) बेसर शैली–हिमालय से लेकर विंध्य तक के क्षेत्र में यह शैली लोकप्रिय है। यह शैली मुख्य रूप से **उत्तर भारत में** प्रचलित है। जैसे पूरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, **दिलवाड़ा का जैन मंदिर,** भुवनेश्वर का लिंग राज मंदिर।

(C) द्रविड़ शैली–कृष्णा नदी से लेकर कन्याकुमारी के बीच के क्षेत्र में यह लोकप्रिय है। **गोपुरम (ऊँचे प्रवेश द्वारा)** और विमान (एक के ऊपर एक मंजिल) द्रविड़ शैली की मुख्य विशेषता है। उदाहरण–**काँची का कैलाशनाथ मंदिर, तंजौर का राज राजेश्वर या वृहदेश्वर मंदिर,** आदि प्रमुख है।—

- द्रविड़ शैली का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर है।
- द्रविड़ शैली **दक्षिण भारत** के क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- भारत में सर्वप्रथम मंदिर निर्माण **गुप्तकाल** में हुआ।

(3) विहार–विहार का शाब्दिक अर्थ बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थल होता है। इसी विहार शब्द से आगे चलकर बिहार शब्द का जन्म हुआ। इन स्थलों पर वर्षा ऋतु के समय में बौद्ध भिक्षु निवास करते थे, साथ ही बौद्ध धर्म से संबंधित शिक्षा का कार्य भी किया जाता था। बिम्बिसार ने वेलुवन महाविहार और जेतकुमार ने जेतवन महाविहार का निर्माण कराया था।

- **विश्व की सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय (महाविहार) तक्षशिला विश्वविद्यालय है।**

इसका निर्माण राजा तक्ष ने कराया था। चाणक्य जैसे व्यक्ति तक्षशिला में अध्ययन किये थे और कालान्तर में यहाँके प्राचार्य भी बने।

- भारत की सबसे प्राचनी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय या महाविहार **नालंदा विश्वविद्यालय** है, जिसका निर्माण गुप्त वंश के शासक **कुमार गुप्त प्रथम** ने कराया था। यह बौद्ध धर्म दर्शन के लिए विख्यात था।
- भारत का दूसरा प्राचीन विश्वविद्यालय भागलपुर के समीप विक्रमशीला विश्वविद्यालय है, जिसका निर्माण पाल वंश के शासक **धर्मपाल** ने कराया था।
- **मुहम्मद बिन–बख्तियार खिलजी** (तुर्क मुसलमान) ने नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला को तोड़ दिया।
- **स्तूप**–भागवान बुद्ध के मृत्यु के बाद उनके पार्थिव शरीर को 8 भागों में विभाजित करके अर्द्ध चन्द्राकार का स्तंभ ईंट के द्वारा निर्मित किया गया। बौद्ध परम्परा के अनुसार मौर्य वंश के शासक अशोक ने 84,000 स्तूप का निर्माण कराया था, जिसको शुंग वंश के शासक पुष्यमित्र शुंग ने ध्वस्त करा दिया। कुछ प्रसिद्ध स्तूप निम्नलिखित हैं–सारनाथ का स्तूप, साँची का स्तूप, केसरिया का स्तूप और राजगीर का स्तूप महत्वपूर्ण हैं।
- **केसरिया (पूर्वी चम्पारण, बिहार) का स्तूप विश्व का सबसे ऊँचा स्तूप है।**
- जापान की सरकार की सहायता से राजगीर में विश्व शांति स्तूप निर्मित किया गाय है।
- **चैत्य**–यह बौद्ध धर्म का पूजा घर या पूजा स्थल माना जाता है। कई स्तंभों पर निर्मित बहुत बड़ा कमरा होता है, जो चारों तरफ से खुला हुआ होता है। बौद्ध भिक्षु यहीं पर साल में एक बार उपोसथ का पाठ करते हैं, जिसको पातिमोख भी कहा गया है।
- **अवशेष**–भारत क`विभिन्न क्षेत्रों मं उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर भी प्राचीन भारत के इतिहास का निर्माण किया जा सकता है t Sb&gfLrukiqjdh[kqbZ1 si Hr vo'kSkdsvk/kkj ij ;g dgkt kl drkgSfd 900 B.C. पूर्व से 850 B.C. के बीच महाभारत का युद्ध का हुआ होगा।

पांडिचेरी के **अरिकामेडु** से रोमन सिक्का, रोमन मृदभांड, रोमन बस्ती का साक्ष्य और रोम के सम्राट आगस्ट्स की मूर्ति प्राप्त हुआ है, जो स्पष्ट करता है कि प्राचीन काल में भारत और रोम के बीच व्यापारिक संबंध था। इस प्रकार पुरातात्विक स्रोतों से हम लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाता है।

ब्राह्मण धर्म ग्रंथ

- **ब्राह्मण धर्म ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखा गया है।**

(1) **वेद**–वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है। परम्परा के अनुसारी भगवान बह्मा ने कुछ मौखिक उपदेश ऋषि–मुनियों को दिया था और इन लोगों ने इसका प्रचार प्रसार किया। महार्षि वेद व्यास ने इन मौखिक धर्म उपदेशों को ग्रंथ के रूप में संग्रहित किया। वेद के रचनाकार या संकलनकर्ता महर्षि वेदव्यास को माना गया है।

- वेद को अपौरूषेय/संहिता/श्रूति भी कहा गया है, जिसकी संख्या 4 है।

(1) **ऋग्वेद**–इसका शाब्दिक अर्थ होता है मंत्रों/ऋचाओं का संग्रह। ईश्वर की अराधना के समय ऋग्वेद के मंत्र का स्तुति पाठ किया जाता है। यह वेद **10 मण्डल** (भाग) **1028 सूक्त** (मंत्रों का संग्रह) और **10600 मंत्रों** में संग्रहित है।

- **ऋग्वेद** सबसे प्राचीन वेद है।

2 से लेकर 7 मण्डल सबसे प्राचीन है। 1 और 10वाँ मण्डल सबसे बाद में जोड़ा गया है अर्थात् यह सबसे नया है। 8वाँ और 9वाँ मण्डल को मध्य मण्डल में रखा गया है।

- ऋग्वेद के **10वें मण्डल** के पुरूषसूक्त में सर्वप्रथम **शूद्र (वर्ण व्यवस्था)** का उल्लेख किया गया है।
- ऋग्वेद के **नौवा मंडल** में भगवान **सोम** के बारे में वर्णन किया गया है।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद से लिखा गया है, जो तीसरा मण्डल में है और इसके लेखक विश्वामित्र हैं।
- गायत्री मंत्र **सविता (सावित्री)** को समर्पित है।

(2) **सामवेद**–साम का शाब्दिक अर्थ गान होता है अर्थात् ईश्वर की आराधना के समय इस वेद के मंत्रों को गीत के रूप में गया जाता था। कुल 1549 मंत्रों में से 75 के अतिरिक्त सभी मंत्र ऋग्वेद से लिया गया है।

- **भारतीय संगीत** का जन्म सामवेद से हुआ है।
- **यजुर्वेद**–यह यजुष शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ यज्ञ होता है अर्थात् यज्ञ से संबंधित सभी महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख इस वेद है। कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष इसके दो मुख्य भाग हैं।
- यह एक मात्र वेद है जो **गद्य एवं पद** दोनों में लिखा गया है।
- ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद को वेदयत्री कहा गया है।

(4) **अथर्ववेद**–यह सबसे नया वेद है अर्थात् सबसे बाद में लिखा गया है कुछ विद्वानों ने इसे वेद की श्रेणी में नहीं रखा गया है। ऋग्वेद की रचना 1500 BC से लेकर 1000 BC के बीच हुआ था। इसके बाद सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद की रचना 1000 BC से लेकर 600 BC के बीच हुआ था। अथर्वा ऋषि ने इस वेद को लिखा, इसलिए अथर्ववेद नाम पड़ गया।

- ऋषि अंगरिश ने सहयोग किया था, इसलिए अथर्ववेद को अथर्वा–अंगरिश वेद भी कहा जाता हैं यह 40 काण्ड (भाग) 431 सूक्त और लगभग 6000 मंत्रों में संग्रहित है। इसमें जादू टोना, जंतर–मंतर, माया और वशीकरण, रोग, रोग निवारक औषधी के बारे में वर्णन किया गया है।
- अथर्ववेद में सर्वप्रथम, **मगध, अंग और राजा परिक्षित** के बारे में उल्लेख किया गया है।
- **ब्राह्मण**–वेद को अच्छे तरीके से समझने के लिए ब्राह्मण ग्रंथ की रचना की गयी है। इसमें **यज्ञ से संबंधित कर्मकाण्ड** का वर्णन किया गया है। सभी वेद के अपने–अपने ब्राह्मण ग्रंथ है।
- **आरण्यक**–इसका शाब्दिक अर्थ वन होता है अर्थात् वैसा ग्रंथ जिसका अध्ययन वनों में या शांत माहौल में किया जाए आरण्यक कहलाता है, जिसकी संख्या 7 है।

- अथर्ववेद का आरण्यक ग्रंथ नहीं है।
- **उपनिषद्**–यह वेद का अंतिम भाग है इसलिए **वेदांत** भी कहा गया है। यह दो शब्दों के मेल से उप+निषद से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है। गुरू के समीप बैठकर ज्ञान ग्रहण करना। इसकी कुल संख्या 108 है, जिसमें 10 महत्वपूर्ण है। इसमें ब्रह्म सिद्धांत, रहस्यों से भरी बात, जीवन और मृत्यु, यमराज के बारे में उल्लेख किया गया है। सबसे बड़ा उपनिषद् का नाम बृहदारण्यक है, और सबसे छोटा उपनिषद् माण्डूक्य है।
- हमारा राष्ट्रीय आदर्श वाक्य ''**सत्यमेव जयते**'' **मुण्डको उपनिषद्** से लिया गया है।
- **कठो उपनिषद्** में यमराज और नचिकेता के संवाद का उल्लेख किया गया है।
- **बहदारण्यक उपनिषद्** के अनुसार **याज्ञवल्क्य ऋषि को राजा जनक के दरबार में गार्गी** ने पराजित कर दिया था।
- **जाबालो उपनिषद् में सर्वप्रथम चार आश्रम के बारे में उल्लेख** किया गया है। उदाहरण–**ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम।**

वेद	उपवेद	ब्राह्मण	पुरोहित
(i) ऋग्वेद	आयुर्वेद	ऐतरेय, कौषितकी	होतृ
(ii) सामवेद	गन्धर्व वेद	पंचवीश, ताण्ड्य	उदगाता
(iii) यजुर्वेद	धनुर्वेद	शतपथ, तैतरीय	आध्वुर्य
(iv) अथर्ववेद	शिल्पवेद	गोपथ	ब्रह्म

- **वेदांग**–वेदों को समझने के लिए और व्याकरण के दृष्टिकोण से शुद्धिकरण के लिए इन ग्रंथों की रचना की गयी है, जिसकी संख्या 6 है–(i) शिक्षा (ii) कल्प (iii) निरूक्त (iv) छंद (v) ज्योतिष (vi) व्याकरण।
- गौतम ऋषि ने कल्प की रचना की थी।
- यास्क महोदय ने निरूक्त की रचना की थी, जिसका अर्थ भाषा विज्ञान होता है।
- **भारत की प्रथम व्याकरण ग्रंथ अष्टाध्यायी है, जिसके लेखक पाणिनी है।**
- **सूत्र साहित्य**–सूत्र साहित्य से प्राचीन काल में सामाजिक और धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त होता है, जिसकी संख्या 3 है–(i) गृह सूत्र (ii) श्रोत सूत्र (iii) धर्म सूत्र।
- **शूल्व सूत्र**–इस ग्रंथ में सर्वप्रथम यज्ञ वेदी या हवन कुण्ड या अग्निकुंड के निर्माण विधि का उल्लेख किया गया है।
- भारतीय रेखा गणित का प्रारंभ शूल्व सूत्र से माना गया है।
- **महाकाव्य**–इसकी संख्या दो है–(i) महाभारत (ii) रामायण।
- **महाभारत–यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।** इसमें कुटनीति, राजनीतिक, कौरव–पाण्डव का युद्ध का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। महाभारत का युद्ध 18 दिन चला था, इसलिए महाभारत को 18 पूर्व (भाग) में विभाजित किया गया है।

  प्रारंभ में इसमें 8800 श्लोक था, तब इसका नाम जयसंहिता था। श्लोकों की संख्या बढ़ाकर 1 लाख तब यह महाभारत कहलाया।
- जिस प्रकार वेद का रचनाकार वेद व्यास को माना गया है, उसी प्रकार महाभारत का रचनाकार भी वेद व्यास थे।
- अकबर के समय महाभारत को फारसी भाषा में **रज्मनामा** नाम से अनुवाद किया गया।
- **रामायण**–यह बाल्मिकी की रचना है। यह सात काण्डों (भागों) में विभाजित है। इसमें नैतिक विचारों के बारे में विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया। प्रारंभ में इसमें 6000 श्लोक था जो बाद में बढ़कर 12000 हो गया और अंत में बढ़कर 24000 हो गया।
- अकबर के समय में रामायण को फारसी भाषा में अनुवाद बदायूँनी ने किया था।
- भारत से बाहर सर्वप्रथम रामायण का **अनुवाद विदेशों में चीन** में हुआ था।
- **भुशुण्डी रामायण को आदि रामायण** के नाम से जाना जाता है।
- ***स्मृति***–स्मृति ग्रंथ से भी प्राचीन काल की सभी अवस्थाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- **मनु स्मृति** भारत की पहली **कानून की पुस्तक** है।
- **मनु स्मृति** भारत की **सबसे प्राचीन स्मृति** है।
- याज्ञवल्क्य स्मृति भारत की दूसरी सबसे प्राचीन स्मृति है।
- **ओशनम् स्मृति में सर्वप्रथम कायस्था जाति** के बारे में उल्लेख किया गया है।
- **पुराण**–ब्राह्मण धर्म के अनुसार पुराणों को शामिल किया जाता है। लोमहर्ष ऋषि और उग्रश्रवा ने इनकी रचना की थी, जिनकी संख्या 18 है। पुराण की उपभग की संख्या भी 18 है।
- **सबसे प्राचीन और प्रमाणिक पुराण मत्स्य पुराण** है, जिससे **सातवाहन वंश** के बारे में जानकारी मिलता है।

बौद्ध धर्म ग्रंथ

- **त्रिपिटक**–बौद्ध धर्म का प्रथम और सबसे प्राचीन ग्रंथ त्रिपिटक है। भगवान बुद्ध ने अपना उपदेश मौखिक दिया था। 483 ई. पूर्व इनके मृत्यु के बाद मौखिक उपदेशों को ग्रंथ के रूप में संग्राहित किया गया, जिसकी संख्या तीन है–

(1) **विनयपिटक**–प्रथम बौद्ध संगीति में भगवान बुद्ध के शिष्य उपाली ने इसकी रचना की थी। इसको बौद्ध धर्म का संविधान कहा गया है।

- वियनपिटक में बौद्ध धर्म से संबंधित नियम कानूनों का उल्लेख किया गया है। वियपिटक का भाग महावग्ग को बौद्ध धर्म का या विनयपिटक का लघु संविधान कहा गया है।

(2) **सूतपिटक**–इसकी रचना भी प्रथम बौद्ध संगीति में भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने किया था। इसमें भगवान बुद्ध के उपदेशों का या सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है।

(3) **अभिधम्मपिटक**–इस पिटक की रचना तृतीय बौद्ध संगीति में मोगलीपुत्र तिस्स ने किया था। **यह बौद्ध धर्म का दर्शन है।**

- **जातक**–इस ग्रंथ में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों का उल्लेख किया गया है। इसके अुनसार भगवान बुद्ध ने 550 बार जन्म लिया है। मैत्रेय के नाम से एक बार भगवान बुद्ध का और जन्म होगा।
- **मिलिन्दपण्हो**–इसका शाब्दिक अर्थ मिलिन्द का प्रश्न होता है। मिलिन्द या मिनाण्डर यूनानी शासक था, जिसको नागसेन ने बौद्ध धर्म में दिक्षित किया। इन दोनों के प्रश्न और उत्तर के क्रम में पाली भाषा में इसको लिखा गया है।
- **अंगुतरनिकाय**–इसमें 16 महाजनपद का उल्लेख किया गया है।
- **दीपवंश एंव महावंश**–इस ग्रंथ की रचना श्रीलंका की प्राचीन राजधानी अनुराधापूरम में किया गया था।
- इससे पता चलता है कि अशोक ने बौद्ध धम्र के प्रचार प्रसार के लिए अपने **पुत्र महेन्द्र पुत्री संघमित्रा** को श्रीलंका भेजा था।
- महावंश के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या कर गद्दी को प्राप्त किया।

  इन दोनों ग्रंथों से मौर्य वंश और श्रीलंका के राजवंश के बारे में जानकारी मिलता है।
- **दिव्यावदान**–इस ग्रंथ से मौर्य वंश के बारे में और अशोक को बौद्ध धम्र के अपनाने के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- **महावस्तु**–इस ग्रंथ से भी मौर्य वंश के बारे में सभी महत्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त हो जाती है।
- **ललितविस्तार–इससे बौद्ध धर्म के उत्थन एवं पतन** के बारे में जानकारी मिलती है।
- **आर्यमंजुश्रीमूलकल्प**–मौर्य वंश तथा बौद्ध धर्म के पतन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

जैन धर्म ग्रंथ

- प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोत में जैन धर्म ग्रंथ का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं अधिकांश ग्रंथ प्राकृत भाषा या अर्धमागधी भाषा में लिखा गया है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

(1) **आगम**–यह जैन धर्म का प्रथम और सबसे प्राचीन ग्रंथ है। इसका शाब्दिक अर्थ सिद्धांत होता है। हय 12 अंग (भाग) और 12 अपांग (उपभाग) में विभाजित है, जिसको 14 पूर्व कहा गया है।

(2) **भगवतीसूत्र**–यह जैन धर्म का महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें भगवान महावीर के जीवन चरित्र के बारे में उल्लेख किया गाय है।

- इस ग्रंथ में **16 महाजनपद** का उल्लेख किया गया है।

(3) **आचरांगसूत्र**–इस ग्रंथ में जैन धर्म से संबंधित नियमों का उल्लेख किया गया है।

(4) **उवासगदसाओ**–इस ग्रंथ में मौर्य वंश के संस्थपक चन्द्रगुप्त मौर्य और उनके धार्मिक गुरू भद्रबाहु के बारे में उल्लेख किया गया है।

- जैन धर्म भारत में सबसे अधिक लोकप्रिय व्यापारी वर्ग में हुआ था।

(5) **परिशिष्टपर्व**–इस ग्रंथ में मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मार्य और उनके धार्मिक गुरू भद्रबाहु के बारे में उल्लेख किया गया है।

धर्मेत्तर ग्रंथ

- स्रोत के रूप में धार्मिक ग्रंथ के साथ–साथ गैस धार्मिक ग्रंथ या धर्मेत्तर ग्रंथ भी अधिक महत्वपूर्ण है। इन ग्रंथों से प्राचीन काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के बारेमें सभी महत्वूपर्ण जानकारी प्राप्त होती है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

ग्रंथ का नाम		लेखक	ग्रंथ का नाम		लेखक
अर्थशास्त्र	–	कौटिल्य	अष्टाध्यायी	–	पाणिनी
महाभाष्य	–	पतंजलि	राजतरंगिणी	–	कल्हण
विक्रमांकदेव चरित	–	विल्हण	पृथ्वीराजरासो	–	चंदवरदायी
पृथ्वीराज विजय	–	जयनकभट्ट	हर्षचरित	–	वाणभट्ट
मुद्राराक्षस	–	विशाखदत्त	मिताक्षरा	–	विज्ञानेश्वर
दायभाग	–	जीमूतवाहन	अभिज्ञानशाकुंतलम्	–	कालीदास
मालविकाग्निमित्र	–	कालीदास	ऋतुसंहार	–	कालीदास
विक्रमोवर्शीय	–	कालीदास	रघुवंशम्	–	कालीदास
पंचतंत्र	–	विष्णुशर्मा			

- **अर्थशास्त्र**–यह भारत की प्रथम राजनीतिक या राजनीतिशास्त्र या प्रशासन की पुस्तक है, जो 15 अधिकरण (भाग) और 180 प्रकरण तथा लगभग 6000 श्लोक में संग्रहित है। इसके लेखक कौटिल्य को चाणक्य भी कहा जाता है, जिसका बचपन का नाम विष्णुगुप्त था। इसमें मौर्य वंश के प्रशासन के साथ–साथ सभी अवस्थाओं के बारे में उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ की तुलना मेकियावेली की पुस्तक **द प्रिंस** के साथ किया गया है। द प्रिंस नामक ग्रंथ को आधुनिक काल का अर्थशास्त्र कहा गया है। अर्थशास्त्र में **सर्वप्रथम आकाल** का, **वित्तीय व्यवस्था** का और **साप्तांग सिद्धांत** का उल्लेख किया गाय है।
- **अष्टाध्यायी**–यह भारत की व्याकरण की प्रथम पुस्तक है, जिसकी रचना लगभग 600 ई. पू. में की गयी।
- **महाभाष्य**–अष्टाध्यायी पर पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की। इस ग्रंथ से शुंग वंश के बारे में भी जानकारी मिलती है। शुंग वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शंगु के पुरोहित के रूप में पतंजलि ने कार्य किया था।
- **मुद्राराक्षस**–यह गुप्त काल में लिखा गया ग्रंथ है, जिससे चन्द्रगुप्त मौर्य के बारे में जानकारी मिलती है।
- **अभिज्ञानशाकुंतलम्–भारत के शेक्सपीयर** कहे जाने वाले कालिदास ने इस पुस्तक के साथ–साथ अन्य कई पुस्तक की रचना की है इस ग्रंथ मे राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रेम संबंधों का उल्लेख किया गया है।
- यह ग्रंथ बाइबिल और पंचतंत्र के बाद लोकप्रियता के मामले में विश्व का तीसरा स्थान है। लगभग 250 से अधिक भाषाओं में इसका अनुवाद किया गया है।

- **ऋतुसंहार**–ऋतुसंहार नामक पुस्तक में भारत के 6 ऋतुओं के बारे में विस्तारपूर्वक कालिदास ने उल्लेख किया है।
- **मेघदूतम्**–मेघदूतम् नामक ग्रंथ में वर्षा ऋतु के साथ–साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।
- **मालविकाग्निमित्र**–इस ग्रंथ में राजकुमारी मालविका और पुष्यमित्र शुंग के पुत्र अग्निमित्र के प्रेम संबंधों का उल्लेख किया गया है। साथ ही शुंग वंश के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- **राजतरंगिणी**–इस ग्रंथ से कश्मीर में राज्यवंश के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। भारतीय ग्रंथ में यह सबसे प्रमाणिक माना गया है। कश्मीर के शासक जयसिंह के राज दरबार में रहने वाले कल्हण ने इसकी रचा की थी।
- **पृथ्वीराजरासो**–इस ग्रंथ में पृथ्वीराज चौहान और मु. गौरी के युद्ध का वर्णन किया गया है। इसके लेखक चन्दबदाई पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे।
- **पृथ्वीराज विजय**–इस ग्रंथ से भी मुहम्मद गौरी और पृथ्वी राज चौहान के बीच हुए संघर्ष के बारे में उल्लेख किया गया है।
- **हर्षचरित**–इसके लेखक वाणभट्ट पाटलिपुत्र के निवासी थे। हर्ष–वर्धन इसको अपनी राजधानी थानेश्वर (अम्बाला, हरियाणा) ले गया और राजकवि के पद पर आसीन कर दिया। हय ग्रंथ हर्षवर्धन का जीवन चरित है।
- **मिताक्षरा**–यह सामाजिक कानून से संबंधित पुस्तक था। यह भारत की प्रथम पुस्तक है, जिसमें उत्तराधिकार संबंधी नियमों का उल्लेख किया गया है।
- **दायभाग**–इस ग्रंथ के लेखक भी विज्ञानेश्वर के समकालीन थे। इसमें भी नियम कानून का उल्लेख किया गया है।

इस प्रकार साहित्यिक स्रोतों से हमलोग को प्राचीन काल की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होता है।

- **विदेशी स्रोत**–पुरातात्विक और साहित्य के स्रोत के साथ–साथ विदेशी स्रोत से हमलोगों को महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। विदेशी स्रोत से राजाओं का नाम और तिथिक्रम के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है। अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–

यूनानी ग्रंथ

ग्रंथ का नाम		लेखक
हिस्टोरिका	–	हेरोडोटस
हिस्ट्री–ऑफ–द–वार	–	आरिस्टोबुलस
इण्डिका	–	मेगास्थनीज
भूगोल	–	टॉलमी
प्राकृतिक इतिहास	–	प्लिनी
विश्व भूगोल	–	स्ट्रैबो
पेरिप्लस–ऑफ–द–एरिथ्रियन–सी	–	एक अज्ञात यूनानी
चीनी ग्रंथ		
फो–क्यो–की	–	फाहियान
सी–यू–की	–	व्हेनसांग
काउ–फो–काओ–सांग–चून	–	इत्सिंग
कंगयुर, तंग्युर	–	लामा तारानाथ
व्हेनसांग की जीवनी	–	व्हवीली
अरबी ग्रंथ		
किताब–उल–हिन्द	–	अलबरूनी

यूनानी ग्रंथ

(1) हिस्टोरिका – इस पुस्तक के लेखक हेरोडोट्रस यूनान के रहने वाले थे। लगभगक 500 ई. पूर्व में इसकी रचना यूनान की क्षेत्रीय भाषा आयोनिक भाषा में किया गया। इस पुस्तक में भारत में किया गया। इस पुस्तक में भारत और फारस के बीच व्यापारिक संबंधों का उल्लेख किया गया है।

- हेरोडोट्स ने सर्वप्रथम इतिहास शब्द का प्रयोग किया, इसलिए इसे इतिहास का जनक कहा गया है।

(2) हिस्ट्री–ऑफ–द–वार–इससे भारत का सिकंदर के आक्रमण करने का जानकारी प्राप्त होती है।

- सिकन्दर महान ने खैबर दर्रा से होकर **326 ई. पू.** में भारत पर आक्रमण किया था।

(3) इण्डिका–सिकन्दर महान सेनापति सेल्यूकस निकेटर के राजदूत मेगास्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य दरबार में लगभग सात वर्षों तक रहा था। इसने जो कुछ भी देखा उसको इण्डिका नामक ग्रंथ में संकलित किया। लेकिन मेगास्थनीज ने यूनानी दृष्टिकोण को अपनाते हुए इसकी रचना की थी, क्योंकि वह भारतीय समाज को पूर्ण रूप से समझ नहीं सका था।

- इसके अनुसार भारत में अकाल नहीं पड़ता था।
- इसके अनुसार भारत में दास प्रथा नहीं थी।
- इसके अनुसार भारत में समाज सात भागों में विभाजित था।
- मौर्य नगर प्रशासन के बारे में सबसे विस्तारपूर्वक उल्लेख इण्डिका में किया गया है।

(4) प्राकृतिक इतिहास–इस पुस्तक में पेड़–पौधे, पशु–पक्षी के साथ–साथ वाणिज्य–व्यापार का उल्लेख किया गया है। भारत और रोम के बीच व्यापारिक संबंध का विस्तारपूर्वक उल्लेख भी किया गया है।

- प्लिनी ने **रोम से सोन के निर्यात** पर दुख प्रकाट किया है।

- प्लिनी के अनुसार इसी तरह रोम से सोने का निर्यात भारत किया गया तो केवल 10 साल में रोम से सोना प्राप्त हो जायेगा।
- **भूगोल**–इस पुस्तक में भारत और विदेशों के साथ व्यापारिक संबंधों से अतिरिक्त भूगोल के बारे में भी उल्लेख किया गया।

(6) **विश्व भूगोल**–इसमें भी भूगोल के साथ–साथ व्यापारिक संबंधों का उल्लेख किया गया है।

- **पेरिप्लस–ऑफ–द–ऐरिथ्रियन–सी**–इस पुस्तक में भी जलमार्ग से संबंधित विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। इसका लेखक कोई अज्ञात यूनानी था।
- इस पुस्तक को व्यापारियों का गाइड बुक कहा गया है।

चीनी ग्रंथ

- इस ग्रंथ के अंतर्गत सभी चीनी यात्री बौद्ध धर्म के बारे में अधिक जानकारी के लिए और बौद्ध धर्म से संबंधित ग्रंथ को संग्रहित करके आपने साथ ले जाने के लिए आये थे, जिसमें कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित है–

(1) **फो–क्यो–की**–इसे ''बौद्ध देशों का यात्रा वृत्तांत'' के नाम से भी हमलोग जानते हैं। गुप्त वंश के शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय इसके लेखक फाह्यान भारत आए थे और जो कुछ भी देखा उसको ग्रंथ के रूप में संकलित किया।

- **फाह्यान पहला चीनी यात्री था, जिसने भारत की यात्रा की थी।**
- फाह्यान के अनुसार गुप्त काल में दैनिक लेनदेन में कौड़ियों का प्रयोग किया जाता था।
- इसके बाद **संगयून ने 518 ई.** में यात्रा की थी।

(2) **सी–यू–की**–इसे व्हेनसांग की यात्रा वृतांत भी कहा जाता है। या, पाश्चात्य संसार का लेख भी कहा जाता है। इसके लेखक व्हेनसांग हर्षवर्धन के समय (629–644) भारत आये थे। इनके सम्मान में हर्षवर्द्धन ने कन्नौज में पाँचवीं बौद्ध संगति का आयोजन भी किया था।

- व्हेनसांग ने नालंदा विश्वविद्यालय में **6वर्षों तक** अध्ययन किया था।
- व्हेनसांग की जीवनी को इनके मित्र व्हीली ने लिखा है।
- हवेनसांग को यात्रियों का राजकुमार और वर्तमान का शाक्यमूनि तथा ''नीति का पण्डित'' कहते हैं।

(3) **काउ–फो–काओ–सांग–चून**–इसे बौद्ध धर्म के सार–संग्रह भी कहा जाता है। इसके लेखक इत्सिंग ने सातवीं सदी (673) में भारत की यात्रा की थी, जब बौद्ध धर्म का पतन शुरू हो गया था।

- **कंग्यूर, तंग्यूर**–इस ग्रंथ को बौद्ध धर्म का इतिहास कहा गया है। लामा तारानाथ तिब्बत के बौद्ध भिक्षु थे, जिन्होंने बौद्ध ग्रंथ की रचना की थी।

अरबी ग्रंथ

- **किताब–उल–हिन्द / तहकीक–ए–हिन्द**–इसके अन्तर्गत एक मात्र महत्वपूर्ण ग्रंथ को शामिल किया जाता है।
- इस पुस्तक के लेखक अलबरूनी के बचपन का नाम **अबुरिहान** था।
- इस पुस्तक के लेखक अलबरूनी के बचपन का नाम **अबुरिहान** था। यह महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। इस पुस्तक कीरचना ग्यारहवीं सदी में किया गया, जिसमें सामाजिक धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक कला एवं संस्कृति, विज्ञान एवं तकनीक, भारतीयों के रीति रिवाज तथा जीवन से संबधित सभी आवश्यक बातों का उल्लेख किया गया है।
- इस पुस्तक के अनुसार भारत में जाति का निर्धारण माता की जाति से होता है।

इस पुस्तक का अंग्रेजी भाषा में अलबरूनी का भारत नाम से ई. सी. सचाऊ ने अनुवाद किया है। इस प्रकार प्राचीन भारत के स्रोत के रूप में तीनों स्रोत महत्वपूर्ण है, क्योंकि किसी एक के बिना प्राचीन भारत के इतिहास का निर्माण नहीं हो सकता है।

पाषाण काल

- यह काल पूर्ण रूप से पत्थर के औजार और जलवायु परिवर्तन के आधार पर विकसित किया गया है।

परिवर्तन के क्रम में मानव आदिमानव से ज्ञानी मानव की तरफ विकसित हो रहा था, जिसका क्रम निम्नलिखित है–

आस्ट्रेलोपिथेकस (30 लाख ईसा पूर्व) – होमोरेक्टस (1.3 लाख ईसा पूर्व) – नियण्डरथाल (1 लाख ईसा पूर्व) – क्रोमैग्नम (1 लाख – 40 हजार ईसा पूर्व) – होमोसेपियंस (ज्ञानी मानव) (40000 – 10000 ईसा पूर्व)

- मानव के आदि पर्वज का नाम आस्ट्रेलोपिथेकस था।
- रामापिथेकस का भारत में पहला साक्ष्य शिवालिक की श्रेणी से मिला है।
- दो पैरों पर सीधा होकर चलने वाला पहला मानव होमोइरेक्ट्स था।
- मानव का पहला प्रमाण विश्व के संदर्भ में दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त हुआ, जिसका काल Radio Carbon तिथि के द्वारा 26 लाख ईसा पूर्व निर्धारित किया गया है, लेकिन महाराष्ट्र में बोरी नामक स्थान से जो साक्ष्य मिला है उसका काल 14 लाख ईसा पूर्व निर्धारण किया गया है। यह काल 'हिमयुग' के नाम से संबोधित किया जाता है।

पुरातात्विक दृष्टिकोण के अनुसार हमारी पृथ्वी लगभग 4 अरब वर्ष पुरानी है, जो चार अवस्थाओं से होकर गुजरी है। चौथी और अंतिम अवस्था को दो भगों में विभाजित किया गया है। जैसे –

1. होलोसीन (न्यूनतम)
2. प्लाइस्टोसीन (अतिनूतन)

- मानव और स्तनधारी जीव का जन्म सर्वप्रथम प्लाइस्टोसीन काल में हुआ था।
- पाषाण काल के बारे में सर्वप्रथम रॉबर्ट ब्रुशफुट ने 1863 में जानकारी प्रस्तुत की थी। मद्रास के समीप पल्लववरम् नामक स्थान से इसको कुछ साक्ष्य प्राप्त हुआ था, जिसके आधार पर पाषाण काल का निर्धारण किया गया। अध्ययन की सुविधा के लिए इसको हमलोग तीन भागों

में विभाजित कर सकते हैं–

(1) पुरापाषाण काल (पेलियोलिथिक ऐज) (आखेटक एवं संग्राहक) (30 लाख – 10,000 BC)
(2) मध्यपाषाण काल (मेसोलिथिक ऐज) (आखेटक + पशुपालन) (9000 – 4000 BC)
(3) नवपाषाण काल (नियोलिथिक ऐज) (कृषि उत्पादन) (9000/7000 – 1000 BC)

पुरापाषाण काल

(1) निम्नपुरापाषाण काल (30 लाख – 1 लाख BC)
(2) मध्यपाषाण काल (1 लाख – 40,000 BC)
(3) उच्चपुरापाषाण काल (40,000 – 10,000 BC)

(1) निम्नपुरापाषाण काल – पाकिस्तान के सोहन नदी घाटी क्षेत्र में इस काल से संबंधित सबसे अधिक साक्ष्य मिला है, इसलिए इसे सोहन संस्कृति भी कहा गया है। इस काल की प्रमुख औजार हस्तकुठार (हैण्डेक्स) था, इसलिए हस्तकुठार संस्कृति भी कहा गया है।

(2) मध्यपुरापाषण काल – इस काल की प्रमुख विशेषता बटिकश्म उद्योग था अर्थात् नदी में जलधारा के प्रवाह से बड़े–बड़े पत्थर घिसकर छोटे–छोटे खिलौना के रूप में आकार ग्रहण कर लेते हो उसी को बटिकाश्म कहा गया है। इस काल की प्रमुख औजार फलक और शल्क (Blade) था।

(3) उच्चपुरापाषाण काल – इस समय हिमयुग समाप्त हो गया था। इस काल की दो प्रमुख विशेषता **नये चकमक उद्योग** और **ज्ञानी मानव का उदय।**

- इसी काल में सर्वप्रथम **आग** का आविष्कार हुआ।
- इसी काल में **ज्ञानी मानव** का उदय हुआ था।
- इस समय समाज मातृसत्तात्मक था।
- इस काल की प्रमुख औजार बेधनी, छेदनी और खुरचनी था।

मध्यपाषाण काल

- इस काल के बारे में सर्वप्रथम लॉर्ड करसाईल ने 1867 ई. में जानकारी प्रस्तुत की थी। इस समय शिकारी जीवन (आखेटक) पहले से चला आ रहा था और अंतिम समय में पशुपालन भी जुड़ गया। इस समय पहले की अपेक्षा हथियार धारदार बनाया जाने लगा।
- बागोर (राजस्थान)
- आदमगढ़ (मध्य प्रदेश)
- **बागोर और आदमगढ़** से सर्वप्रथम पशुपालन का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- **भीमबेटका** (मध्य प्रदेश) से अधिक संख्या में शैल आश्रय (गुफा घर) का प्रमाण मिला है, जिसको **unesco** ने विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है।

नवपाषाण काल

- इस काल के बारे में सर्वप्रथम सर जॉन लुबाक ने 1865 में जानकारी प्रस्तुत किया था। यह काल पूर्व की अपेक्षा विकसित काल था। जीवन स्थायी हो गया था। कृषि कार्य भी प्रारंभ हो चुका था। इस काल में सबसे तेज औजार बनने लगा था। कुछ महत्वपूर्ण स्थल का वर्णन निम्नलिखित है–
- **मेहरगढ़ –** यह पाकिस्तान के ब्लुचिस्तान में अवस्थित है।
- यहाँ से सर्वप्रथम कृषि कार्य करने का प्रमाण मिला है, यहाँ से **जौ और गेहूँ** का पहला सा जिसका काल 7000 BC माना है।
- भारत में सर्वप्रथम फसल के रूप में जौ के बारे में जानकारी मिलता है।

(2) बुर्जहोम – यह कश्मीर में अवस्थित है। यहाँ से गर्तावास का प्रमाण मिला है।

- यहाँ से मालिक के शव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण मिला है।
- **गुफकराल –** यह भी कश्मीर में स्थित है, जिसका शाब्दिक अर्थ कुलाल/कुम्हार का घर होता है। यहाँ से मृदभांड का पहला प्रमाण प्राप्त हुआ है। गर्तावास यहाँ भी मिला है।
- **मिपकलीहल –** यह उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिला में बेलन घाटी में अवस्थित है।
- यहाँ पर चावल की दो प्रजाति का साक्ष्य मिला है, जिसका काल 6000 BC है।
- **चिरौंद –** यह बिहार के सारण जिला में स्थित है।
- यहाँ से हिरण के हड्डी का औजार सबसे अधिक मात्रा में मिला है।

विविध तथ्य –

- इस काल में सर्वप्रथम पहिलया का आविष्कार हुआ और इसका सर्वप्रथम प्रयोग मृदभांड बनाने वाले चाक के रूप में किया गया।
- इस काल में सर्वप्रथम सान का आविष्कार हुआ।
- सर्वप्रथम कुत्ता को पालतु बनाया गया था।
- इस काल की प्रमुख औजार पत्थर की कुल्हाड़ी था। हड्डी का औजार भी बनने लगा था।
- ताम्र पाषाण काल को चालकोलिथिक काल भी कहा जाता है।

हड़प्पा सभ्यता

- यह भारत की सबसे प्राचीन और नगरीय सभ्यता है। इसके पूर्व भारतीय इतिहासकार वैदिक सभ्यता को ही सबसे प्राचीन सभ्यता मानते थे। लेकिन उत्खनन के बााद यह सबसे प्राचीन सभ्यता बन गया।
  gMi kl H;rk; kfl Ukq?kkVhl H;rkdks **आद्यऐतिहासिक** काल के अन्तर्गत रखा गया है।
- इस सभ्यता के बारे में सर्वप्रथम 1826 में हड़प्पा नामक स्थल से चार्ल्स मैसन को कुछ महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हुआ था। पुनः 1853 में हड़प्पा स्थल से ही अलेक्जेण्डर कनिंघम को हड़प्पा लिपि का कुछ साक्ष्य प्राप्त हुआ। लाहौर से कराँची के बीच जब रेलवे लाइन का निर्माण किया जा रहा था, तब ब्रेटन बंधु (जॉन ब्रेटन, विलियम ब्रेटन) को कुछ असाधारण ईंट प्राप्त हुआ और सरकार ने 1857 ई. को अलेक्जेण्डर कनिंघम को अनुसंधान करने के लिए नियुक्त किया।
- लॉर्ड कर्जन ने 1904 में पुरातत्व विभाग की स्थापना की थी, जिसके महानिदेशक सर जॉन मार्शल थे।
- 1921 में हड़प्पा नामक स्थल का खुदाई किया गया। परिणामस्वरूप इस नगरीय सभ्यता के बारे में हमलोगों की जानकारी प्राप्त हई।
- **नामाकरण** – हड़प्पा सभ्यता के नामकरीण के बारे में विभिन्न मत दिया गया है। जैसे–

(1) **सिन्धु घाटी की सभ्यता** – इस सभ्यता का प्रारंभिक विस्तार सिन्धु नदी घाटी के क्षेत्र में हुआ था, इसलिए यह नाम रख दिया गया। सर जॉन मार्शल ने 1924 में यह नाम दिया था।

(2) **मेलूहा सभ्यता** – मेसोपोटामिया (वर्तमान का ईराक) में सिंधु नदी घाटी को मेलूहा कहा गया है। सिन्धु का प्राचीन नाम मेलूहा भी है, इसलिए यह नाम रख दिया गया।

(3) **प्रस्तर–धातुयुगीन सभ्यता** – इस काल में धातु का औजार अधिक प्रचलित था। लेकिन पत्थर का औजार भी पहले से चला आ रहा था, इसलिए दोनों को मिलाकर प्रस्तर धातुयुगीन सभ्यता कहा गया।

(4) **कांस्ययुगीन सभ्यता** – इस सभ्यता के अन्तर्गत सबसे अधिक कांसा का प्रयोग किया जाता था, इसलिए इसे **कांस्ययुगीन सभ्यता** कहा जाता है।

- भारत में सर्वप्रथम तांबा के बारे में जानकारी प्राप्त हुई, इसलिए ताँबा को पवित्र धातु कहा गया।
- हड़प्पा सभ्यता में **लोहा** के बारे में जानकारी नहीं थी।

(5) **हड़प्पा सभ्यता** – यह वर्तमान में सबसे उपयुक्त नाम है, क्योंकि पुरातत्व विभाग के अनुसार किसी भी सभ्यता का क्षेत्र बहुत विस्तारित हो जाता है तब उसका नाम उसी स्थल पर रखा जाता है, जिसके बारे में सबसे पहले जानकारी मिली हो।

- **क्षेत्रफल** – हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्रफल प्राचीन विश्व की सभ्यताओं में बड़ी सभ्यता के रूप में माना गया है, जिसको उपर्युक्त रूपों में देखा जा सकता है।
- हड़प्पा सभ्यता का संपूर्ण क्षेत्रफल 1299600 वर्ग किमी. है।
- **निर्माता** – हड़प्पा सभ्यता के जनक क बारे में विद्वानों में एक समान मत नहीं है। भाषा विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, कला एवं संस्कृति तथा पुरातात्विक स्रोत के आधार पर विद्वानों ने अपना–अपना मत प्रस्तुत किया है। जैसे–

विद्वान	जनक
सर जॉन मार्शल	सुमेरियन
मार्टिमर व्हीलर	सुमेरियन
राखलदास बनर्जी	द्रविड़
डॉ. गुहा	मंगोल + अल्पाईन (मिश्रित जाति)
सर्वमान्य मत	द्रविड़

- उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस सभ्यता के जन्म विदेशी नहीं बल्कि भारतीय थे।
- **काल निर्धारण** – जिस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के निर्माता के बारे में विवाद है, उसी तरह काल निर्धारण में भी विद्वानों में मतभेद है।

विद्वान का नाम	**काल**	
सर जॉन मार्शल	3250 BC	-2750 BC
अर्नेस्ट मैके	2800 BC	-2200 BC
एम. व्हीलन	2500 BC	-1500 BC
रेडियो कार्बन तिथि	2350/2300 BC	-1750 BC
सर्वमान्य मत	2350/2300 BC	-1750 BC

- **स्वरूप** – हड़प्पा सभ्यता का स्वरूप दो भागों में विभाजित किया गया है। जैसे –

(1) **नगरीय सभ्यता** – हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता था। पुरातात्विक साक्ष्य यह स्पष्ट करता है कि इस काल में नगर निगम या नगरपालिका जैसे प्रशासनिक ईकाई रहा होगा।

(2) **शांतिमूलक स्वरूप** – हड़प्पा सभ्यता शांतिमूलक सांस्कृति का उदाहरण है, क्योंकि अब तक 2000 से अधिक स्थलों की खुदाई हुआ है और किसी भी स्थल से युद्ध संबंधी हथियार नहीं मिला है।

- **नगर नियोजन** – हड़प्पा सभ्यता विश्व के संदर्भ में एक नगरीय सभ्यता था। अध्ययन की सुविधा के लिए इसको निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है–
- **दो स्तरीय नगर**– इस सभ्यता के अन्र्तत दर्ग और निचला नगर दो भागों में विभाजित कर शहर को बसाया गया था। दूर्ग में सम्पन्न वर्ग के लोग रहते थे और निचला नगर में मजदूर वर्ग के लोग रहते थे अधिकांश शहरों को घेराबंदी किया गया था।
- **चन्हुदड़ो** एक मात्र स्थल जिसकी घेराबंदी नहीं की गयी थी।
- **जल प्रबंधन** – हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत जल–प्रबंधन की व्यवस्था उत्तम कोटि की थी। स्वच्छ जल का आगमन और गंदे पानी के

निकास के लिए नालियों का निर्माण कराया गया था।

- कालीबंगा से उत्तम कोटि के जल–प्रबंधन का साक्ष्य धौलावीरा से मिला है।
- **सड़क प्रबंधन –** इस सभ्यता के अन्तर्गत पूरब से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण एक–दूसरे को समकोण पर काटती हुई कच्ची ईंट से सड़कों का निर्माण किया गया था, जिससे शहर शतरंज बोर्ड के तरह दिखाई देता है। मुख्य सड़कों की चौड़ाई 9 मीटर और गली की चौड़ाई 3 मीटर थी।
- ईंट का अनुपात 4 : 2 : 1 था।
- **भवन निर्माण –** इसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों को शामिल किया जा सकता है–

(1) **बृहद स्नानागर –** यह मोहनजोदड़ो से मिला है।
यह 39 फीट लंबा 23 फीट चौड़ा और 8 फीट गहरा है। कुछ विद्वानों के अनुसार धार्मिक कार्य के समय एवं अधिकांश विद्वानों के अनुसार सार्वजनिक समारोह के लिए और मनोरंजन के लिए इसको खोला जाता था। इसके सतह पर बिटुमिन का लेप लगा दिया जाता था, जिससे यह पक्की ईंट के जैसा हो जाता था।

(2) **अन्नागार –** यह भी मोहनजोदड़ो से मिला है।

- यह मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी ईमारत है।

(3) **गोदीबाड़ा –** यह लोथल से प्राप्त हुआ है।

- इसी बंदरगाह से सर्वाधिक विदेशों के साथ व्यापारिक कार्य किया जाता था।

(4) **पुरोहित का आवास –** यह भी मोहनजोदड़ो से वृहद स्नानागार के समीप मिला है, जिससे स्पष्ट होता है कि पुरोहित का स्थान प्रथम था।

- हड़प्पा सभ्यता के किसी भी स्थल से मंदिर का प्रमाण नहीं मिला।

(5) **सभा भवन –** यह भी मोहनजोदड़ो से मिला है। प्रशासनिक ईकाई के रूप में अर्थात् नगर निगम या नगरपालिका के रूप में इसको माना गया है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी।

- **प्रमुख स्थल –** प्रारंभ में हड़प्पा सभ्यता के उत्खनन के दौरान 6 स्थलों को नगरों की संज्ञा दी गयी थी, लेकिन धौलावीरा के उत्खनन के बाद इसकी संख्या वर्तमान में सात हो गयी है जो निम्नलिखित है–

स्थल	उत्खनन वर्ष	उत्खननकर्ता	नदी	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	1921	दयाराम साहनी	रावी	मांटगोमरी (पंजाब, पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्धु	(लरकाना, सिंध पाकिस्तान)
pkUgnMks	1931	t h- , u- et wnkj	fl Uèkq	¼fla/k] ikfdLrku½
y kFky	1953&1960	jaxukFk jko	Hkksok	vgenkckn ¼xqtjkr½
dkyhcaxk	1961	B.K. थापर, बी.बी. लाल	घघग्र	गंगा नगर (राजस्थान)
बनावली	1973–1974	आर. एम. विष्ट	–	हिसार (हरियाणा)
धौलावीरा	1990–1991	आर. एस. विष्ट	माहनहर	कच्छ (गुजरात)

प्रमुख स्थल

(1) **हड़प्पा –** यहाँ से दो पंक्ति में अन्नागार का 6-6 प्रमाण मिला है। यहाँ से गेहूँ और जौ का प्रमाण, कब्रिस्तान–H और समाधि R-37 ♦ का साक्ष्य भी मिला है।

(2) **मोहनजोदड़ो –** इसका शाब्दिक अर्थ प्रेतों का टीला या लाशों की समाधि या मृतकों का टीला होता है। यहाँ से **वृहद स्नानागार, अन्नागार, पुरोहित** का आवास, सभा भवन, सूती वस्त्र, **कांसे की नर्तकी की मूर्ति,** अग्निकांड और मलेरिया का साक्ष्य मिला है।

(3) **चान्हूदड़ो –** यह मोहनजोदड़ो से लगभग 134 किमी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ से झुकर और झांगर संस्कृति का प्रमाण, लिपिस्टिक का प्रमाण, कुत्ते के द्वारा बिल्ली का पीछा करते हुए और मनका उद्योग का प्रमाण मिला है। अधिकांश मनका का निर्माण सेलखड़ी (स्टेयाटाइट) से होता था।

(4) **लोथल –** यह एक बन्दरगाह नगर है। यहाँ से **चावल, फारस की मोहर,** मिस्र की मम्मी, गोरिल्ला, पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी का चित्र, हवनकुण्ड, चक्की का दो पार्ट, युगल शवाधान का प्रमाण मिला है। साथ ही हाथी दाँत का पैमाना और मनका तथा गुड़िया उद्योग का साक्ष्य भी प्राप्त हुआ।

(5) **कालीबंगा –** इसका शाब्दिक अर्थ – काले रंग की चुड़ी होता है। यहाँ से **जुते हुए खेत का प्रमाण (हलकुण्ड),** चना और सरसों, उत्तम कोटि का जल प्रबंधन, हवनकुण्ड और अलंकृत ईंट का प्रमाण मिला है।

(6) **बनावली –** यहा से **उत्तम कोटि का जौ,** हवनकुण्ड और **मिट्टी का बना हुआ** हल का प्रमाण भी मिला है।

अन्य स्थल–

- **दायमाबाद –** यह महाराष्ट्र में अवस्थित है। वर्तमान समय में यह हड़प्पा सभ्यता का सबसे दक्षिणी छोर है। यहाँ से एक धातु का रथ (इक्कागाड़ी) का प्रमाण मिला है।
- **भगतराव –** यह दायमाबाद के ठीक ऊपर गुजरात में किमसगार के तट पर अवस्थित है। दायमाबाद के पहले यह सबसे दक्षिणी स्थल था।
- **माँदा–** यह कश्मीर के अखनूर जिला में स्थित है। जगपति जोशी और मधुबाला ने 1982 में इसका उत्खनन कार्य संपन्न कराया।
- यह इस सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल है।

- **सुतकागेण्डोर** – यह पाकिस्तान के ब्लुचिस्तान प्रांत में मकरान के तट पर दास्क नदी के किनारे स्थित है। 1927 में ऑरेल स्टाईन के नेतृत्व में खुदाई का कार्य किया गया।
- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है और लोथल के समान बन्दरगाह नगर भी है।
- **आलमगीरपुर** – यह उत्तम प्रदेश के मेरठ जिला में यमुना की सहायक नदी हिण्डन नदी के किनारे स्थित है। 1958 में यज्ञ दत्त शर्मा के नेतृत्व में उत्खनन किया गया। यह सबसे पूर्वी स्थल है और यहाँ से उत्थान और पतन का साक्ष्य एक साथ मिलता है।
- **रंगपुर** – यह गुजरात में अहमदाबाद के समीप मादर नदी के किनारे स्थित है। रंगनाथ राव के निर्देशन में 1953 – 54 में खुदाई किया गयी।
- यहाँ से धान के भूसी का जला हुआ ढ़ेर मिला है।
- **सुरकोटड़ा** – यह गुजरात में स्थित है। इसका उत्खनन कार्य जगपति जोशी के नेतृत्व में 1964–67 के बीच में हुआ था।
- मोहनजोदड़ो के राणाघुण्डई नामक जगह से घोड़े का जबड़ा एवं दाँत मिला।
- **कुणाल** – यह हरियााणा के हिसार जिला में स्थित है। 1968 में सूरजमान के नेतृत्व में खुदाई की गयी। यहाँ से चाँदी का दो मुकुट मिला है।
- चाँदी का सर्वप्रथम प्रयोग हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने किया था।
- **रोपड़** – इसको रूपनगर भी कहते हैं। यह पंजाब में सतलज नदी के किनारे स्थित है। Y.D. शर्मा के नेतृत्व में इसका उत्खनन कार्य संपन्न किया गया था।
- यहाँ से मालिक के शव के साथ कुत्ते को दफनाये जाने का प्रमाण मिला है।
- स्वतंत्रता के बाद रोपड़ पहला स्थल है, जिसकी खुदाई की गयी।
- स्वतंत्रता के बाद गुजरात राज्य में सबसे अधिक स्थलों की खुदाई की गयी।
- **सामाजिक जीवन** – इसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों को हमलोग शामिल कर सकते हैं–
- **वर्णव्यवस्था** – इस समय वर्णव्यवस्थाा पूर्ण रूप से लागू नहीं था, फिर भी पुरोहित, योद्धा, व्यापारी और श्रमिक का साक्ष्य मिला है।
- इस समय समाज मातृसत्तात्मक था।
- **खान–पान** लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के थे। अभी तक नौ प्रकार के फसल के बारे में जानकारी मिली है।
- मुख्य खद्य पदार्थ गेहूँ और जौ था।
- **वेश–भूषा** – इस सभ्यता के निवासी सूती और ऊनी वस्त्र धारण करते थे।
- कपास का उत्पादन सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने किया था।
- मेसोपोटामिया में कपास सिन्धु एवं यूनान में सिन्डोम कहा गया है।
- भारत की सबसे प्राचीन उद्योग सूती वस्त्र उद्योग है, जिसका जन्म हड़प्पा सभ्यता में हुआ था।
- **मनोरंजन का साधन** – मनोरंजन का सबसे प्रमुख साधन पांसा खेलना था। सार्वजनिक उत्सव के समय मनोरंजन के लिए वृहद स्नानागार को भी खोल दिया जाता था। इसके साथ ही पशु– पक्षियों की लड़ाई में भी मनोरंजन किया जाता था।
- **दाह संस्कार** – इस सभ्यता के अन्तर्गत तीन प्रकार से दाह संस्कार का कार्य किया जाता था, जैसे–

(i) इसके अन्तर्गत मृत शरीर को जमीन में दफन कर दिया जाता था।
(ii) दूसरे रूप में मृत शरीर को खुले स्थान पर रख दिया जाता था।
(iii) इसके अन्तर्गत मृत शरीर को जलाकर राख आदि बचे हुए अवशेष को मिट्टी के बर्तन में रखकर भूमि में दफन कर दिया जाता है।

- **आर्थिक जीवन** – इस सभ्यता के अन्तर्गत आर्थिक जीवन समृद्ध था। इसके अन्तर्गत हमलोग निम्नलिखित बातों को शामिल कर सकते हैं–
- **कृषि** – यह क्षेत्र उस समय और आज भी अधिक उपजाऊ वाला क्षेत्र है। अभी तक नौ फसल के बारे में जानकारी मिली है।
- मुख्य खाद्य पदार्थ गेहूँ और जौ था।
- **पशुपालन** – कृषि के साथ–साथ पशुपालन का कार्य भी किया जाता था। एक शृंगी बैल (वृषभ) का प्रमाण सबसे अधिक मिला है। लेकिन कुबड़ वाला साड़ सबसे अधिक लोकप्रिय था, क्योंकि इसे धर्म के साथ जोड़ा गया था।
- गाय की मूर्ति का प्रमाण (मृणमूर्ति/टेराकोटा) नहीं मिला।
- वर्तमान समय में जो पशु पक्षी दिखाई पड़ रहे हैं वह लगभग हड़प्पा सभ्यता में भी थे।
- **वाणिज्य–व्यापार** – यह आर्थिक जीवन का आधार था, क्योंकि हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता था। इस समय ईरान, मेसोपोटामिया मिस्र, अफगानिस्तान और मध्य एशिया तथा सुमेर से व्यापारिक संबंध था। दिलमुन, माकन, उर प्रमुख व्यापारिक स्थल थे। कुछ प्रमुख वस्तुओं का आयात किया जाता था जैसे–

वस्तु	स्थान
लाजवर्दमणि (लेपीसलुजली)	बदख्शाँ (अफगानिस्तान)
सोना	ईरान, कोलार (कर्नाटक)
चाँदी	ईरान, अफगानिस्तान, मैसूर
ताँबा	खेत्री (राजस्थान)
फिरोजा	मध्य एशिया
टीन	हजारीबाग

- **शिल्प एवं तकनीक** – इस क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता के लोग विश्व के संदर्भ में सबसे आगे थे। इस समय तकनीक का प्रयोग करते हुए, मिट्टी, सैलखड़ी एवं धातु से वस्तु को निर्मित किया जाता था।

- मोहनजोदड़ो से काँसे की नृत्य करती महिला की मूर्ति मिली है, जिसका निर्माण भ्रष्ट मोम विधि या चिकोटी पद्धति से किया गया है।
- स्वास्तिक वाला मोहर सर्वाधिक मोहनजोदड़ो से मिला है, जिसका निर्माण सेलखड़ी से हुआ था।
- इस समय माप–तौल के लिए बाट का प्रयोग किया जाता था, जिसका अनुपात 16 था।
- **हड़प्पा लिपि –** इस सभ्यता के लिपि के बारे में सर्वप्रथम जानकारी 1853 में हुई थी और पूर्ण जानकारी 1923 में हुई। यह लिपि दाँये से बायें और बायें से दायें तरफ से लिखा जाता था। इसमें कुल 400 अक्षर है, लेकिन मूल अक्षरों की संख्या 64 है।
- हड़प्पा के लिपि को चित्रात्मक/सांकेतिक/ब्रुस्टोफेडन लिपि कहा गया है।
- **धार्मिक जीवन –** इस काल में लोग प्राकृतिक एवं जीवंत रूप में देवी–देवताओं की पूजा करते थे। इस समय मोहनजोदड़ो से एक मूर्ति प्राप्त हुआ है, जिसे चारो तरफ से एक बाघ, गेंडा, भैसा, हाथी और पैरों के पास दो हिरन हुए हैं।
- इस मूर्ति को सर जॉन मार्शल ने **आदि शिव** कहा है।
- भगवान शिव की प्रारंभिक पूजा का प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से मिलता है।
- हड़प्पा नामक स्थल से एक महिला के गर्भ से पौधा को निकलते हुए दिखलाया गया है, जिसे उर्वरता की देवी कहा गया है। इसके साथ ही नदी की पूजा, वन देवी की पूजा, नाग की पूजा, सूर्य की पूजा, पीपल के वृक्ष, तुलसी एवं लिंग–योनि आदि की पूजा का प्रमाण मिला है।
- अधिकांश स्थलों से ताबिज भी मिला है, जिससे पता चलता है कि लोग अंधविश्वासी भी थे। देवी माता और जादू–टोना जंतर–मंतर तथा भूत–प्रेत पर विश्वास करते थे। पुरोहित का प्रमाण मिला है, लेकिन मंदिर का प्रमाण नहीं मिला।
- **राजनीतिक जीवन –** इस सभ्यता के अन्तर्गत राजनीतिक जीवन का साक्ष्य नहीं मिला है। विद्वानों का मानना है कि नगर निगम या नगरपालिका जैसी प्रशासनिक ईकाई के माध्यम से व्यापारी वर्ग के द्वारा शासन व्यवस्था को संचालित किया जाता होगा।
- पिग्गट महोदय के अनुसार मोहनजोदड़ो और हड़प्पा इस सभ्यता की जुड़वाँ राजधनी थी।
- कुछ विद्वानों के अनुसार इस सभ्यता की तीसरी राजधानी कालीबंगा को बनाया गया था।
- **पतन का कारण –** जिस प्रकार हड़प्पा सभ्यता का उद्‌भव अचानक नहीं हुआ उसी प्रकार इसका पतन भी अचानक नहीं हुआ, बल्कि क्रमिक रूप में धीरे–धीरे हुआ। इसके पतन के बारे में विद्वानों में मतभेत है, जिसको हमलोग निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं–

विद्वानों का नाम	मत
सर जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
अर्नेस्ट मैके	बाढ़ के कारण
ऑरेल स्टाइन	जलवायु परिवर्तन के कारण
मार्टिमर व्हीलन	विदेशी आक्रमण या आर्यों का आक्रमण
जॉन केनेडी	अग्नि कांड और मलेरिया
डेल्स	जल धारा परिवर्तन के कारण

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता का पतन का कोई एक निश्चित कारण नहीं बताया जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कारणों ने मिलकर इसका पतन कर दिया।

विविध तथ्य :

- इस सभ्यता के अन्तर्गत लाल रंग का प्रयोग सर्वाधिक होता था।
- इस सभ्यता के बारे में संपूर्ण जानकारी पुरातात्विक स्रोत पर या उत्खनन पर निर्भर है।
- इसका आकार त्रिभुजाकार है।
- इस सभ्यता के अन्तर्गत लकड़ी के पाइप का प्रयोग किया जाता था।
- मोहनजोदड़ो में प्राप्त वृहद स्नानागार के पास कुषाण कालीन स्तूप मिला है।

वैदिक सभ्यता (1500 BC - 600 BC)

हड़प्पा सभ्यता के बाद भारत में एक महत्वपूर्ण सभ्यता का जन्म हुआ, जिसको वैदिक सभ्यता कहा गया है। इस सभ्यता के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी वैदिक ग्रंथों से मिलता है, इसलिए इसे वैदिक सभ्यता कहा गया है। इसको आर्य सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। आर्य का शाब्दिक अर्थ–श्रेष्ठ होता है इसलिए वैदिक सभ्यता को श्रेष्ठजनों की सभ्यता के नाम से भी हमलोग जानते हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए इसको हमलोग जानते हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए इसको हमलोग दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। जैसे–

वैदिक सभ्यता

ऋग्वैदिक सभ्यता/पूर्व वैदिक सभ्यता (1500 BC - 1000 BC)

उत्तरवैदिक सभ्यता (1000 BC - 600 BC)

- **आर्यों का मूल निवास–** इस सभ्यता के जनक आर्य लोगों का मूल निवास स्थान कहाँ था, इसके बारे में विद्वानों में मतभेद है। जैसे–

विद्वान का नाम	मत
डॉ. अविनाश चन्द्र	सप्तसैन्धव प्रदेश
प. गंगानाथ झा	ब्रह्मऋषि देश
डॉ. राजबली पाण्डेय	मध्यप्रदेश
बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव (आर्कटिक प्रदेश)
स्वामी दयानंद सरस्वती	तिब्बत का प्रदेश
मैक्समूलर	मध्य–एशिया / बैट्रिया

प्रो. पेन्का	जर्मन
प्रो. गाइल्स	हंगरी
सर्वमान्य मत	यूरेशिया (आल्पस पर्वत का पूर्वी भाग)

- बाल गंगाधर तिलक की महत्वपूर्ण पुस्तक द–आकर्टिक–होम ऑफ–आर्यन (वेदाज) में आर्यों का मूल निवास उत्तरी–ध्रुव बतलाया है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती की महत्वपूर्ण पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश मे मूल निवास तिब्बत बतलाया गया है।
- मैक्समूलर जर्मनी के मूल निवासी थे। लेकिन ब्रिटेन की नागरिकता प्राप्त कर दिया था और भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के समर्थक थे।
- **वैदिक भूगोल** – वैदिक कालीन भूगोल के अन्तर्गत निम्नलिखित तथयों को शामिल किया जाता हैः–
- **नदी** – ऋग्वेद में 40 नदियों का उल्लेख किया गया है, जिसमें कुल प्रमुख निम्नलिखित है–

नया नाम		प्रचीन नाम	नया नाम		प्राचीन नाम
सिन्ध	–	इन्दुस	सतलन	–	शतुद्रि
चिनाब	–	अस्किनी	झेलम	–	वितस्ता
व्यास	–	विपाशा	रावी	–	परूष्णी
सरस्वती	–	सुरसती			

उपर्युक्त नदी के क्षेत्र को सप्त सैन्धव प्रदेश कहा गया है। इन सातों नदियों में सबसे महत्वपूर्ण नदी सिन्धु नदी थी। सबसे पवित्र तथ लोकप्रिय नदी सरस्वती नदी थी। सरस्वती नदी को नदीतमा या नदियों की माता कहा गया है।

- ईरान से चलकर आर्य लोग सर्वप्रथम सप्तसैन्धव क्षेत्र में आकर बसे थे।

इस समय गंगा और यमुना महत्वपूर्ण नदी नहीं थी, क्योंकि गंगा का एक बार और यमुना का तीन बार ऋग्वेद में उल्लेख किया गया है। गंडक नदी को सदानीरा कहा गया है। नेपाल मं इसको नरायणी ओर शालिग्रामी कहा गया है। नदी स्तूती मं गोमती नदी है, जिसकी पहचान पंजाब की गोमल नदी से किया जाता है।

- **समुद्र** – आर्य लोग पूर्ण रूप से समुद्र के बारे में जानते थे या नही यह विवाद का विषय है, फिर भी चार महासागर का उल्लेख किया गया है–

(i) अपर (ii) पूर्व (iii) सारस्वत (iv) शरयाण्वत

- इसमें केवल अपर की पहचान अरब सागर के रूप में किया गया है।
- **पर्वत** – इस काल में हिमालय को हिमवंत कहा गया है और इसकी सर्वोच्च चोटी को मंजुवत से सोम का पौधा मँगाया जाता था।
- **रेगिस्तान** – ऋग्वेद में 'धन्व' शब्द का उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि रेगिस्तान के बारे में यह लोग जानकारी रखते थे।
- **क्षेत्र विस्तार** – आर्य लोग भारत में सप्तसैन्धव प्रदेश से बाहर निकलकर सर्वप्रथम कुरूक्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्र को जीत लिया और उसका नाम ब्रह्मावर्त रख दिया। उसके बाद गंगा–यमुना के दोआब को जीतने के बाद उसका नाम ब्रह्मऋषि देश रख दिया। पुनः हिमालय से लेकर विन्ध्य तक के क्षेत्र को जीतने के बाद इस क्षेत्र का नाम मध्यदेश रखा गया। अंत में बंगाल और बिहार को जीतने के बाद संपूर्ण भारत पर जब इन लोगों का नियंत्रण हो गया तब इस देश का नाम आर्यावर्त रख दिया गया। मौर्यकाल में भारत को जम्बूद्वीप भी कहा गया।
- राजा भरत के नाम पर इस देश का नाम वैदिक काल में भारत रख दिया गया।
- भारत को सर्वप्रथम यूनानी (ग्रीक) लोगों ने इण्डिया कहकर संबोधित किया।
- मध्यकाल के प्रारंभ में मुस्लिमों ने या इस्लाम धर्म के अनुयायियों ने भारत को हिन्द या हिन्दुस्तान कहकर संबोधित किया।

ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 BC)

इस काल के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी ऋग्वेद से मिलता है, इसलिए ऋग्वैदिक काल कहा जाता है, जिसके अन्तर्गत हमलोग निम्नलिखित बातों को शामिल कर सकते हैं–

सामाजिक जीवन

- **वर्ण–व्यवस्था** – इस समय मर्ण व्यवस्था जाति के आधार परी नहीं बल्कि कर्म के आधार पर विभाजित किया गया था। कर्म के आधार पर ही कार्यों का विभाजन होता था।
- **महिलाओं की स्थिति** – प्राचीन काल में महिलाओं की सबसे अच्छी स्थिति इसी काल में थी। इस समय पर्दा प्रथा, सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। महिलाएँ धार्मिक कार्य, युद्ध और मंत्रों के रचना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। यह लोग पिता की संपत्ति में भी पुत्र के समान अधिकार रखती थी।
- इस समय समाज पितृसत्तात्मक था।

इस समय कुछ विदूषी महिला का उल्लेख भी मिलता है, जिन लोगों ने वेद के मंत्रों की रना की थी, जैसे–लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, सिक्ता, विश्वारा। इन लोगों को ऋषि की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

- **विवाह पद्धति** – विवाह का मुख्य उद्देश्य संतान की प्राप्ति थी। इस समय बाल विवाह नहीं होता था। इस समय एकल विवाह, बहु–विवाह विधवा और नियोग प्रथा का प्रचलन था। आजीवन अविवाहित रहने वाली लड़कियों को अमाजू कहा गया है।
- **भेश–भूषा** – इस समय सूती और ऊनी वस्त्र का प्रयोग किया जाता था, जिसमें कुछ प्रमुख है :–

वासस – कमर के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।
नीवि – कमर के नीचे पहना जाने वाला वस्त्र
आधिवास – चादर का दुपट्टा को अधिवास कहा गया है।

- **आभूषण** – बहुमूल्य धातु के आभूषण संपन्न लोग और कम मतूल्य वाले आभूषण गरीब वर्ग के लोग धारण करते थे, जिसमें कुछ प्रसिद्ध है :
- **कुरीर** – माथे पर धारण किया जाने वाला।
- **रुक्म** – वक्ष पर धारण किया जाने वाला।
- **निष्क** – गले में धारण किया जाने वाला आभूषण
- निष्क कलांतर में सिक्का के रूप में लोकप्रिय हो गया।
- **कर्णशोभन** – कानों में धारण करने वाला।
- **सामाजिक ईकाई** – इस समय संयुक्त परिवार की प्रथा थी। परिवार का सबसे अधिक उम्र वाला व्यक्ति मुखिया होता था,ख जिसको कुलप कहा गया है। इस समय सामाजिक ईकाई का विभाजन नीचे से ऊपर की तरफ निम्नलिखित रूप में हुआ था–

t u ¼cl scMk½
fo'k
xke@xks
dqy@ifjokj ¼cl sNksVk½

- ऋग्वेद में जन का उल्लेख 275 बार और विश का उल्लेख 170 बार हुआ है।
- **मनोरंजन का साधन** – मुख्य साधन संगीत था। इसके साथ ही पासा खेलना, घुड़–दौड़, रथ–दौड़ और पशु–पक्षियों के लड़ाई से भी मनोरंजन किया जाता था।
- **खान–पान** – इस काल का मुख्य खाद्य पदार्थ जौर और गेहूँ था। लोग चावल (ब्रीही) का भी प्रयोग करते थे। शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के व्यक्ति शामिल थे। अतिथि को गाय का मांस खिलाया जाता था, इसीलिए अतिथि को गोहंत्ता कहा गया। गाय को अधन्या कहा गया।
- पेय पदार्थ में सोम रस का प्रयोग किया जाता था।
- **राजनीतिक जीवन** – इस काल में कबीला के रूप में राजनीतिक इकाई विभाजित था, जिसका सर्वोच्च व्यक्ति राजन या गोप्ता कहलाता था। इस समय राजा का पद वंशानुगत नहीं था। राजा की सहायता देने हेतु पुरोहित, सेनानी और ग्रामीणी नामक मुख्य अधिकारी थे। इसके साथ ही स्पश (गुप्तचर), उग्र/जीवगृभ (पुलिस अधिकारी), व्राजपति (चारगाह का अधिकारी) होता था।
- भरत कुल के शासक सुदास ने रावी नदी के किनारे दसराज के युद्ध में अपने विरोधियों को पराजित किया।
- इस समय पुरू, अनु, द्रहु, तुवर्सु, यदु पाँच महत्वपूर्ण जन सबसे शक्तिशाली था, जो मिलकर पंचजन कहलाते थे।
- राजा की निरंकुशता पर अंकुश लगाने के लिए तीन प्रकार की संस्था कायम थी, जैसे–

(i) **वीद्‍थ** – यह सबसे प्राचीन संस्था थी।
(ii) **सभा** – यह श्रेष्ठजनों की संस्था थी। इसके अध्यक्ष को गणधर कहा गया है। इसका स्वरूप वर्तमान के राज्यसभा के समान था।
(iii) **समिति** – वर्तमान में लोकसभा के समान था। इसके सदस्य आम जनता के द्वारीा निर्वाचित होते थे, जिसके अध्यक्ष को ईशान कहा गया है।

- सभा एवं समिति राजा को गद्दी दिलाने में और उनको गद्दी से हटाने में अपने शक्ति का प्रयोग करती थी। इस समय राजा को जनता के द्वारा स्वेच्छा से उपहार स्वरूप जो कर प्राप्त होता था उसे **बलि कहा गया।**
- **धार्मिक जीवन** – ऋग्वैदिक काल में ईश्वर की अराधरा का मुख्य उद्देश्य भौतिक सुख की प्राप्ती थी। इसके अन्तर्गत अरोग्य जीवन, संतान की प्राप्ती तथा पशु संतति की बढ़ोतरी के लिए पूजा की जाती थी । ईश्वर की अराधना के लिए दो प्रकार का प्रचलन दिखलाई पड़ता है–
  (i) स्तुति पाठ करना।
  (ii) यज्ञ बलि अर्पित करना।
- ऋग्वेद में 33 देवताओं का वर्णन किया गया है। इसमें कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित है–
  (i) इन्द्र – यह ऋग्वैदिक काल के सबसे प्रमुख देवता था। इन पर 250 सूक्त लिखा गया है। इनको **पुरंदर** (दुर्ग को तोड़नेवाला) कहा गया है। यह युद्ध के देवता, वर्षा के देवता और विश्व के स्वामी के रूप में भी प्रचलित है।
  (ii) अग्नि – इनका दूसरा स्थान था। इन पर 200 सूक्त लिखा गया है यह मानव और ईश्वर के बीच सम्पर्क स्थापित कराने का कार्य करते थे।
  (iii) वरूण – इनका तीसरा स्थान था, जिस पर 30 सूक्त है। इनको ऋतु परिवर्तन, दिन–रात का कर्ता–धर्ता और समुद्र का देवता, सत्य का प्रतीक तथा विश्व नियामक कहा गया है।
- वरूण को पृथ्वी, आकाश और सूर्य का निर्माता माना गया है। यूनान में इनको ओरनोज और ईरान में इनको अहुरज्मदा कहा जाता है।
- **अन्य प्रमुख देवता एवं देवी :**
- **मरूत** – आँधी तूफान के देवता।
- **पूषण** – पशुओं के देवता। उनके रथ को बकरा खींचता था।
- **अश्विन** – दुखों को हरने वाले थे।
- **विष्णु**– इनको ऋग्वेद में अउगाय (गाय से जन्म लेने वाला) कहा गया है।
- भगवान शिव को रूद्र कहा गया है।
- **देवीयाँ :**
- **उषा** – प्रगति एवं उत्थान की देवी।

- अदिती एवं सूर्या के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस काल में धार्मिक जीवन एकदम सरल था।
- **आर्थिक जीवन** – इसका वर्णन निम्नलिखित है–
- **कृषि** – इस समय जौ और गेहूँ मुख्य खाद्य फसल थी। कपास के बारे में ऋग्वेद में उल्लेख नहीं मिलता है। इस काल में भी **लोहे** के बारे में जानकारी नहीं थी।
- **पशुपालन** – कृषि के साथ–साथ इस काल में मुख्य व्यवसाय पशुपालन था, जिसमें गाय और अश्व को प्रमुख स्थान दिया गया था। वस्तु विनिमय में अधिकांशतः गाय का उपयोग किया जाता था।
- इस समय पशुपालन लोगों का मुख्य आर्थिक आधार था।
- **वाणिज्य व्यापार** – इस काल में वाणिज्य व्यापार का बहुत अधिक विकास दिखलाई नहीं पड़ता है फिर भी सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्र और रथ बनाने का कार्य सम्पन्न होता था। इस प्रकार ऋग्वैदिक काल की आर्थिक जीवन हड़प्पा सभ्यता के समान विकसित नहीं था, साथ ही **यह एक ग्रामीण सभ्यता थी।**
- **महत्वपूर्ण शब्दावली** – उर्वरा–उपजाऊ भूमि, लांग्ल–हल, पर्जन्य–बादल, अयस–ताँबा या कांसा, बेकनाट–सुद पर पैसा लगाने वाला को कहा जाता था।

उत्तर वैदिक काल (1000 BC - 600 BC)

- इस काल में विकास के क्रम में सभी अवस्थाओं में परिवर्तन दिखलाई पड़ता है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **राजनीतिक जीवन** – ऋग्वैदिक काल के बाद इस काल में राजा का पद वंशानुगत हो गया। अब शासक पूर्व की अपेक्षा निरंकुश और काफी शक्तिशाली हो गया था। इस काल में विदथ का नामोनिशान नहीं रहा। सभा एवं समिति कायम थी लेकिन उनका महत्व समाज हो गया था। अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है। राजा अब विभिन्न प्रकार की यज्ञ का सम्पादन करता था। जैसे–
- **राजसूय यज्ञ** – राज्यभिषेक के ठीक बाद इस यज्ञ को किया जाता था। राजा बारह रत्निन (मुख्य अधिकारी) का समर्थन प्राप्त करता था, जिसे हवि कहा गया।
- **अश्वमेघ यज्ञ** – यह यज्ञ साम्राज्य विस्तार के लिए सम्पन्न होता था।
- **वाजपेय यज्ञ** – इस यज्ञ को मनोरंजन के रूप में रथों का दौड़ आयोजन किया जाता था।
- इस काल खान–पान रहन–सहन वेश–भूषा और मनोरंजन का साधन पहले के समान कायम था।
- अब कर देना अनिवार्य हो गया। कर वसूल करने वाला अधिकारी भागदूध और कोषाध्यक्ष को संगृहिता कहा गया है।
- इस समय शासक क्षेत्र विस्तार के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के उपाधिक को धारण करते थे।
- जो सम्पूर्ण क्षेत्र को जीत लेता था, वह एकराट की उपाधि धारण करता था।
- **धार्मिक जीवन** – इस काल में धार्मिक अनुष्ठान काफी खर्चीला हो गया । अब सर्वसाधारण लोग इस कार्य को सम्पन्न नहीं कर सकते थे, क्योंकि राजसूय यज्ञ कराने वाले पुरोहित को 2,40,000 गाय दान में दिया जाता था।
- इस काल में सर्व प्रमुख देवता प्रजापति थे, जिनको सृजन का देवता माना गया है। इस समय रूद्र की पूजा अब भगवान शिव के रूप में होने लगा। पूषण जो पहले पशुओं के देवता थे, अब शूद्रों के देवता हो गये।
- इस काल में धार्मिक कार्य के लिए अधिक संख्या में पशुओं की बलि दिया जाने लगा।
- इस काल में पुरोहितों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया।
- **सामाजिक जीवन** – इस काल में ऋग्वैदिक की अपेक्षा सामाजिक जीवन में जटिलताएँ काफी अधिक बढ़ गई थी। अब चार वर्ण की व्यवस्था स्पष्ट रूप से स्थापित हो गयी।
- इस काल में सर्वप्रथम गोत्र प्रथा की स्थापना हुई, जो वंश अथवा कुल से संबंधित थी।
- इस समय मुख्य खाद्य पदार्थ चावल और गेहूँ था। पेय पदार्थ में अर्जुनानी और पुतक का सेवन किया जाता था।
- इस काल में चार आश्रम की व्यवस्था की गयी । जैसे–
  (i) ब्रह्मचर्य आश्रम (ii) गृहस्थ आश्रम
  (iii) वानप्रस्थ आश्रम (iv) सन्यास आश्रम
- इस काल में महिलाओं की स्थिति में पूर्व की अपेक्षा थोड़ी से गिरावट दिखलाई पड़ती हे। जैसे अब महिलाएँ सभा एवं समिति में भाग नहीं ले सकती थी। पिता की सम्पत्ति से अधिकार खो दिया। अब उनका उपनय संस्कार प्रतिबंधित कर दिया गया। फिर भी गार्गी और मैत्रेयी नामक विदूषी महिला का उल्लेख मिलता है।
- **आर्थिक जीवन** – इस काल में कृषि के क्षेत्र में चावल और गेहूँ ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। लोगों का जीवन अब स्थायी हो गया।
- अर्थवेद के अनुसार पृथुवैन्य ने सर्वप्रथम कृषि कार्य और हल को जन्म दिया था।
- इस काल में लगभग 1000 BC में पाकिस्तान के गंधार क्षेत्र में सर्वप्रथम **लोहा** प्राप्त हुआ। भारत के संदर्भ में लगभग 800 BC में लोहे का औजार मिलने लगा था। सबसे अधिक लौह औजार अंतरंजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुआ।
- इस काल में चार प्रकार का मृदभांड प्रचलन में था– (i) काला मृदभांड, (ii) लाल मृदभांड, (iii) लाल–काला मृदभांड, (iv) चित्रित धुसर मृदभांड प्राप्त हुआ है। उत्तरवैदिक कालीन संस्कृति को चित्रित धुसर मृदभांड संस्कृति भी कहा गया।
- **महत्वपूर्ण शब्दावली–**

शब्दाबली		**अर्थ**
श्याम या कृष्ण अयस	=	लोहा
कैवर्त	=	मछुआरा

सीर	=	हल
कर्भार	=	लोहार
तक्षण	=	बढ़ई

- अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस काल में सामाजिक और धार्मिक जीवन में अनेक बुराईयों का समावेश हो गया था। इसमें सुधार के लिए धार्मिक सुधार आन्दोल चलाया गया।

प्राचीन भारत की सामाजिक संरचना

प्राचीन भारत के इतिहास में साम जिक सरंचना के अन्तर्गत निम्न तथ्यों को समाहित किया जाता है–

- **विवाह** – मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह का वर्णन है, जिसमें प्रथम चार को मान्यता दी गयी है, जैसे–

1. **ब्रह्म विवाह** – कन्या के व्यस्क होने पर उसके माता–पिता द्वारा योग्य वर खोजकर उसका विवाह कर दिया जाता था।
2. **दैव विवाह** – यज्ञ करने वाले पुरोहित के साथ विवाह कर दिया जाता था।
3. **आर्ष विवाह** – कन्या का पिता यज्ञ कार्य हेतु वर से एक जोड़े गाय और बैल प्राप्त कर विवाह कर देता था।
4. **प्रजापत्य विवाह** – वर से पिता वचनबद्धता प्राप्त कर अपने कन्या का विवाह करता था, जिसे बिना दहेज का विवाह कहा गया है।
5. **आसुर विवाह**– इसमें कन्या का पिता धन लेकर विवाह करता था।
6. **गान्धर्व** – कन्या तथा वर प्रेम या कामुक्ता में अनुरक्त होकर विवाह कर लेते थे।
7. **राक्षस विवाह** – बलपूर्वक कन्या का अपहरण करके विवाह किया जाता था।
8. **पैशाच विवाह** – पागल या सोयी हुई कन्या के साथ शारीरिक संबंध बना लेने को इस विवाह की संज्ञा दी गई है।

अनुमोल विवाह – इसमें उच्च वर्ण का पुरूष अपने से ठीक नीच वर्ण की कन्या के साथ विवाह करता था।
प्रतिलोम विवाह – इसमें उच्च वर्ण की कन्या का विवाह निम्नवर्ण के पुरूष के साथ होता था।

- **ऋण** – प्राचीन काल में प्रत्येक व्यक्ति को तीन प्रकार ऋण का पालन करना होता था। जैसे–
  1. **पितृ ऋण** – संतान (पुत्र) उत्पन्न कर इस ऋण से छुटकारा पाया जा सकता था।
  2. **ऋषि ऋण** – अपने पुत्र को शिक्षित कर इससे मुक्ति मिलती थी।
- **यज्ञ** – गृहस्थों के लिए पाँच प्रकार के यज्ञ का सम्पादन किया जाता था, जो निम्न है–
  1. ब्रह्म यज्ञ – ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।
  2. देव यज्ञ – देवताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।
  3. पितृ यज्ञ – पितरों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।
  4. मनुष्य यज्ञ – अतिथि सत्कार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।
  5. भूत यज्ञ – समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना।
- **प्ररूषार्थ** – इसकी संख्या चार है, जैसे–
  1. **धर्म** – सामाजिक नियम व्यवस्था।
  2. **अर्थ** – आर्थिक संसाधन।
  3. **काम** – शारीरिक सुखभोग।
  4. **मोक्ष** – आत्मा का उद्वार।
- **संस्कार** – इसका शाब्दिक अर्थ परिश्कार या पवित्रता होता है अर्थात् व्यक्ति के शरीर को परिष्कृत या पवित्र बनाने के उद्देश्य से संस्कारों का विधान बनाया गया है। इसकी संख्या सोलह हैं, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्न है–
  1. **गर्भाधान** – इसके अंतर्गत स्त्री गर्भ धारण करती थी, जिसके रात्रि तथा उचित नक्षत्रों का ध्यान रखना आवश्यक था।
  2. **पुंसवन** – गर्भ की रक्षा तथा पुत्र प्राप्ति हेतु गर्भ के तीसरे माह में यह संस्कार किया जाता था।
  3. **सीमान्तोन्नयन** – मानसिक वृद्धि हेतु, सातवें या आठवें माह में यह होता था।
  4. **जातकर्म** – इसमें पिता उत्पन्न शिशु को स्पर्श कर उसे आर्शिवाद देता था।
  5. **नामकरण** – जन्म के दसवें या बारहवें दिन यह होता था।
  6. **निष्क्रमण** – जन्म के चौथे माह में घर से बाहर निकाला जाता था।
  7. **अन्नप्रशासन** – जन्म के छठे माह में प्रथम बार अिन्न खिलाया जाता था।
  8. **चूड़ाकारण (चौल)** – जन्म के तीसरे वर्ष में केश काटना।
  9. **कर्णछेदन** – तीसरे या पाँचवें वर्ष में कान छेदना।
  10. **विधारम्भ** – गुरू के पास अक्षर ज्ञात करना।
  11. **उपनयन** – यज्ञोपवित धारण कर ब्रह्मचर्य आश्रम में पवित्र होना।
  12. **वेदारम्भ** – वेद का अध्ययन प्रारंभ
  13. **केशन/गोदान** – सोलह वर्ष की आयु में दाढ़ी मूँछ बनाना।
  14. **समावर्तन** – शिक्षा समाप्त कर घर लौटना।
  15. **विवाह** – संतान प्राप्ति के लिए विवाह कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना।
  16. **अन्त्येष्टि** – यह मनुष्य का अंतिम संस्कार है, जो मृत्यु के बाद सम्पन्न होता है।

प्रमुख दर्शन	प्रतिपादक

सांख्य	कपिल
यांग	पतंजलि
न्याय	गौतम
वैशेषिक	कणाद / उलुक
पूर्व मिमांसा	जैमिनी
वेदांत / उत्तर मिमांसा	वदरायण

- उपर्युक्त को षड़दर्शन कहा गया है।
- चारवाक / लोकायत दर्शन– इसके प्रवर्तक चारवाक थे। इनका प्रसिद्ध कथन–'जब तक जीए सुख से जिए, कर्ज लेकर घी पीए'।
- **आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित पीठ –**

पीठ का नाम	स्थान
1. ज्योतिष्पीठ	बद्रीनाथ
2. गोवर्धनपीठ	पुरी
3. शारदापीठ	द्वारका
4. शृंगेरीपीठ	मैसूर

सम्प्रदाय	संस्थापक
आजीवक (भाग्यवादी)	मक्खलि गोसाल
घोर अक्रियवादी	पूरन कश्यप
उच्छेदवादी (भौतिकवादी)	अजित–केस–कम्बली
नित्यवादी	पकुधकच्चायन
सन्देहवादी	संजय वेलदृपुत्र

धार्मिक सुधार आन्दोलन

- 600 ई. पू. में हिन्दू धर्म को चुनौती देते हुए 62 सम्प्रदाय का उदय हुआ, जो नास्तिक सम्प्रदाय था और इन सभी के प्रवर्तक क्षत्रीय जाति से संबंधित थे। इस काल को प्राचीन भारत के इतिहास में पूणर्जागरण का काल और द्वितीय नगरीकरण का काल भी कहा गया है, जिसका कारण निम्नलिखित है–
- **सामाजिक कारण –** समाज में वर्ण व्यवस्था, छुआछुत, महिलाओं की स्थिति और भेद–भाव के चलते यह आन्दोलन शुरू हुआ।

- **धार्मिक कारण** – धर्म के क्षेत्र में अंधिविश्वास, बहुत अधिक खर्चीला और पुरोहित के बर्चस्व ने इस आंदोलन को जन्म दिया।
- **कृषि मूलक संस्कृति** – यह आंदोलन गंगा के उपजाऊ मैदान के क्षेत्र में शुरू हुआ था, क्योंकि बहुसंख्यक जनता ने इसका समर्थन कर दिया।
- **सिक्कों का प्रयोग** और **लोहे के औजार** ने वाणिज्य व्यापार तथा कृषि के क्षेत्र में तेजी ला दी गयी। इन लोगों ने राजा को कर दिया। और विभिन्न वंश के शासकों ने इन धर्मो का समर्थन कर दिया।
- अध्ययन की सुविधा के लिए इस आंदोलन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है –

(1) **नास्तिक धर्म** – ईश्वर की सत्ता में जो विश्वास नहीं करता हो उसे नास्तिक कहा गया जैसे– जैन धर्म और बौद्ध धर्म।

(2) **आस्तिक धर्म** – जो ईश्वर को मानता हो उसे इसके अंतर्गत शामिल किया जाता है जैसे– भागवत और शैव धर्म।

जैन धर्म

- जैन शब्द जीन शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ विजेता होता है अर्थात् जिसने स्वयं को जीत लिया हो। इस धर्म का 900 ई. पू. में जन्म हुआ था, लेकिन महावीर स्वामी के समय यह सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ।
- इस धर्म के प्रवर्तक या प्रथम गुरू (तीर्थंकर) ऋषभदेव थे, जिनका प्रतीक चिन्ह वृषभ है।
- ऋषभदेव अयोध्या के सूर्य वंश घराने से संबंधित थे। इनका और अरिष्टनेमि का नाम ऋग्वेद में मिलता है। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए, जिसमें दो को ऐतिहासिक पुरूष की संज्ञा दी गयी है। धर्म के अनुसार अरिष्टनेमि को भगवान कृष्ण का भाई माना गया है। ऋषभदेव ने हिमालय पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त किया था।
- **पार्श्वनाथ**–यह 23वें और प्रथम ऐतिहासिक तीर्थंकर थे। यह काषी नरेश अश्वसेन के पुत्र थे। इन्होंने सम्मेद पर्वत के समीप ज्ञान को प्राप्त किया था। इनको 84वें दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, जिसको कैवल्य (सम्पूर्ण ज्ञान) कहा गया है। इन्होंने सर्वप्रथम प्रभावती देवी को अपना उपदेश दिया था। इनका प्रतीक चिन्ह सर्प था। **इन्होंने चार** महाव्रत का प्रतिपादन किया था। जैसे–सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय।
- इनका सबसे प्रिय शिष्य केशी था। इनके अनुयायियों का निर्गंध (बंधन रहित) कहा गया है। पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से लगभग 250 साल पहले इस धर्म को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया था। इन्होंने अपने अनुयायियों को सफेद वस्त्र पहनने का अनुरोध किया था।
- **महावीर स्वामी**–यह चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर थे। इनको जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना गया है।

जन्म स्थान	**जन्म तिथि**	**पिता का नाम**
कुण्डग्राम (वैशाली)	540 ईसा पूर्व	सिद्धार्थ
माता का नाम	पुत्री का नाम	दामाद का नाम
त्रिशला	प्रियदर्शनी (अनुजा)	(जमाली)
पत्नी का नाम–यशोदा		
कुल का नाम–ज्ञातृक		
बचपन का नाम–वर्द्धमान		
प्रतीक चिन्ह–सिंह		

- इनकी माता त्रिशला देवी लिछवी नरेश चेतक की बहन थी। इन्होंने सर्वप्रथम उपदेश जमाली को दिया था और जमाली ने ही सर्वप्रथम महावीर स्वामी का विरोध किया था। 30 वर्ष की अवस्था में वर्द्धमान अपने बड़े भाई नंदीवर्द्धन की आज्ञा लेकर गृह त्याग दिया और यति (संन्यासी) हो गये। महावीर स्वामी 12 वर्षों तक इधर–उधर भटकने के बाद 42 वर्ष की उम्र में जुम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे कैवल्य को प्राप्त किये। तब इनको अरहत, निरग्रंथ, महावीर आदि नामों से संबोधित किया गया। वर्तमान में जुम्भिक ग्राम की पहचान हजारीबाग के समीप पहाड़ी को (पारसनाथ की पहाड़ी) और ऋजुपालिका नदी की पहचान दामोदर नदी की **सहायक नदी बराकर नदी के रूप** में किया जाता है।
- भगवान महावीर ने **ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने मतों** का प्रचार प्रसार किया और 11 संघ की स्थापना की और 11 अध्यक्ष को नियुक्त कर दिया। अपने अंतिम समय में 72वर्ष की उम्र में राजगीर के **पावापुरी** नामक स्थान पर काया क्लेश का पालन करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए। यह स्थल उस समय मल्ल गणराज्य के अधीन था, जिसका शासक हस्तिपाल था।
- **सिद्धान्त**–महावीर स्वामी ने अपने मत के प्रचार–प्रसार के लिए जो उपदेश दिया उसे नियम–कानून के नाम से भी हमलोग जानते हैं। जैसे–

(1) **त्रिरत्न**–पूर्व जन्म के कर्मफल को समाप्त करने के लिए और वर्तमान समय में कर्मफल से बचने के लिए त्रिरत्न को अपनाया गया।
t Б&(i) सम्यक् ज्ञान (ii) सम्यक् आचरण, (iii) सम्यक् ध्यान या दर्शन।

(2) **पंचमहाव्रत**–जैन धर्म में पांच प्रकार की नियमों की स्थापना की गयी है, जिसे पंचमहाव्रत कहा जाता है।

- महावीर स्वामी ने **ब्रह्मचर्य** नामक पाँचवा महाव्रत को जोड़ दिया था।

(3) **अनेकांतवाद**–यह जैन धर्म का दर्शन है, जो सांख्य दर्शन के करीब माना जाता है। यह सात भाग में विभाजित है, इसलिए सप्तभंगी भी कहा गया है। इसके अनुसार किसी भी वस्तु के बारे में शत प्रतिशत सही है या शत प्रतिशत गलत है, नहीं कहा जा सकता।

- अनेकांतवाद को सप्तभंगी या स्याद्वाद् भी कहा जाता है।

(4) **सृष्टि का निर्माण**–जैन धर्म के अनुसार सृष्टि का निर्माण 6 पदार्थों से मिलकर हुआ है जैसे–जीव, पुदगल (भौतिक पदार्थ), धर्म, अधर्म, काल और आकाश।

- **विकास–**जैन धर्म के विकास में आम जनता, व्यापारी वर्ग, विभिन्न वंश के शासक और जैन संगति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- जैन धर्म सबसे अधिक लोकप्रिय व्यापारी (वैश्य) वर्ग में था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य, कलिंग के चेदि वंश के शासक खरवेल और अजातशत्रु के पुत्र उदयन ने इस धर्म को अपनाकर इसका प्रचार–प्रसार किया। चंद्रगुप्त मौर्य के समय मगध में अकाल पड़ गया। परिणामस्वरूप भद्रबाहु के नेतृत्व में कुछ जैन भिक्षु पाटलिपुत्र से कर्नाटक चले गये। इस प्रकार दक्षिण भारत में भी इसका प्रचार–प्रसार हुआ। वापस आने पर मतभेद शुरू हो गया। परिणामस्वरूप जैन संगिति का आयोजन किया गया।
- **प्रथम जैन संगीति–300 ई. पू.**
  स्थान–पाटलिपुत्र
  शासक–चन्द्रगुप्त मौर्य
  अध्यक्ष–स्थूलभद्र
- इसी संगिति में जैन धर्म में पहली बार विभाजन हुआ और दिगम्बर तथा श्वेतांबर संम्प्रदाय का जन्म हुआ।
- प्रचीन विचार धारा को मापने वाले या वस्त्रविहीन रहने वाले जैन भिक्षु को दिगम्बर कहा जाता है। इसको आकाशवृत्ता भी कहा गया है। इनका नेतृत्व भद्रबाहु ने किया जो चन्द्रगुप्त मौर्य के अध्यात्मिक गुरू थे। जो जैन भिक्षु नवीन विचारधारा को मानते थे या श्वेत वस्त्र धारण करते थे उनको श्वेतांबर कहा गया और इन लोगों का नेतृत्व स्थूलभद्र ने किया था।
- **द्वितीय जैन संगीति–512 ई.**
  स्थान–बल्लभी (गुजरात)
  अध्यक्ष–देवर्धि क्षमाश्रमण
  शासक–भानुगुप्त।
- इसी संगिति में अधिकांश जैन ग्रंथ को अर्द्धमागधी भाषा या प्राकृत भाषा में लिखा गया।

विविध तथ्य :

- महावीर स्वामी के बाद प्रथम थेरा (उपदेश देने वाला) आर्य सुधर्मा को घोषित किया गया था।
- महावीर स्वामी ने सर्वप्रथम चन्दना नामक महिला को इस धर्म में दिक्षित किया था, जो अंग महाजनपद (वर्तमान का भागलपुर) की राजकुमारी थी।
- जैन भिक्षुओं के निवास को 'वसदे' कहा गया है।
- इस धर्म का प्रभाव स्थापत्य कला पर भी दिखाई पड़ता है। जैसे–विमल राय द्वारा निर्मित दिलवाड़ा का जैन मंदिर और रवि कृति द्वारा रचित हाथी गुम्फा अभिलेख।
- पाली साहित्य में भगवान महावीर को निगण्ठनाथपुत कहा गया है।
- अणुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- जैन धर्म ईश्वर की सत्ता और मूर्तिपूजा को नहीं मानता है, लेकिन कर्म और आत्मा में विश्वसा करता है।

बौद्ध धर्म

♦ जन्म	–	563 ई. पू.	♦ जन्म स्थान	–	लुम्बिनी
♦ पिता का नाम	–	सुद्धोधन	♦ माँ का नाम	–	महामाया
♦ सौतेली माँ का नाम	–	प्रजापति गौतमी	♦ बचपन का नाम	–	सिद्धार्थ
♦ पत्नी का नाम	–	यशोधरा	♦ पुत्र का नाम	–	राहुल
♦ सौतेले भाई का नाम	–	देवदत्त	♦ गोत्र का नाम	–	गौतम
♦ वर्ण	–	क्षत्रिय	♦ कुल	–	शाक्य
♦ सारथी का नाम	–	चाण्ण	♦ प्रिय घोड़े का नाम	–	कंथक

- भगवान बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. में कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। कपिलवस्तु की पहचान वर्तमान में पिपरहवा से किया जाता है, जो उत्तर प्रदेश में है। लुम्बिनी की पहचान वर्तमान में रूमिनदेई के रूप में किया जाता है, जो नेपाल में है। भगवान बुद्ध में निम्नलिखित चार दृश्यों को देखकर घर का त्याग कर दिया। जैसे–

(1) वृद्ध व्यक्ति को देखना।
(2) रोगी व्यक्ति को देखना।
(3) मृत शरीर को श्मशान घाट ले जाते हुए देखना।
(4) संन्यासी को देखना।

संन्यासी के जीवन से प्रभावित होकर सिद्धार्थ 29 वर्ष की आयु में बिना किसी को बताये घर का त्याग कर दिया।

- भगवान बुद्ध के गृह त्याग को **महाभिनिष्क्रमण** कहा गया है।
- वैशाली में अलार कलाम के आश्रम पर पहुँचे और अलार कलाम से सांख्या दर्शन के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार अलार कलाम इनके प्रथम गुरू थ। मन को शांति नहीं मिलने पर इन्होंने राजगीर/राजगृह जाने का फैसला किया जहाँ पर उद्रक रामपुत्र जैसे विद्वान रहते थे। यहाँ भी ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई तब यह गया चले गये।
- गया में निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे 35 वर्ष की अवस्था में इनको संबोधि (पूर्ण ज्ञान) की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ बुद्ध कहलायें। गया बोधगया के नाम से और वह वृक्ष बोधि वृक्ष के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। अरूबेला स्थल पर सुजाता नामक महिला ने भगवान बुद्ध को खील खिलाया था। (उपवास तोड़ने के लिए) तब भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग/प्रतिपदा का पालन करते हुए

ज्ञान को प्राप्त किया।

- इन्होंने सर्वप्रथम **सारनाथ या मृगदाव/ऋषिपतन** में अपना प्रथम उपदेश पाँच भिक्षुओं को दिया।
- प्रथम उपदेश को **धर्मचक्रप्रवर्तन** कहा गया है।
- भगवान बुद्ध ने 80 वर्ष की अवस्था तक अपने धर्म का प्रचार प्रसार किया। अंतिम समय में उत्तर प्रदेश **कुशीनगर** में पहुँच गये। इस स्थल पर चुन्द नामक लोहार के यहाँ शुकर (शुअर) का मांस खाने के बाद उदर विकार के चलते शाल वृक्ष के नीचे 483 ई. पू. में मृत्ये को प्राप्त हुए जिसे **महापरिनिर्वाण** कहा गया है। भगवान बुद्ध का अंतिम वाक्य ''सभी धर्म अप्रमाद (व्यर्थ) है, जिर्वाण या मोक्ष के लिए प्रयत्न करो।''
- भगवान बुद्ध ने जिन पाँच भिक्षुओं को उपदेश दिया, वे निम्नलिखित हैं–वप्प, महानामा, कोडिन्य, भद्दिय, अश्वजीत।
- **सिद्धान्त/उपदेश**–भगवान बुद्ध के उपदेश आचरण की शुद्धता और पवित्रता पर आधारित हें भगवान बुद्ध ने अपने धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए कुछ सिद्धान्त को स्थापित किया, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

(i) चार आर्य सत्य है–भगवान बुद्ध के मुख उपदेश को चार आर्य सत्य कहा गया है, जो निम्नलिखित है–

(a) दुख – संसार में दुख ही दुख है।
(b) दुख समुदाय – दुख का कारण है।
(c) दुख निरोध – दुख का निवारण भी है।
(d) दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा

(ii) अष्टांगिक मार्ग–भगवान बुद्ध के अनुसार दुख निरोध की तरफ जानेवाले मार्ग की संख्या आठ है, इसीलिए इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है–

सम्यक् दृष्टि	सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम
सम्यक् संकल्प	
सम्यक् वाक्य	
सम्यक् कर्म	सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि

(iii) दसशील–जैन धर्म में पंचशील को स्थापित किया गया था, उसी प्रकार इस धर्म में दस शील को प्रतिपादिक किया गया था।

(i) सत्य (ii) अहिंसा (iii) अपरिग्रह (iv) अस्तेय (v) ब्रह्मचर्य
(vi) मदिरा (vii) विकाल भोजन नहीं करना (viii) कोमल सैय्या का त्याग (ix) सुगंधित पदार्थों का त्याग (x) नृत्य संगीत का त्याग

- दस शील उन बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाया गया, जो संन्यासी जीवन बिताते थे। गृहस्थ जीवन में रहकर जो इस धर्म का पालन करते थे उनको पंचशील का ही पालन करना होता था।

(iv) प्रतीत्य समुत्पाद – यह बौद्ध धर्म का दर्शन है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक बारह भागों में विभाजित है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है किसी भी एक वस्तु के होने से दूसरे का जन्म होता है और इनके बीच एक भी क्षण का विलंब होता है।

(v) त्रिरत्न – बौद्ध धर्म में भी त्रिरत्न की स्थापना की गयी है जैसे–बुद्ध धम्म, संघ।

- **विकास** – बौद्ध धर्म के विकास में शासक, बौद्ध संगीति तथा आम लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। अजातशत्रु, कालाशोक, अशोक, पाल वंश के शासक, कनिष्क और सबसे बड़ा व्यापारी अनाथपिण्डक ने अधिक सहयोग किया था।

प्रथम बौद्ध संगीति :

काल	–	483 ई. पू.
स्थान	–	राजगीर
शासक	–	अजातशत्रु
अध्यक्ष	–	महाकश्यप

- यह संगीति राजगीर के सप्तपर्णी गुफा मे आयोजित किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य भगवान बुद्ध के मौखिक उपदेशों को ग्रंथ के रूप में संग्रहित करना था।
- इसी संगीति में आनंद के नेतृत्व में सुतपटिक और उपाली के नेतृत्व में विनयपिटक की रचना की गयी।

द्वितीय बौद्ध संगीति : (383 ई. पू.)

स्थान	–	वैशाली
अध्यक्ष	–	साबकमीर
शासक	–	कालाशोक

- इस संगीति में बौद्ध धर्म में पहली बार विभाजन हुआ और स्थिरवादी/थेरवादी तथा महासंघिक नामक बौद्ध संप्रदाय का उदय हुआ, जिसमें थेरवादी प्राचीन परंपरा को और महासंघिक नई विचारधारा को मानता था।
- इस संगीति को सप्तशतिका कहा गया है।

तृतीय बौद्ध संगीति : (251 ई. पू.)

स्थान	–	पाटलिपुत्र
शासक	–	अशोक
अध्यक्ष	–	मोगलीपुत्रतिस्स

चौथी बौद्ध संगीति : (प्रथम सदी :)

स्थान	–	कुण्डलवन (कश्मीर)
शासक	–	कनिष्क

अध्यक्ष – वसुमित्र
उपाध्यक्ष – अश्वघोष

- इसी संगीति में **महायान** और **हीनयान** सम्प्रदाय का जन्म हुआ। हीनयान का भी विभाजन सौत्रान्तिक और वैभाषिक के रूप में विभाजन हो गया। महायान का विभाजन भी दो भागों में हुआ। शून्यवाद (माध्यमिक) और विज्ञानवाद (योगाचार) में हो गया।
- शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन थे।
- विज्ञानावाद के प्रवर्तक मैत्रेयनाथ थे।

पाँचवीं संगीति (643 ई.)

स्थान – कन्नौज
शासक – हर्षवर्द्धन
अध्यक्ष – व्हेनसांग

सातवीं सदी में व्रजयान नामक एक नई शाखा का जन्म हुआ, जिसमें जादू–टोना, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, भ्रष्टाचार अर्थात सभी प्रकार की बुराइयों का समावेश हो गया परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म के पतन में सबसे अधिक योगदान व्रजयान शाखा का है।

- **समानता :** दोनों ने सामाजिक और धार्मिक बुराई का विरोध किया था दोनों ने सत्य, अंहिसा और कर्म की प्रधानता को अपनाया था।

असमानता :

- जैन धर्म आत्मा को मानता है, और बौद्ध धर्म नहीं मानता है।
- जैन धर्म में कायाक्लेश बौर बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग को अपनाया गया है।
- जैन धर्म में बौद्ध धर्म से अधिक अहिंसा पर बल दिया गया है।
- बौद्ध धर्म की भाषा पाली और जैन धर्म की भाषा प्राकृत (अर्द्धमागधी) है।
- जैन धर्म केवल भारत में लोकप्रिय हुआ, लेकिन बौद्ध धर्म विदेशों में भी पहुँच गया और आज भी लोकप्रिय है।

विविध तथ्य :

- भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद के अनुरोध पर बौद्ध धर्म के प्रथम महिला प्रजापति गौतमी को शामिल किया गया।
- भगवान बुद्ध को एशिया का प्रकाश भी कहा गया है।
- भगवान बुद्ध ने प्रत्यक्ष मतदान (विवतक) और गुप्त मतदान (गुलहक) की व्यवस्था की थी बौद्ध धर्म में प्रवेश को उपसम्पदा कहा गया है।
- प्रसिद्ध व्यापारी अनाथपिण्डक, डाकू अँगुलीमाल और वैशाली की नगरवधु आम्रपाली ने भी इस धर्म को अपनाया था।
- भगवान बुद्ध ने अपना सबसे अधिक उपदेश श्रावस्ती में दिया था।
- आत्म दीपो भवः बौद्ध धर्म से संबंधित है।
- भगवान बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश सुभद्द को दिया था।
- बुद्ध का अर्थ ज्ञान होता है।
- भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रतीक चिन्ह–

घटना	प्रतीक चिन्ह	घटना	प्रतीक चिन्ह
दिव्य बालक गर्भ में अपना	हाथी	त्रिरत्न	त्रिशूल
निर्वाण	पद चिन्ह	मृत्यु	स्तूप
जन्म	कमल का फूल और वृषभ	गृह त्याग	अश्व
प्रथम उपदेश	चक्र		

- पुष्यमित्र शुंग को बौद्धों का उत्पीड़न कहा गया है।
- प्रसिद्ध हूण शासक मिहिरकुल ने भी हजारों बौद्ध भिक्षुओं का कत्ल करा दिया, क्योंकि यह शैव धर्म का अनुयायी था।
- गौड़ प्रदेश का शासक शशांक ने बोध गया के मूल बोधि वृक्ष को काट देने का आदेश जारी किया था।

वैष्णव धर्म (भागवत धर्म)

- इस धर्म का उद्भव महाकाव्य काल में हुआ था। महाभारत के समय भगवान कृष्ण को विष्णु नाम से भी संबोधित किया गया है। इसलिए इस धर्म का नाम वैष्णव हो गया। महाभारत के अनुशासन पर्व में भगवान विष्णु के तीन अवतारों का उल्लेख किया गया है। उदा.– पुरूषावतार, गुणावतार, लीलावतार।
- इस धर्म के प्रवर्तक भगवान कृष्ण थे। उनके अनुयायी उनको भागवतम कहते थे। इसलिए वैष्णव धर्म का नाम भागवत धम्र भी हो गया। भगवान कृष्ण सात्वत जाति से संबंधित थे, इसलिए इस धर्म को सात्वर्षम कहा गया है। जब भगवान विष्णु का संबंध नारायण से स्थापित हुआ, तब एक नया धम्र पांचरात्र धम्र का उदय हुआ।

  छन्दोग्य उपनिषद् के अनुसार भगवान कृष्ण वृष्णि कबीला से संबंधित थे। यह ऋषि अंगरिष के शिष्य और देवकी के पुत्र थे। इस धर्म के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के तीन साधन हैं–ज्ञान, कर्म और भक्ति। इसमें भक्ति पर सर्वाधिक बल दिया गया है। भक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है ईश्वर के चरणों में पूर्ण रूप से अपने आप को समर्पित कर देना।
- भागवत धर्म का प्रमुख लक्षण अवतारवाद है।
- अवतारवाद का सर्वप्रथम उल्लेख भागवत गीता में किया गया है।
- भगवान विष्णु ने कुल 24 बार अवतार लिया, जिसमें 10 अवतार सबसे प्रमुख है।
- भगवान विष्णु के दस अवतारों का स्पष्ट और सबसे प्रमाणित उल्लेख मत्स्य पुराण में किया है, जैसे–मत्स्य, कूर्म (कच्छप), वराह (सुअर),

वामन, नरसिंह, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध, कल्की।

- इस धर्म का सबसे अधिक विकास गुप्त काल में हुआ और गुप्तकाल में ही यह दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में भी पहुँच गया।
- दक्षिण भारत में जिन संतों ने इस धर्म का प्रचार–प्रसार किया उसे अलवार कहा गया।
- अलवार संतों की संख्या 12 थी, जिसमें तिरूमंगई सबसे महत्वपूर्ण थे। अण्डाल नामक विदुषी महिला भी इसमें शामिल थी।

शैव धर्म

- भागवत धर्म के साथ–साथ शैव धर्म का भी विकास हुआ था। भगवान शिव के पूजा करने वालों को शैव कहा गया है, इसलिए इस धर्म का नाम शैव धर्म हो गया। सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता में भगवान शिव की पूजा का प्रमाण मिला है। ऋग्वैदिक काल में इनको रूद्र और उत्तरवैदिक काल में शर्व, भव, भूपति और पशुपति कहा गया है। यह धर्म कुषाण वंश के समय अधिक विकसित हुआ और गुप्तकाल में सबसे अधिक विकसित हुआ। पाणिनी के अष्टाध्यायी में इस धर्म के बारे में उल्लेख किया गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भी शिव की अराधना का उल्लेख किया गया है। मूर्ति के रूप में पहला स्पष्ट प्रमाण आंध्र प्रदेश के गुड्डीमल्ललिंगरेनुगुंटा से प्राप्त हुआ है। दक्षिण भारत में इस धर्म का प्रचार करने वालों को नयनार कहा गया। जैसे–तिरूज्ञान, सम्बंदर आदि। गुप्तकाल में यह अधिक लोकप्रिय हुआ, जो वामनपुराण से स्पष्ट होता है। इस पुराण के अनुसार गुप्त काल में शैव धर्म चार सम्प्रदाय में विभाजित था–
  (i) शैव (ii) पाशुपत (iii) कापालिक (iv) कालामुख
- **पाशुपत–यह सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक लकुलिश थे।**
- लकुलिश के अनुयायियों को पंचार्थिक कहा गया है और पाशुपत्रसूत्र सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
- **कापालिक –** इसके इष्टदेव भैरव है। इस सम्प्रदाय के बारे में विस्तृत जानकारी, भवभूति की प्रसिद्ध ग्रंथ मालतीमाधव में मिलता है।
- **कालामुख –** इस सम्प्रदाय के लोग श्मशान घाट में निवास करते हैं और जले हुए चीता के राख आदि को अपने शरीर पर लगाते हैं और बहुत ही क्रोधी स्वभाव के होते हैं। इनको महाव्रत्तधर कहा गया है। यह लोग नर कपाल में ही भोजन, जल और मदिरा ग्रहण करते हैं।
- **लिंगायत सम्प्रदाय–इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक अल्लभ प्रभु और बासव थे।** इसको वीरशैव और जंगम भी कहा गया है।
- **नाथ सम्प्रदाय–**दसवीं सदी में मत्स्येन्द्र नाथ ने इस सम्प्रदाय की स्थापना की थी। लेकिन बाबा गोरखनाथ ने इसको लोकप्रिय बनाया।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से हमलोगों को नास्तिक और आस्तिक सम्प्रदाय के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होता है।

सोलह महाजनपद

मगध के उदय के ऊपर भगवान बुद्ध के काल में सोलह महाजनपद का उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रंथ **'अंगुतर निकाय'** और जौन ग्रंथ **'भगवती सूत्र'** में सोलह महाजनपद का वर्णन है। इन महाजनपदों की निर्माण प्रक्रिया को निम्न रूपों में देखा जा सकता है।

महाजनपद का नाम	राजधानी का नाम	महाजनपद का नाम	राजधानी का नाम
1. मल्ल	कुशनगर, पावापुरी	2. काशी	वाराणसी
3. कौशल	श्रावस्ती (साकेत)	4. वत्स	कौशाम्बी
5. अंग	चम्पा (भागलपुर)	6. मगध	गिरिव्रज (राजगीर)
7. पांचाल	अहिछत्र, काम्पिल्य	8. मत्स्य	विराटनगर
9. चेदी	शक्तिमती	10. वज्जी	वैशाली
11. अस्मक	पाटन	12. सूरसेन	मथुरा
13. गान्धार	तक्षशिला	14. कुरू	इन्द्रप्रस्थ
15. कम्बोज	हाटक	16. अवंति	उज्जैन, महिष्मती

मगध का उदय

- प्रचीन काल के मगध में वर्तमान का पटना, गया और शाहबाद का क्षेत्र शामिल था। ऋग्वेद में कीकट नामक स्थान का उल्लेख किया गया है, जिसकी पहचान विद्वानों ने मगध के रूप में किया है और इसका शासक प्रेमानंद था। मगध महाजनपद से स्वयं को सबसे बड़े साम्राज्य में परिवर्तन कर लिया।
- मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में किया गया है।
- **मगध के उदय का कारण–**
  (i) गंगा का उपजाऊ मैदान
  (ii) वाणिज्य व्यापार का विकास
  (iii) लोहे के औजार का प्रयोग
  (iv) सेना में हाथयों का अधिक प्रयोग
  (v) विभिन्न शासकों का योगदान
  — ब्राहद्रथ वंश
  — हर्यक वंश (545 - 412 BC)
  — शिशुनाग वंश (412 - 345 BC)
  — नंद वंश (444 - 421 BC)
- **ब्राहद्रथ वंश –** इस वंश का संस्थापक वसु का पुत्र और जरासंध का पिता ब्राहद्रथ था, इसलिए यह नाम पड़ गया। यह लोग महाभारत काल से संबंधित है। परंपरा के अनुसार वसु ने राजगीर की स्थापना की थी। इसलिए राजगीर का प्राचीन नाम वसुमति है।
- मगध की प्रारंभिक राजधानी राजगीर थी, जिसको गृहब्रज के नाम से भी हमलोग जानते हैं।

- राजगीर के वास्तुकार का नाम महागोविन्द था।
- इस वंश के शासक जरासंध का वध भीम के द्वारा कर दिया गया था। इस वंश का अंतिम शासक निपुंजय था, जिसकी हत्या उसके मंत्री पुलिक ने कर दिया, लेकिन पुलिक अधिक दिनों तक शासन नहीं कर पाया, क्योंकि इसके अधिकारी भट्टीय ने इसकी हत्या करके मगध की गद्दी पर अपने पुत्र बिम्बिसार को बैठा दिया और बिम्बिसार ने हर्यक वंश की स्थाना की।
- **हर्यक वंश**–मगध के उदय में इस वंश ने प्रारंभिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस वंश को हिरण्यक वंश और पितृहन्ता भी कहा गया है, जिसके प्रमुख शासक निम्नलिखित हैं–

(i) **बिम्बिसार (545 BC - 493 BC) -** यह हर्यक वंश का संस्थापक था। इतिहास में इसको श्रेणिक कहा गया है। इसने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए वैवाहिक संबंधों का सहारा लिया। इसने कौशल प्रदेश की राजकुमारी कौशल देवी से विवाह किया। काशी का एक गाँव दहेज में मिला, जिसकी आमदली 1 लाख रूपये प्रतिवर्ष था। इस प्रकार आर्थिक रूप से भी बिम्बिसार शक्तिशाली हो गया। इसने दूसरा विवाह लिच्छवि राजकुमारी चेल्हना के साथ और तीसरा विवाह मद्र कुल की राजकुमारी क्षेमा के साथ किया।

- मगध का सबसे प्रबल शत्रु राज अवन्ति था, जिसकी दो राजधानी उज्जैन और महिष्मति थी।
- अवन्ति के शासक चंद्रप्रघोत के ईलाज के लिए बिम्बिसार ने अपने राज वैद्य जीवक को उज्जैन भेजा था। बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था और भगवान बुद्ध का परम मित्र भी था।
- बिम्बिसार का सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अंग महाजनपद को जीतकर अजातशत्रु को वहाँ का अधिकारी नियुक्त करना था। अंग की पहचान वर्तमान में भागलपुर से किया जाता है, जिसकी राजधानी चंपा थी। चंपा का प्राचीन नाम मालिनी थी।

(2) **अजातशत्रु (493 BC - 460 BC) :** यह अपने पिता की हत्या करके गद्दी पर आया था। पुराण में इसको कुणिक कहा गया है। इसने कौशल प्रदेश पर आक्रमण किया और सफल रहा। कौशल की राजकुमारी वजीरा के साथ विवाह किया और संपूर्ण काशी इसके नियंत्रण में आ गया। इसने लिच्छवी गणराज्य के विरूद्ध भी सफल अभियान किया था।

- लिच्छवी के अभियान में ही अजातशत्रु ने सर्वप्रथम रथमुसाल एवं महाशिलाकण्टक का प्रयोग किया था।
- इसके मंत्री वस्स्कार ने लिच्छवि संघ में फूट डालने का कार्य किया था, जिसके कारण अजातशत्रु विजयी हुआ था।
- विश्व का प्रथम गणतंत्र वैशाली में 600 B.C. में लिच्छवियों ने स्थापित किया था।
- अजातशत्रु की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन करना था।

(3) **उदयन (460 BC - 445 BC) :** इसने अपने पिता अजातशत्रु का वध करके गद्दी को प्राप्त किया। यह जैन धम्र का अनुयायी था।

- इसने गंगा एवं सोन नदी के संगम पर **पाटलिपुत्र नगर** की स्थापना किया।
- इसने राजगीर के स्थान पर पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- पाटलिपुत्र का प्राचीन नाम कुसुमपुर या कुसुमध्वज हे। शेरशाह ने मध्यकाल में पाटलिपुत्र का नाम पटना कर दिया। मुगल राजकुमार अजीम–उस–शान ने पाटलिपुत्र का नाम अजीमाबाद रख दिया था।
- **अनिरूद्ध, मुण्ड, नागदाशक (445 BC - 412 BC) :** यह सभी कमजोर शासक थे। इस वंश का अंतिम शासक नागदाशक था, जिसकी हत्या शिशुनाग ने कर दी और हर्यक वंश का अंत हुआ और शिशुनाग वंश स्थापित हुआ।
- **शिशुनाग वंश**–हर्यक वंश के बाद मगध की गद्दी पर यह वंश स्थापित हुआ, जिसके प्रमुख शासक निम्नलिखित हैं–

(1) **शिशुनाग (412 BC - 394 BC) -** यह वंश का संस्थापक था। इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अवंति को मगध में मिला लेना था। इसने पाटलिपुत्र के स्थान पर वैशाली को राजधानी बनाया।

- यूनानियों ने पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा कहा है।
- **कालाशोक (394 BC - 366 BC) -** यह शिशुनाग वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने वैशाली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया और अवंति के बचे हुए अवशेष को समाप्त कर दिया।
- इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन कराना था।

(3) **नंदीवर्धन (366 BC - 345 BC) :** यह शिशुनाग वंश का अंतिम शासक था, जिसकी हत्या महापदमनंद ने कर दिया। इस प्रकार शिशुनाग वंश का अंत हुआ और नंद वंश स्थापित हुआ।

- **नंद वंश**–मगध के उदय में नंद वंश के शासकों ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। यह वंश अब तक के सभी वंशों में सबसे शक्तिशाली और सम्पत्तिशाली वंश था। इन लोगों के पास विश्व के संदर्भ में सबसे विशाल सेना इस समय था।
- **महापद्मनंद (344 BC - 334 BC BC) -** यह नंद वंश का संस्थापक था। इसने कलिंग को जीतकर वहाँ से जीन की मूर्ति को लाकर पाटलिपुत्र में स्थापित किया। सिंचाई के लिए कलिंग में नहर का निर्माण कराने वाला यह पहला शासक था। इसने सर्वक्षत्रान्तक, परशु और अनुलंघित की उपाधि धारण की थी।
- इसने **एकराट** की उपाधि भी धारण की थी।
- **घनानंद (334 BC - 321 BC) :** महापद्मनंद के 8 पुत्रों में से यह अंतिम था। यह नंद वंश का भी अंतिम शासक था। यूनानियों ने इसको अग्रमिज कहकर संबोधित किया है। नंद वंश के शासकों को निम्नकुल का माना गया है। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य की सहायता से इइस वंश का अंत कर दिया और मगध की गद्दी पर मौर्य वंश स्थापित हुआ।

सिकन्दर महान

- यह घनानंद का समकालीन था। इसका जन्म 356 ई.पू. में यूनान के एक छोटे प्रांत मकदुनिया में हुआ था। इसके पिता फिलिप–II मकदुनिया के शासक थे। 336 ई. पूर्व में पिता की मृत्यु के बाद केवल 20 वर्ष की अवस्था में यह मकदुनिया का षासक बना। इसने विश्व विजय के लिए अभियान किया था। 330 BC में अरबेला या गौगकमेला के युद्ध में विजयी होने के बाद भारत की तरफ अभिसयान किया और इस क्रम में तक्षशिला के शासक आम्भी ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- **वितस्ता/झेलम/हेडास्पजीज का युद्ध (326 BC) :** यह युद्ध राजा पोरस और सिकन्दर के बीच हुआ।

सिकंदर ने राजा पोरस को उनका राज्य लौटाकर अपना मित्र बना लिया। इसने हिन्दूकुश पर्वत को पार करते हुए भारत पर अभियान किया था। इतिहासकारों के अनुसार नंदों की विशाल सेना से डरकर सिंदर की सेना ने व्यास नदी को पार करने से इंकार कर दिया। यह लगभग 19 माह तक भारत में रहा था। वापसी के क्रम में बेबीलोन नामक स्थान पर 323 BC में इसकी मृत्यु हो गई। इसने सिकन्दरिया और प्रिय घोड़ा बुकाफेल के नाम पर नगर का निर्माण कराया था।

मौर्य वंश (321 BC - 185 BC)

- मगध की गद्दी पर पहली बार सबसे महत्वपूर्ण वंश मौर्य वंश स्थापित हुआ। इसने मगध ने विस्तार में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और सबसे बड़े साम्राज्य का निर्माण किया, जो मुगल और अंग्रेज भी नहीं कर सके। लेकिन इन लोगो के उत्पत्ति एवं जाति के बारे में विद्वानों में मतभेद है, जिसे निम्नलिखित रूपों में हमलोग देख सकते हैं–

ग्रंथ		मत
पुराण (ब्राह्मण ग्रंथ)	–	शुद्र जाति
महावंश एवं दीपवंश	–	क्षत्रीय
जैन ग्रंथ	–	चरवाहा (गड़ेरिया) या मोरपालक का पूत्र
राजपूताना गजेटियर	–	राजपूत

- मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य को **बृषल (निम्न कुल)** कहा गया।
- प्रो. रोमिला थापर के अनुसार यह लोग वैश्य जाति से संबंधित थे। लेकिन सर्वमान्य मत के अनुसार मौर्य लोग मोरिय कुल के क्षत्रिय थे, जो पीपलवन में राज्य करते थे। यह राज्य कुशीनगर से लेकर लुम्बिनी के बीच स्थित था। पुरातात्विक स्रोत के अनुसार मौर्यों का राजकीय चिन्ह मयूर था, जो लौरिया नंदन के स्तंभ पर और साँची के स्तूप पर चित्रित किया गया है।
- **चन्द्रगुप्त मौर्य (321-298 BC)-** मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य को भारत का मुक्ति दाता कहा गया है। यह भारत का प्रथम साम्राज्य निर्माता भी था।
- **प्रारंभिक जीवन**–चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश के संस्थापक और सम्राज्यवादी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। बचपन में पाटलिपुत्र में राजकीलम नामक खेल खेलते समय तक्षशिला के निवासी चाणक्य की नजर इन पर पड़ गया। परिणाम स्वरूप चाणक्य ने तक्षशिला ले जाकर इनको राजनीतिक शिक्षा दी।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य के राजनीतिक गुरू और भद्रबाहु इनके धार्मिक गुरू थे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने पर्वतीय क्षेत्र के राजा प्रवर्तक की सहायता से पश्चिमोत्तेर क्षेत्र में यूनानियों को पराजित किया और पश्चिमोत्तर भारत को यूनानियों की सत्ता से मुक्त कराया। इसलिए इनको भारत का मुक्तिदाता कहा गया है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से नंद वंश के अंतिम शासक घनानंद को पराजित किया और नंद वंश समाप्त हुआ तथा मौग्र वंश स्थापित हुआ।
- **नामकरण**–मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। जैसे–

विद्वान का नाम		नाम
जस्टिन	–	सेण्ड्रोकोट्स
प्लूटार्क	–	ऐण्ड्रोकोट्स
स्ट्रैबो	–	पालिब्रोथस

- सर्वप्रथम सर विलियम जोंस ने सेण्ड्रोकोट्स की पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में किया था।
- **साम्राज्य विस्तार**– इसने सबसे विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था। इसलिए चन्द्रगुप्त मौर्य को भारत का प्रथम साम्राज्य निर्माता कहा गया है। पूरब में बंगाल की खाड़ी तक इनका क्षेत्र विस्तार था, क्योंकि इनके समय में मगध में अकाल पड़ गया था। तब सरकार के द्वारा राहत कार्य संपन्न कराया गया, जिसका वर्णन अभिलेखों में किया गया है।
- साहगौरा (गोरखपुर के समीप) और महास्थान (वर्तमान में बांग्लोश) अभिलेख में अकाल के समय राहत कार्य संपन्न करने का उल्लेख किया गया है।
- पश्चिम में गुजरात तक क्षेत्र विस्तार था, क्योंकि इनके समय में सौराष्ट्र का प्रांतपति पुष्यगुप्त थ। इसने सिंचाई के लिए सूदर्शन झील का निर्माण कराया था।
- दक्षिण भारत में कम से कम कर्नाटकर तक इनका क्षेत्र विस्तार था। यह अषोक के अभिलेख से भी प्रमाणित होता है।
- **सेल्युकेस निकेटर से युद्ध (305-304 BC) :** यह यूनानी था और सिकंदर महान का सेनापति था। सिकंदर के मृत्यु के बाद इसने संपूर्ण क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया और भारत पर आक्रमण किया, लेकिन चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित हो गया। परिणामस्वरूप संधि किया गया। संधि शर्त के अनुसार सेल्यूकस ने चन्द्रगुन्प मौर्य को काबूल, कंधार, हेरात और ब्लूचिस्तान का प्रांत दिया और अपनी पुत्री हेलेना/कार्नेलिया का विवाह भी चन्द्रगुप्त मौर्य से किया। विश्व के संदर्भ में यह पहला अन्तर्राष्ट्रीय विवाह था। सेल्यूकस ने अपना राजदूत मेगास्थनीज को भी चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा, जिसने इंडिका नामक ग्रंथ की रचना की थी। चंद्रगुप्त मौर्य ने भी सेल्युकस को 500 हाथी उपहार में दिये। इस प्रकार इसकी साम्राज्य की सीमा ईरान की सीमा से मिल गया। स्मिथ महोदय ने हिन्दू कुश पर्वन को वैज्ञानिक सीमा कहकर संबोधित किया है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य अपने पुत्र बिन्दुसार के लिए गद्दी का त्याग कर दिया और अपने धार्मिक गुरू भद्रबाहु के साथ कर्नाटक के श्रमणबेलगोला में कायाक्लेश का पालन करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए, जिसे जैसे धर्म में सल्लेखना कहा गया हे। उस स्थल का नाम इनके नाम पर चन्द्रगुप्त बस्ती और पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि कर दिया गया।
- **बिन्दुसार (298 - 273 BC) -** यह योग्य पिता का योग्य पुत्र था। इसकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अपने पिता से प्राप्त साम्राज्य को संभालते हुए अपने पुत्र अशोक को सौंप देना थास। इसको भी विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है।
- बिन्दुसार का सबसे लोकप्रिय नाम **अमित्रघात** है, जिसका अर्थ शत्रुओं का संहार करने वाला होता है।
- राजतरंगनी के अनुसार, बिन्दुसार के समय मं तक्षशिला में विद्रोह हुआ था, जिसको सुसीम के बाद अशोक ने दबाया था। तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ के अनुसार बिन्दुसार 16 राज्यों का विजेता था, इसके दरबार में भी चाणक्य, राधा गुप्त अहौर खट्टालक जैसे विद्वान रहते थे।
- बिंदुसार ने यूनान/ग्रीक/सीरिया के शासक **ऐण्टियोकस** से मीठा मदीरा, सुखा अंजीर और एक दार्शनिक भेजने का अनुरोध किया था।

- ऐण्टियोकस ने मदीरा और सुखा अंजीर भेज दिया, लेकिन दार्शनिक को नहीं भेज सका, क्योंकि यूनान की कानून इसकी इजाजत नहीं देता था। ऐण्टियोकस ने डायमेकस को राजदूत बनाकर बिंदुसार के दरबार में पाटलिपुत्र भेजा था।
- डायमेकस को मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना गया है।
- बिंदुसार के समय में मिस्र के शासक फिलाडेल्फस टॉलमी द्वितीय ने अपना राजदूत डायनोसियस को इसके राज दरबार में भेजा था।
- बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय के अनुयायी थे। आजीवक का शाब्दिक अर्थ भाग्यवादी होता है।
- **आजीविक संप्रदाय के प्रवर्तक मक्खलीगोसाल थे।**
- **अशोक महान् (273/269 BC- 232 BC) -** अशोक केवल मौर्य वंश के ही नहीं भारत के साथ–साथ विश्व के महान् शासकों की श्रेणी में शामिल है। यह मौर्य वंश के महत्वपूर्ण शासक थे और सभी क्षेत्रों में कार्य किया था, जिसे निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं–
- **प्रारंभिक जीवन–**अशोक की माँ का नाम सुभद्रांगिणी या धर्मा/धम्मा था, जिनका अधिक प्रभाव अशोक के जीवन पर दिखाई पड़ता है। अशोक को सर्वप्रथम उज्जैन का प्रशासक नियुक्त किया गया। उज्जैन जाने के क्रम में मध्य प्रदेश के विदिशा/बेसनगर के व्यापारी की पुत्री देवी के साथ इनका विवाह हुआ। संघमित्रा और महेन्द्र देवी के संतान थे। असंघमित्रा और कारूवाकी दो और पत्नियों का नाम मिलता है, जिसमें एक ही पहचान तिष्यरक्षिता के रूप में भी किया गया है। अशोक ने शासक बनने के पूर्व नेपाल और खस को जीत लिया था। नेपाल में इसने ललितपतन नामक नगर का निर्माण कराया। इसकी पुत्री चारूमती ने देवपतन नामक नगर का निर्मण कराया था। अशोक ने तक्षशिला में हुए विद्रोह को दबाकर अपने योग्यता को साबित कर दिया। इसने झेलम (विस्तता) नदी के किनारे श्रीनगर नामक नये नगर का निर्माण भी कराया था। तीवर की माता के रूप में कारूवाकी का उल्लेख इलाहाबाद स्तंभ लेख पर किया गया है। बौद्ध ग्रंथ महावंश के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या करके गद्दी को प्राप्त किया था और इसी क्रम में 4 वर्ष लग गया। इस प्रकार अशोक का विधिवत रूप से राज्यभिषेक 269 BC में हुआ।
- **नामकरण–**अशोक को भी विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। जैसे–

स्रोत	नाम
पुराण	अशोक वर्द्धन
गिरनार अभिलेख	अशोक मौर्य
भाब्रू	मगध का राजा
मास्की, गुर्जरा, उदेगोलाम, नेट्टुर	अशोक

- अशोक का अशोक नाम सर्वप्रथम **मास्की और गुर्जरा** अभिलेख में मिला है, इसके बाद उदेगोलाम और नेट्टुर में भी मिला है।
- अशोक ने स्वयं दो उपाधि धारण की थी, प्रियदर्शी और देवानामप्रिय।
- **कलिंग युद्ध (261 BC) :** कलिंग का क्षेत्र वर्तमान में उड़ीसा का क्षेत्र है। अशोक अपने राज्यभिषेक के 8वें वर्ष में कलिंग पर आक्रमण कर दिया, जिसका कारण निम्नलिखित है–

(1) साम्राज्य विस्तार के लिए।
(2) समुद्र तक पहुँच बनाने के लिए।
(3) हाथी प्राप्त करने के लिए।
(4) नागा जाति को दण्डित करने के लिए।

- इस युद्ध में लाखों हताहत हुए। इस दृश्य को देखकर अशोक का हृदय परिवर्तित हुआ और इसने भेरीघोष (युद्ध की नीति) का त्याग कर जय घोष (धम्म की नीति) को अपना लिया। हाथीगुम्फा अभिलेख से यह स्पष्ट होता है कि इस युद्ध के समय कलिंग का शासक नंदराज था।
- **कलिंग युद्ध का वर्ण 13वें शिलालेख में किया गया है।**
- **विश्व बंधुत्व या भाईचारा का संदेश देने के लिए अशोक को महान शासक कहा गया है।**
- अशोक ने ''जियो और जीने दो'' का नारा दिया था।
- **धार्मिक नीति–**अशोक एक धर्म निरपेक्ष शासक थे। राजतरंगिणी के अनुसार प्रारंभ में अशोक शैव धर्म का अनुयायी था। महावंश और दीपवंश के अनुसार अशोक को उपगुप्त ने बौद्ध धर्म में दिक्षित किया था। दिव्यावदान और व्हेनसांग के अनुसार अशोक को बौद्ध धर्म में निग्रोध ने दीक्षित किया था। मास्की लघु शिलालेख (कर्नाटक) में अशोक ने स्वयं को बुद्धशाक्य कहा है और भ्राबू शिलालेख में अशोक त्रिरत्न में विश्वास व्यक्त किया है।
- अशोक ने महेन्द्र और संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए श्रीलंका की प्राचीन राजधानी अनुराधापुरम् भेजा था।
- अशोक ने बौद्ध धर्म को विश्व धर्म बना दिया। इसने धर्ममहामात्र की नियुक्ति की और स्वयं प्रत्येक पांचवें वर्ष धर्म की यात्रा पर निकलता था। इसने भगवान बुद्ध की जन्म स्थली लुम्बिनी/रूमिदेई में कर को घटाकर 1/8 भाग कर दिया।

  उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अशोक बौद्ध धर्म में अधिक रूची रखता था। इसका धर्म राहुलोवादसूत से लिया गया है, जो सभी धर्मों का सार है।
- अशोक की मृत्यु के बाद लगभग 50 वर्षों के अंदर ही मौर्य वंश का अंत हो गया।
- मौर्य वंश का अंतिम बृहद्रथ था, जिसकी हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दिया। मौर्य वंश समाप्त हुआ और मगध की गद्दी पर शुंग वंश स्थापित हुआ।
- **मौर्य प्रशासन–**मौर्य प्रशासन के बारे में मेगास्थनीज की इंडिका, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और अशोक के अभिलेख से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अध्ययन की सुविधा के लिए मौर्य प्रशासन को हमलोग तीन भागों मे विभाजित कर सकते हैं। जैसे–
  (1) केन्द्रीय प्रशासन (2) प्रांतीय प्रशासन (3) नगरीय प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन–

(1) **शासन**–इस प्रशासन में शासक सर्वोच्च अधिकारी थ। यह व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का भी सर्वोच्च अधिकारी था। अंतिम रूप से निर्णय लेने का अधिकार इसके पास सुरक्षित था।

(2) **मंत्रिपरिषद्**–राजा की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद् का गठन किया गया, जिसमें कुछ अधिकारी शामिल थे। इन अधिकारियों की नियुक्ति कौटिल्य के देखरेख में उपधा परीक्षण में सफल होने के बाद किया जाता था।

- सर्वप्रथम अर्थशास्त्र में साप्तांग सिद्धांत का उल्लेख किया गया है, जैसे–राजा, आमात्य (अधिकारी), जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र।

शब्दावली	अर्थ
समाहर्ता	राजस्व अधिकारी
सन्निधाता	कोषाध्यक्ष
पोतवाध्यक्ष	माप–तौल का अधिकारी
पाण्याध्यक्ष	वाणिज्य व्यापार का अधिकारी
सीताध्यक्ष	राजकीय भूमि का अधिकारी

(3) **गुप्तचर प्रणाली**–यह महामात्यासपर्स नामक विभाग के अधीन कार्य करता था। कौटिल्य ने गुप्तचरों को गुढ़ पुरूष कहा है, जो दो भागों में विभाजित था।

(i) **संस्था**–जो एक स्थान पर रहकर गुप्तचरी करते थे, उसको संस्था कहा गया।

(ii) **संचार**–जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमकर गुप्तचरी करते थे, उसको संचार कहा गया।

- इन लोगों की सहायता के लिए पुलिस अधिकारी भी थे, जिसे कौटिल्य ने रक्षिन कहा है। एरियन महोदय ने पुलिस अधिकारी को ओवरसीयर और स्ट्रैबो ने इंस्पेक्टर कहा है।

(4) **सैन्य प्रशासन**–मौर्यों के पास सबसे विशाल सेना थी। प्लिनि के अनुसार 6 लाख पैदल सेना, 30 हजार अश्व सेना, 9 हजार हाथी सेना और 8 हजार रथ सेना था। मेगास्थनीज के अनुसार सैन्य प्रशासन की देखभाल के लिए 30 व्यक्तियों की 6 विभाग की स्थापना की गयी थी और प्रत्येक विभाग में 5–5 व्यक्ति होते थे।

- जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख सैनिक लेकर संपूर्ण भारत को रौंद दिया था।
- इस समय 18 प्रमुख अधिकारी और 36 प्रकार के अध्यक्ष होते थे। प्रमुख अधिकारी को तीर्थ (माहमात्र) कहा गया है, जिनका वार्षिक वेतन 48000 पण था और सबसे निम्न स्तर के कर्मचारी का वेतन 10 पण था।

(5) **न्याय एवं दण्ड व्यवस्था**–मौर्य प्रशासन में न्याय एवं दण्ड व्यवस्था कठोर था, क्योंकि मृत्यु दंड दिया जाता था। अर्थशास्त्र में तीन प्रकार का दण्ड और 18 प्रकार की यातना का उल्लेख किया गया है। इस समय केन्द्रीय स्तर पर दो न्यायालय थे। जैसे–

(i) **धर्मस्थीय**–इस स्वरूप दीवानी न्यायालय के समान था।

(ii) **कंटकशोधन**–इसका स्वरूप फौजदारी न्यायालय की तरह था।

- अमात्य और राजुक नामक अधिकारी न्याय का कार्य संपन्न करते थे। क्षेत्रीय स्तर पर संग्रहण और द्रोणमुख न्यायालय की स्थापना की गयी थी।
- **प्रांतीय प्रशासन**–प्रशासन की सुविधा के लिए विशाल सम्राज्य को कई प्रशासनिक ईकाईयों में विभाजित की गयी थी। साम्राज्य का विभाजन प्रांत में हुआ था, जिसका अधिकारी स्थानिक होते थे और इसके अधीन कई गोप होते थे। गोप के अधीन गई गाँव होता था अर्थात् गाँव प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई थी।
- **नगर प्रशासन**–कौटिल्य ने नगर के प्रशासक को नागरक कहा है।

  कौटिल्य ने विस्तार पूर्वक उल्लेख नहीं किया है। मेगास्थनीज के अनुसार 30 व्यक्तियों के द्वारा 6 विभाग की स्थापना की गयी थी और प्रत्येक विभाग में पाँच–पाँच व्यक्ति होते थे, जिनके द्वारा नगर प्रशासन का कार्य किया जाता था।
- **मेगास्थनीज ने नगर प्रशासन का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है।**
- मेगास्थनीज के अनुसार मार्ग का सुरक्षा अधिकारी को एग्रोनोमोई कहा गया है।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि मौर्य प्रशासन एक केन्द्रीकृत प्रशासन था। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय प्रांतों की संख्या 4 थी। अशोक ने कलिंग को जीतकर संख्या पाँच कर दी, जो निम्नलिखित है–

प्रांत	राजधानी
पूर्व/प्राची	पाटलिपुत्र
अवंति	उज्जैन
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि (कर्नाटक)
कलिंग	तोसली

- **आर्थिक जीवन**–इसके अंतर्गत निम्नलिखित तथ्यों को शामिल किया जाता है।
- **कृषि**–आय का मुख्य स्रोत भू–राजस्व था, जो उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। सरकार के तरफ से सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया गया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के आदेश पर स्वराष्ट्र के प्रांतपति पुष्यगुप्त ने सुदर्शन झील का निर्माण कराया।
- अशोक के आदेश पर तुषास्फ (यूनानी) ने सुदर्शन झील का पुनर्निमाण कराया था।
- सुदर्शन झीलक` निर्माण के बारे में तथा चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक के बारे में गिरनार अभिलेख किया गया हें
- **वाणिज्य व्यापार**–कृशि के साथ–साथ इसका भी विकास हुआ। जलमार्ग और स्थलमार्ग से व्यापारिक कार्य किया जाता था। पूर्वी तट पर सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह ताम्रलिप्ति और पश्चिमी तट पर भड़ौच/भारूकच्छ/बेरीगाजा था। स्थल मार्ग में सबसे बढ़ा उत्तरापथ था, जो पाटलिपुत्र को स्वर्णगिरि से जोड़ता था।

- **मुद्रा व्यवस्था**–वाणिज्य व्यापार के विकास में भी मुद्रा व्यवस्थाने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस समय सोने का सिक्का पण कहलाता था, जो मानक सिक्का था। चाँदी के सिक्के को कर्षापण तथा ताँबे का सिक्का भाषक एवं काकणी नाम से प्रचलित था। इन सिक्कों की देखभाल के लिए लक्षणाध्यक्ष नामक अधिकारी नियुक्त किया गया था। इन सिक्कों पर मयूर और सूर्य का चित्र अंकित था। इस समय ब्याज पर ऋण देने की व्यवस्था भी की गयी थी व्याज को रूपिका कहा गया था। कम समय के लिए 15 प्रतिशत और अधिक समय के लिए 60 प्रतिशत वार्षिक ब्याज लिया जाता था।

शब्दावली	**अर्थ**
सीताभूमि	राजकीय भूमि
अदेवमातृका भूमि	बिना वर्षा के उपजाऊ वाली भूमि
विष्टि	बेगार (बिना मजदूरी दिये कार्य कराना)
हिरण्य	नगदी कर

- **मौर्य कला**–अध्ययन की सुविधा के लिए मौर्यकला को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। जैसे–

1. **राजकीय कला**–इस समय जन कला की अपेक्षा राजकीय कला का अधिक विकास हुआ था, क्योंकि इस कला को राजाओं ने संरक्षण दिया था।

- **राजप्रसाद**–चन्द्रगुप्त मौर्य ने पटना के कुम्हरार में 80 स्तंभों वाला लकड़ी का राजप्रसाद बनवाया था।
- **शिलालेख**–इसके शिलालेख बृहद और लघु दो रूपों में विभाजित है। मानसेहरा और शाहबाजगढ़ी शिलालेख खरोष्ठी लिपि में लिखा गया है।
- अफगानिस्तान के शार–ए–कुहना नामक स्थान से दो भाषाओं वाला अभिलेख मिला है, जिसमें ग्रीक और अरमाइक का प्रयोग किया गया है।
- अशोक के प्रथम शिलालेख में पशु हत्या का निषेध, दूसरे शिलालेख में मानव के साथ–साथ पशुओं का उपचार, पाँचवें शिलालेख में धम्म महामात्र की नियुक्ति, आठवें शिलालेख में अशोक की धर्मयात्रा का वर्णन और 13वें शिलालेख में कलिंग युद्ध के साथ आटविक जाति और हृदय परिवर्तन का उल्लेख किया गया है।
- कलिंग से दो पृथक शिलालेख मिला है, जिसको 15वाँ और 16वाँ शिलालेख या प्रथम और दूसरा पृथक शिलालेख कहा गया है। इसमें अशोक ने सभी जनता को अपना पुत्र एवं पुत्री कहकर संबोधित किया है।
- **स्तंभ लेख**–यह मौर्य कला का सबसे विशिष्ट लक्षण है। चुनारके बलुआ पत्थर से यह निर्मित है। इसमें भी प्रकार का जोड़ नहीं है। यह भूमि से 50 फीट ऊपर और 50 फीट भूमि के अंदर है। आधार की अपेक्षा शीर्ष की चौड़ाई कम है और इसके शीर्ष पर विभिन्न प्रकार की मूर्ति बनाया गयी है। कुछ प्रमुख स्तंभ लेख निम्नलिखित है–

(1) **इलाहाबाद स्तंभ लेख**–यह सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह पहले कौशाम्बी में था। मुगल बादशाह अकबर ने इलाहाबाद की किला में स्थापित किया। इस पर समुद्रगुप्त और जहाँगीर का लेख भी अंकित है।

- **दिल्ली–मेरठ और दिल्ली–टोपरा**–यह स्तंभ पहले मेरठ और टोपरा (हरियाणा) में स्थित था। फिरोजशाह तुगलक ने इसको दिल्ली में स्थापित किया।
- **लौरिया–नंदनगढ़**–यह बिहार के पश्चिम–चंपारण में स्थित है, और इसके शीर्ष पर सिंह की आकृति बना है।
- **रामपूरवा**–यह बिहार के पश्चिम चंपारण में स्थित है और इसके शीर्ष पर वृषभ की मूर्ति बनी हुई है।
- मध्य प्रदेश के संकिषा स्तंभ के शीर्ष पर हाथी की आकृति बनी हुई है।
- **गुहालेख**–चट्टानों को काटकर आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं का रहने के लिए इसका निर्माण बराबर और 'नागार्जुनी' पहाड़ी में किया गया। इसमें सुदामा गुफा, गोपी गुफा, विश्व झोपड़ी गुफा, लोमषऋषि की गुफा और कर्ण चौपड़ गुफा महत्वपूर्ण है, जिसमें गोपी गुफा सबसे बड़ी है।
- अशोक और उसके पौ दशरथ ने इन गुफाओं का निर्माण कराया था।
- **स्तूप**–भगवान बुद्ध के अवशेष पर अशोक ने 84000 स्तूप का निर्माण करया था, जिसको पुष्यमित्र शुंग ने तोड़ दिया।
- **जन कला**–यह आम लोगों की कला थी, जिसमें धन का अभाव था फिर भी मृदभांड और मूर्तियों का प्रमाण मिला है। काला–लाल पॉलिसदार मृदभांड इस काल में अधिक मिला है। इसके साथ ही यक्ष और यक्षिणी की मूर्ति तथा जैन धर्म से संबंधित मूर्ति का भी प्रमाण मिला है। पटना के लोहानीपुर और परखम नामक स्थान से जैन मूर्ति प्राप्त हुआ है।
- पटना के दीदारगंज से प्राप्त यक्षिणी की मूर्ति जन कला का सबसे विशिष्ट लक्षण है, जिसका नाम चारमग्रहणी है। यह पटना संग्रहालय में सुरक्षित है।

विविध तथ्य :

- उत्तराखंड के कालसी नामक स्थान से अशोक का अभिलेख मिला है।
- गया के विष्णुपद मंदिर अहिल्या बाई ने बनवाया था।
- 13वें शिलाखंड शिलालेख में अशोक ने आटविक जातियों को चेतावनी दी है।
- दूसरे शिलालेख में चोल, पाण्ड्य, चेर वंश का उल्लेख है।
- अशोक ने बोधगया का महाबोधि मंदिर बनवाया था।
- अशोक के मृत्यु के बाद मगध की गद्दी पर कुणाल शासक बने थे।
- अशोक के समय श्रीलंका का शासक तिस्स था।
- रूमिनदेई अभिलेख से कर प्रणाली की जानकारी मिलती है।
- मौर्यकाल में शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र तक्षशिला था।

मध्य एशिया से संपर्क एवं प्रभाव

हिन्दु–कुश पर्वत और ऑक्सस नदी के बीच का क्षेत्र बैक्ट्रिया कहलाता है, जिसकी राजधानी बल्ख था। एण्टियोकस I एवं II के समय लगभग 250 ई. पूर्व में डियोडोट्स नामक व्यक्ति ने बैक्ट्रिया में स्वतंत्र सत्ता को स्थापित किया। इसको गद्दी से हटाकर युथीडेमस नामक व्यक्ति ने बैक्ट्रिया पर नियंत्रण कर लिया। इसके समय में एण्टियोकस III ने अपनी पुत्री का विवाह युथीडेमस के पुत्र डेमोट्रियस पहला हिन्द–यूनानी था, जिसने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया था।

- कुछ विद्वानों के अनुसार एण्टियोकस III ने सबसे पहले आक्रमण किया था, लेकिन भारतीय राजा सुभगसेन के प्रतिरोध के चलते यह वापस हो गया।
- मध्य एशिया से संपर्क और उसका प्रभाव के अन्तर्गत चार वंशों के बारे में अध्ययन किया जाता है। जैसे–
  (1) हिन्द–यूनानी
  (2) शक
  (3) पहलव
  (4) कुषाण
- **हिन्द–यूनानी**–सर्वप्रथम हिन्द–यूनानी लोगों ने भारत पर आक्रमण किया था, जिनको इतिहास में यवन, इंडीग्रीक, बैक्टीरिया आदि के नाम से संबोधित किया गया है। इन लोगों ने भारतीय संस्कृति किो भी बहुत हद तक प्रभावित किया, जिसमें कुछ शासक प्रमुख है।
- **डेमेट्रियस (दमित्र)**–यह हिन्द–यूनानी वंश का पहला शासक था, जिसने भारत पर आक्रमण किया। इसने शाकल (स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया था और अपने नाम का सिक्का भी जारी किया, जिसपर खरोष्ठी और ग्रीक लिपि का प्रयोग किया गया है। इसने भारतीय राजाओं के समयन महाराज आदि की उपाधि धारण किया था।
- **मिनान्डर (मिलिन्द)**–यह इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने भी शाकल को ही राजधानी बनाया। बौद्ध भिक्षु नागसेन ने इसको बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था।
- बौद्ध भिक्षु नागसेन और शासक मिलिन्द के बीच प्रश्न और उत्तर के क्रम में जो बातचीत हुआ उसको मिलिन्दपन्हो नामक ग्रंथ के रूप में लिखा गया है, जो पाली भाषा में है।
- इस पुस्तक का लेखक नागसेन को माना जाता है, जिसमें 75 व्यापारियों का उल्लेख भी किया जाता है।
- **हार्मियस**–यह हिन्द–यूनानी वंश का अंतिम शासक था, जिसको कुषाण कुजुलकडफिसेस ने गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत कर दिया।

विविध तथ्य :

- नाटकों में पटाक्षेप शब्द के लिए यवनिका शब्द का प्रयोग किया गया है।
- भारत में सैनिक शासक के जनक हिन्द–यूनानी लोग थे।
- हिन्द–यूनानियों को भारतीय गोल मिर्च सबसे अधिक पसंद था, जिसको **यवनप्रिय कहा** गया है।
- हिन्द–यूनानियों ने सर्वप्रथम सोने का सिक्का, लेखयुक्त सिक्का, आकर्षक एवं सुंदर सिक्का जारी किया था।
- हिन्द यूनानियों ने ज्योतिषशास्त्र, ग्रहों की गति कैलेण्डर का ज्ञान, भविष्यवाणी करने की प्रथा को भारत से लेकर आये।
- **शक (सीथियन)**–हिन्द–यूनानी के बाद भारत पर शकों ने आक्रमण किया। चीन के शासक शी–हुआंग–टी ने जब महादीवार का निर्माण करा दिया तब इन लोगों ने भारत में प्रवेश करने का सफल प्रयास किया। यह लोग पाँच शाखाओं में मध्य एशिया से चले थे। एक शाखा अफगानिस्तान में रूक गया।
- शक वंश में सबसे महत्वपूर्ण शासक रूद्रदामन था, जिसके बारे में गिरनार अभिलेख से जानकारी मिलता है। रूद्रदामन ने भ्रष्टराजप्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की थी। यह प्रथम शासक था, जिसने संस्कृत भाषा में अभिलेख जारी किया था। इसके समय में स्वराष्ट्र के प्रांतपति सुविसाख ने सुदर्शन झील का पुर्नर्निर्माण कराया, जिसका उल्लेख गिरनार अभिलेख में है।
- इस वंश का अंतिम शासक रूद्र सिंह तृतीय था, जिसको गुप्त वंश के शासक चन्द्रगुप्त II ने पराजित कर इस वंश का अंत कर दिया।
- **पहलव वंश (पार्थियाई)**–शक के बाद भारत में पहलव वंश के शासकों ने सत्ता को संचालित किया था। इनका मूल निवास स्थान ईरान थ। बनान ने इस वंश को स्थापित किया लेकिन मिथ्रेडेट्स प्रथम स्वतंत्र शासक था। भारत में माउस नामक व्यक्ति ने पहलव वंश को स्थापित किया।
- **गोंडाफर्निस**–यह पहलव वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसी के समय में प्रथम ईसाई धर्म **प्रचारक सेंट टॉमस** ईजरायल से चलकर भारत आये थे।
- **कुषाण वंश (यू–ची/तेखारी)**–मध्य एशिया से चलकर आनेवाले लोगों में सबसे अंत में कुषाण वंश के लोगों ने शासक व्यवस्था को स्थापित किया। इन लोगों को यू–ची या तोखारी भी कहा गया है। कुछ प्रमुख शासक निम्नलिखित है–
- **कुजुलकफिसेस या कडफिसेस– I (15-65 AD) :** यह कुषाण वंश का संस्थापक था। इसने पुरूषपुर या पेशावर को अपनी राजधानी बनाया। इसने भारतीय शासकों के समान उपाधि धारण की। इसने अधिक मात्रा में ताँबे का सिक्का जारी किया था, जिसपर हिन्द–यूनानी वंश के अंतिम शासक हर्मियस का नाम भी अंकित मिला है।
- **विमकडफिसेस या कडफिसेस– II (65-78 AD) :** इसने गद्दी पर आने के साथ अधिक मात्रा में सोने का सिक्का जारी किया। इन सिक्कों पर डमरू, त्रिशुल, नंदी का चित्र मिला है, जो स्पष्ट करता है कि यह शैव धर्म का अनुयायी था। इसने परमेश्वर, माहेश्वर और सर्व–लोकेश्वर आदि की उपाधि धारण की थी।
- **कनिष्क (78 - 102 AD) :** कुषाण वंश का यह सबसे महत्वपूर्ण शासक था।
- **78 ई. में इसने शक–संवत् को जारी किया।**

- इसने कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन कराया था।
- **58 BC में विक्रमादित्य नामक शासक ने विक्रम–संवत् को जारी किया था।**
- कनिष्क को भारतीय इतिहास में द्वितीय अशोक कहा गया है।
- कनिष्क के उपलब्धियों को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।
- **साम्राज्य विस्तार**–गद्दी पर आने के साथ ही इसने क्षेत्र का विस्तार शुरू किया। रजतरंगिणी के अनुसार इसने कश्मीर को जीत लिया और कनिश्कपुर नामक नये नगर का निर्माण कराया। अश्वघोष के अनुसार इसने पाटलिपुत्र को भी विजित किया था। तिब्बती स्रोत के अनुसार इसकी सेना साकेत (अयोध्या/कौशल) तक पहुँच गई थी। चीनी स्रोत के अनुसार इसने चीन के विरूद्ध भी अभियान किया, लेकिन चीनी सेनापति पानचाऊ से पराजित हो गया। इसने दोबारा अभियान किया और पानचाऊ के पुत्र पानयांग को पराजित कर दिया। संधि शर्त के अनुसार चीन का तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र यारकंद, काशगार और खोतान कनिष्क को मिला।
- यह प्रथम शासक था, जिसकी साम्राज्य की सीमा चीन तक पहुँच गया था।
- **प्रशासन**–कनिष्क कुशल प्रशासक भी था। इसने क्षत्रप प्रणाली को लागू किया था। खरपल्लन और वनस्पर दो महत्वपूर्ण क्षत्रपी थे, जो प्रशासन में सहयोग करते थे।
- कनिष्क ने देवपुत्र की उपाधि धारण की थी। यह उपाधि चीन से ली गयी थी। चीन के शासक स्वर्गपुत्र की उपाधि धारण करते थे।
- कनिष्क ने रोमन सम्राट के समान कैसर की उपाधि भी धारण की थी।
- कनिष्क ने पुरूषपुर (पुशावर) को अपनी राजधानी बनाया। जब क्षेत्र का विस्तार हुआ तब मथुरा को इसने अपनी दूसरी राजधानी बना लिया।
- **धार्मिक नीति**–कनिष्क को अशोक के समान धर्मनिरपेक्ष शासक माना गया है। पार्श्व और मातृचेट के अनुरोध पर इसने बौद्ध धर्म को अपनाया और पार्श्व के कहने पर ही कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन भी कराया।

  इसके सिक्कों पर ईरानी, ग्रीक देवता के साथ–साथ हिन्दू धर्म के देवता और एक सिक्का पर बोडो (बुद्ध) शब्द अंकित मिला हैं इसका एक सिक्का पर बलिदान करते हुए और एक सिक्का पर सैनिक वेशभूषा में भी दिखलाया गया है। इसने चौथी बौद्ध संगीति के समय अपनी राजधानी पुरूषपुर में एक विशाल स्तूप का निर्माण भी कराया था, और एक संघाराम (महाविहार) को भी बनवाया था।
- **शिक्षा एवं साहित्य**–इस क्षेत्र में भी कनिष्क को रूचि थी। इसके दरबार में कई विद्वान रहते थे। जैसे–
- **अश्वघोष**–इनकी तुलना मिल्टन, गेटे, कॉण्ट, वाल्टेयर आदि के साथ किया गया है। यह चौथी बौद्ध संगीति में उपाध्यक्ष थे। बुद्धचरित इनकी प्रमुख रचना है।
- **नागार्जुन**–इनको भारत का आईंस्टिन कहा गया है, जिन्होंने सापेक्षवाद या शून्यवाद को जन्म दिया था। इनके अनुसार धातुओं के द्वारा भिन्न प्रकार के रोगों का निवारण किया जा सकता है।
- **चरक**–यह प्रसिद्ध चिकित्सक थे। इनको शल्य चिकित्सा का भगवान कहा गया है। इन्होंने अपनी पुस्तक चरक संहिता में 121 प्रकार के उपकरण का उल्लेख किया है।
- **वसुमित्र**–यह कनिष्क के समकीलिन थे, और चौथी बौद्ध संगीति में अध्यक्ष भी थे।

विविध तथ्य :

- रेशम मार्ग पर कुषाणों का अधिकार था। रेशम मार्ग भारत अफगानिस्तान होते हुए यूरोप में रोम को जोड़ता था और इस मार्ग से रेशमी वस्त्र का भारत से निर्यात किया जाता था।
- शक और कुषाणों ने अश्वरोही सेना को मजबूत बनाया क्योंकि लगाम, जिन और काठी इन लोगों की देन है। शक और कुषाणों ने लंबा कोट, लंबा टोप और चमड़े का जूता, कुर्ता, पायजामा आदि से भारतीयों को अवगत कराया।
- कुषाणों की देन भारतीयों के लिए पान भी है। शक और कुषाणों ने पकी हुई ईंट का अधिक से अधिक प्रयोग करना भारतीयों को सिखाया। इस प्रकार मध्य एशिया से संपर्क प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय और भारतियों को निश्चित रूप में प्रभावित किया।

गुप्त वंश

- प्राचीन भारत के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण वंश है। इस काल में सभी क्षेत्रों में विकास हुआ, लेकिन कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में सबसे अधिक विकास हुआ था, जिसके लिए गुप्त काल को स्वर्णकाल कहा गया है।
- स्मिथ महोदय ने गुप्तकाल को स्वर्णकाल कहा है। इस वंश के महत्वपूर्ण शासक निम्नलिखित हैं–
- **श्रीगुप्त (275–300)**–यह गुप्त वंश का संस्थापक था। कुछ विद्वानों के अनुसार यह कुषाणों का सामंत था।

  प्रसिद्ध चीनी यात्री इत्सिंग ने इसको ''चे–ली–के–तो'' नाम से संबोधित किया था। इस शासक ने चीनी बौद्ध भिक्षुओं के लिए सारनाथ में एक बौद्ध मंदिर का निर्माण कराया था। इसके सिक्का पर श्री गुप्तस्य शब्द अंकित मिला है। अधिकांश विद्वानों ने इन लोगों को वैश्य माना है।
- **घटोत्कच (300 & 319)**-चन्द्रगुप्त **II** की पुत्री प्रभावती गुप्ता के सुपिया अभिलेख में इसको आदिराज कहा गया है।
- **चन्द्रगुप्त–I (319 - 314) :** यह गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था, क्योंकि इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। इसने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए लिच्छिवी राज्य की राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया, जिसका पुत्र समुद्रगुप्त था।
- चन्द्रगुप्त–I ने ई. गद्दी पर आने के उपलक्ष्य में गुप्त–संवत् को जारी कर दिया था।

  इसके 25 प्रकार का सिक्का प्राप्त हुआ है, जिसमें राजारानी प्रकार, कुमारदेवी प्रकार और विवाह प्रकार अधिक प्रसिद्ध है।
- **समुद्रगुप्त (335 - 380) :** यह चन्द्रगुप्त–I का योग्य पुत्र था। प्रयाग प्रशस्ति में इसके उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।
- प्रयाग प्रशस्ति–यह समुद्रगुप्त से संबंधित है, जिसके लेखक हरिषेन थे, जो इसके दरबारी कवि और मंत्री भी थे। यह चंपु शैली (गद्य और पद का मिश्रण) में लिखा गया है। प्रयाग प्रशस्ति में ही समुद्रगुप्त को लिच्छिवी दैहित्री (लिच्छिवी का नाती) कहा गया है। इसमें समुद्रगुप्त के उपलब्धियों का वर्णन है, लेकिन अश्वमेघ यज्ञ का उल्लेख नहीं किया गया है।
- स्मिथ महोदय ने **समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन** कहा है।
- समुद्रगुप्त की तुलना यमराज, कुबेर, इन्द्र और वरूण से किया गया है।

साम्राज्य विस्तार :

- इसने सभी क्षेत्रों में अपने साम्राज्य का विस्तार किया इसलिए इसे चक्रवर्ती सम्राट कहा गया है। सम्राज्य विस्तार का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **उत्तरी राज्य :** समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम उत्तर भारत के 9 राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया।
- **आटविक राज्य :** जंगली क्षेत्रों में छोटे–छोटे 18 राज्य थे। इनके क्षेत्र को महाकान्तर कहा गया है। इसको भी साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **दक्षिणी राज्य :** कुल 12 राज्य थे, जिनके लिए तीन प्रकार की नीति का पालन किया गया। जैसे–
- **ग्रहण की नीति**–इस नीति के द्वारा जीते हुए राज्य को साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **मोक्ष की नीति**–राज्य को मुक्त कर दिया गया।
- **अनुग्रह की नीति**–दया का भाव दिखाते हुए राज्य को वापस कर दिया गया।
- **सीमावर्ती राज्य**–इसके अंतर्गत 5 राज्य और 9 गणराज्य शामिल थे, जिन्होंने समुद्रगुप्त के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
- **विदेशों से संबंध**–श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त की आज्ञा लेकर बोध गया में एक बौद्ध मठ का निर्माण कराया, जिसके खर्चे के लिए समुद्रगुप्त ने 5 गाँव अनुदान में दे दिये।
- इस विजय के उपलब्ध में समुद्रगुप्त ने अश्वमेघ यज्ञ किया और 6 प्रकार का सिक्का भी जारी किया। जैसे–वीणासारण, व्याघ्रहंता, अश्वमेघ, धर्नुधर, गरूड़ और परशु प्रकार का सिक्का।

चन्द्रगुप्त–II विक्रमादित्य (380 – 415) :

- यह गुप्त वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। कुछ विद्वानों के अनुसार समुद्रगुप्त के बाद बड़े पुत्र रामगुप्त गद्दी पर आये जिनको vfHkys[kksa'dk p*uke lsl aksf/kr fd;kx;kgS- bl le; if'pehk{k=k Hkkjr esa Lkdksadkfu;a=.kFkkA 'kd 'kkld :nzfl g III ने रामगुप्त के पास यह संदेश भेज दिया कि अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को मेरे पास भेजने पर आक्रमण नहीं करूँगा। रामगुप्त ने उसकी बात को मान लिया। लेकिन छोटे भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ध्रुवस्वामिनी का भेष धारण करके शक शिविर पर आक्रमण कर दिया और रूद्रसिंह–III की हत्या कर दिया।
- शकों को पराजित करने के उपलक्ष्य में इसने 'शकरि' और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। इस उपलक्ष्य में चाँदी का सिक्का अधिक मात्रा में जारी किया, जिसको सिंह विक्रम प्रकार का सिक्का कहा गया है।

  वापस आने के बाद इसने रामगुप्त की भी हत्या की और ध्रुस्वामिनी से विवाह किया और गद्दी प्राप्त कर लिया। इन बातों का उल्लेख विशाखदत्त की पुस्तक देवीचन्द्रगुप्तम् में की गयी है।
- दिल्ली में मेहरौली के लौह स्तंभ से इसके बारे में जारकारी मिलता है।, जो अष्ट धातुओं से बना हुआ था। इस लौह स्तंभ पर ''चन्द्र'' शब्द अंकित मिला है। इसको देवगुप्त और देवराज के नाम से भी संबोधित किया गया है। इसने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए नागकुल की राजकुमारी कुबेर नागा से विवाह किया, जिसकी पुत्री प्रभावती गुप्त थी। प्रभावती गुप्त का विवाह कन्नौज के वकाटक वंश के शासक रूद्रसेन–II के साथ किया। इनके मृत्यु के बाद पुत्री के अनुरोध पर कन्नौज पर भी नियंत्रण कर लिया।
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य समय सभी क्षेत्र में विकास हुआ, इसलिए इनके काल को स्वर्णकाल कहा गया है।
- इनके समय में **प्रथम चीनी यात्री फाह्यान** ने भारत की यात्रा की थी।
- इनके राजदरबार में **नौ–रत्न** रहते थे। जैसे–

  (1) शंकु (2) बेताल भट्ट (3) घटकर्पर (4) वररूचि (5) क्षपणक

(6) कालिदास (7) अमर सिंह (8) धनवंतरि (9) वराहमिहिर।

कुमार गुप्त–I (415-455) :

- मंदसौर अभिलेख (मालवा/मध्य प्रदेश) में इसके बारे में उल्लेख किया गया है। इसके समय में नर्मदा नदी के उद्‌गम स्थल अर्थात् मेकल के रहने वाले पुष्यमित्रों ने आक्रमण कर दिया, लेकिन पराजित हुए।
- **कुमार गुप्त प्रथम ने नालंदा विश्वविद्यालय** का निर्माण कराया था, जो भारत का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है।
- इसने महेन्द्रादित्य की उपाधि धारण की थी।
- इसने मयूर शैली का सिक्का जारी किया।
- सबसे अधिक सिक्कों का ढेर **बयाना** से मिला है।

स्कंदगुप्त (455 – 467) :

- इसे देवराय और शक्रोपम भी कहा गया है।
- यह अंतिम महत्वपूर्ण शासक था। इसके समय में सोने के सिक्कों में मिलावट दिखाई पढ़ती है, जिससे स्पष्ट होता है कि अब गुप्तों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगा था।
- इसने क्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।
- **इसके समय में हूणों ने आक्रमण किया था।**
- हूण जाति के लोग मध्य एशिया के रहने वाले थे। यह लोग लूटपाट और हत्या करने में अधिक विश्वास करते थे। तोरमाण और मिहिरकुल सबसे प्रसिद्ध हूण शासक थे। मिहिरकूल शैवधर्म का अनुयायी था। हूण आक्रमण का उल्लेख भितरी स्तंभ लेख (मध्य प्रदेश) में किया गया है।

विष्णुगुप्त (550–570) :

- यह गुप्त वंश का अंतिम शासक था। 570 में गुप्तों का पतन हुआ और कई छोटे–छोटे राज्यों में इनका सम्राज्य स्वतंत्र रूप में स्थापित हो गया।

गुप्तकालीन प्रशासन :

- मौर्य प्रशासन के विपरीत गुप्त प्रशासन विकेन्द्रीकरण पर आधारित था, जिसमें राजा के बाद सामंत लोग सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे
- सामंतवादी प्रथा का जन्म सातवाहन काल में हुआ, लेकिन इसका सबसे अधिक विकास गुप्तकाल में हुआ। इस समय भी शासक व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का सर्वोच्च अधिकारी था। यह परमभागवत, महाराजाधिराज, परमभट्‌टारक आदि की उपाधि ध ारण करता था। गुप्त वंश के अधिकांश शासकों ने परमभागवत की उपाधि धारण की थी। यह कुछ मंत्रियों के सहयोग से शासन करते थे। इनके प्रशासन में महारानी लोग भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी तथा परमभट्‌टारिका और सम्राज्ञी आदि की उपाधि धारण करती थी। कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी निम्नलिखित है–

(1) **हरिषेण**–यह समुद्रगुप्त का संधिविग्रहिक और महादण्डनायक था।
(2) **वीरसेन**–यह चन्द्रगुप्त द्वितीय का संधिविग्रहिक और महादण्डनायक था।
(3) **पृथ्वी सेन**–यह चन्द्रगुप्त–**II** का मंत्री और कुमारामात्य था।
(4) **शिखर स्वामी**–यह कुमारगुप्त–**I** का मंत्री और कुमारमात्य था।

प्रमुख शब्दावली	**अर्थ**
संधिविग्रहिक	युद्ध एवं शांति का मंत्री
महादण्डनायक	न्याय का सर्वोच्च अधिकारी (न्यायाधीश)
ध्रुवाधिकरण	राजस्व अधिकारी
बृहदेश्वर	अश्व सेना का प्रधान अधिकारी
कटुक	गज सेना का प्रधान अधिकारी
चाट–भाट	पुलिस अधिकारी

राजस्व प्रशासन :

- इस समय आमदनी का मुख्य स्रोत भूराजस्व था, जो उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। कुछ प्रमुख शब्दावली निम्नलिखित है–
- **भाग**–भू–राजस्व को भाग कहा गया है।
- **भोग**–उपहार स्वरूप मिलने वाला कर भोग कहलाया।
- **उद्रंग और उपरिकर**–यह भी भूराजस्व के समान था।
- **हिरण्य**–नगदी कर के रूप में।
- **मेय**–अनाज के रूप में लिया जाने वाला कर।
- **विष्टि/बेगार**–बिना मजदूरी दिये कार्य को करा लेना विष्टि/बेगार कहलाता था।

गुप्तकालीन कला एवं संस्कृति :

- गुप्तकाल में कला एवं संस्कृति का सबसे अधिक विकास हुआ था। और निश्चित रूप से इस क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए गुप्तकाल को स्वर्णकाल कहा जा सकता है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **धर्म**–गुप्त काल में सभी शासक धर्मनिरपेक्ष माने गये हैं क्योंकि सभी धर्मों का विकास दिखाई पड़ता है। जैसे–
- **वैष्णव धर्म/भागवत धर्म**–इसका प्रमुख स्थान था। गुप्त शासकों ने इसे राजकीय धर्म के रूप में अपनाया था। इनके सिक्कों पर शंख,

गदा, गरूड़ और लक्ष्मी का चित्र अंकित मिला है।

- **शैव धर्म**–वैष्णव धर्म के साथ–साथ इसका भी विकास दिखाई पड़ता है। कालीदास, भगवान शिव के भक्त थे। वीरसेन ने उदयगिरि की पहाड़ी (उड़ीसा) में शैव धम्र के भिक्षुओं के लिए गुफा का निर्माण कराया था। प्रमुख सामंत 'हस्तिन' भी शैव धर्म का अनुयायी था।
- **बौद्ध धर्म**–बौद्ध धर्म का विकास गुप्त काल में दिखाई पड़ता है। कुमारगुप्त–I ने नालंदा महाविहार का निर्माण कराया। चन्द्रगुप्त–II का मंत्री अम्रकादेव बौद्ध भिक्षु था और प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान बौद्ध धर्म के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त–II के समय भारत आया था। चित्रकला पर भी बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- **जैन धर्म**–वल्लभी और मथुरा जैन धर्म के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। गुप्तों के शासन काल में वल्लीाी में द्वितीय जैन संगीति का आयोजन हुआ था।
- **अन्य धर्म**–उपर्युक्त के साथ–साथ उत्तर प्रदेश के बुलंद शहर जिला में माडास्यात् नामक स्थान से सूर्य मंदिर का भी प्रमाण मिला है।
- **स्थापत्य कला**–इसके अंतर्गत सर्वप्रथम गुप्तकाल में ही मंदिर का निर्माण का कार्य भारत में शुरू हुआ। कुछ प्रमुख मंदिर निम्नलिखित हैं–

मंदिर का नाम	स्थान
दशावतार मंदिर	**देवगढ़ (झाँसी)**
पार्वती का मंदिर	नचनाकुठार (म.प्र.)
भगवान शिव का मंदिर	खोह और भूमरा (म. प्र.)
विष्णु का मंदिर	तीगवाँ (म.प्र.)
लक्ष्मण का मंदिर	भीतरगाँव (कानपुर) शिरपुर

- दशावतार मंदिर सर्वश्रेष्ठ गुप्तकालीन मंदिर है, जो भगवान विष्णु को समर्पित है।
- लक्ष्मण का मंदिर ईंट से बना है।
- विश्व की सबसे बड़ी बौद्ध मन्दिर बोरोबदूर (इण्डोनेशिया) में है।
- विश्व की सबसे बड़ी हिन्दू (विष्णु) मंदिर अंकोरवाट (कम्बोडिया) में है।
- **मूर्तिकला**–सभी धर्मों से संबंधित मूर्ति का निर्माण इस काल में हुआ। जैसे–ब्रह्मा, विष्णु, और शिव की संयुक्त मूर्ति, हरिहर की मूर्ति, पार्वती और शिव की संयुक्त अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति का निर्माण सर्वप्रथम इस काल में हुआ।
- भगवान बुद्ध की धातु द्वारा निर्मित मूर्ति भागलपुर के सुल्तानगंज से मिला है, जो विश्व में सबसे बड़ा धातु की मूर्ति थी, लेकिन अब चीन के द्वारा सबसे बड़ी मूर्ति बुद्ध की बना दी गयी है।
- भगवान बुद्ध की सबसे बड़ी पत्थर की मूर्ति अफगानिस्तान के बामियान के बेग्राम में स्थापित थी, जिसको तालिबानी सरकार ने तोड़ दिया।
- **विज्ञान एवं तकनीक**–इस क्षेत्र में गुप्तकाल में बहुत अधिक विकास हुआ था, जिसका सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण मेहरौली का लौह स्तंभ है। कुछ प्रमुख व्यक्ति गुप्तों के दरबार में थे। जैसे–
- **आर्यभट्ट**–यह प्रसिद्ध गणितज्ञ थे। इन्होंने यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, और उसकी छाया पड़ने से सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण होता है।
- यह **दशमलव पद्धति** के जनक हैं। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक सूर्य–सिद्धांत एवं आर्यभट्टीय है।
- किसी अज्ञात भारतीय ने **शून्य** का आविष्कार किया था।
- **वराहमिहिर**–यह खगोलशास्त्री थे। इन्होंने ग्रहों के आधार पर भविष्यवाणी करने की सिद्धांत को स्थापित किया था।
- पंचसिद्धांतिका, लघु जातक और वृहद जातक इनकी पुस्तक है।
- **भास्कराचार्य**–यह भी आर्यभट्ट के समान प्रसिद्ध गणितज्ञ थे और इन्होंने आर्यभट्ट की पुस्तक पर भाष्य/टीका लिखा था, जिसका नाम लघु–भास्कराचार्य एवं वृहद्–भास्कराचार्य है।
- **ब्रह्मगुप्त**–इन्होंने गुरूत्वाकर्षण सिद्धांत को स्थापित किया था, जिसके अनुसार पृथ्वी में आकर्षण शक्ति होने के कारण सभी वस्तुएँ पृथ्वी की तरफ आकर्षित होती है। ब्रह्म–सिद्धांत इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है।
- **धनवंतरि**–यह गुप्तकाल के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। इनकी तुलना जीवक और चरक के साथ की जाती है।
- **शिक्षा एवं साहित्य**–वल्लभी एवं मथुरा के साथ नालंदा शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। इन लोगों ने संस्कृत भाषा को राजकीय बनाया था, जिसमें बहु सारी पुस्तकों की रचना की गयी।
- **सामाजिक जीवन**–गुप्तकाल में सामाजिक दशा में बहुत अधिक गिरावट दिखाई देती है। इस समय चार वर्ण की व्यवस्था और भी जटिल हो गयी। सभी के लिए नियम कानून अलग–अलग बना दिया गया और अछुत वर्ग के लोग की दशा सबसे निम्न कोटि की थी। इस समय बहुत सारी मिश्रित जातियों का जन्म हुआ। जैसे–

पिता		माता		जाति/संतान
ब्राह्मण	+	वैश्य	–	अम्बष्ठ
ब्राह्मण	+	शुद्र	–	पारशव/निषाद
वैश्य	+	शूद्र	–	उग्र
शूद्र	+	ब्राह्मण	–	चण्डाल

- इसमें सबसे अछूत श्रेणी में चण्डाल को शामिल किया गया है। कुछ विद्वानों के अनुसार डोप जाति का जन्म भी इसी काल में हुआ, जो चण्डाल के समान थे। ये लोग श्मशान घाट में निवास करते थे।

इस समय महिलाओं की स्थिति दयनीय था। अब बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा, का प्रचलन शुरू हो गया। विधवाओं का जीवन कष्टमय था और वेश्यावृत्ति का प्रचलन भी समाज में था। उज्जैन के महाकाल मंदिर में लड़कियों को देवदासी के रूप में रखा जाता था।

- सती प्रथा का सर्वप्रथम उल्लेख ऐरण अभिलेख (510 ई.) (M.P.) में किया गया है। यह अभिलेख गुप्त शासक भानूगुप्त से संबंधित है, जिसके सेनापति गोपराज के मृत्यु के बाद उसकी पत्नी ने सती प्रथा का पालन कर लिया। नारत स्मृति मं ही सर्वप्रथम दासों को मुक्त करने की बात को भी शामिल किया गया है। भूमिदान देने की प्रथा ने इस काल में शिक्षित वर्ग को जन्म दिया, जिसको कायस्थ कहा गया।
- कायस्थों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है।
- जाति के रूप मं कायस्थों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी ओशरम् स्मृति में मिलता है।

खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा, आभूषण और मनोरंजन का साधन पहले के समान चला आ रहा था। उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि समाज के क्षेत्र में यह काल स्वर्ण काल नहीं था।

- **आर्थिक जीवन**–इस काल में आर्थिक जीवन समृद्ध था जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों को शामिल किया जाता है–
- **कृषि**–इस समय आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि था। आमदनी का मुख्य स्रोत भू–राजस्व था, जो 1/6 भाग लिया जाता था। इस समय सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया गया था।
- रहट/घटीयंत्र से सिंचाई किया जाता था।
- स्कंदगुप्त के समय स्वराष्ट्र के प्रांतपति पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण कराया, जिसका उल्लेख गिरनार अभिलेख में मिलता है।

इस समय भूमि का विभाजन निम्नलिखित रूपों में किया गया था। जैसे–

शब्दावली	**अर्थ**
क्षेत्रभूमि	उपजाऊ भूमि
वास्तुभूमि	निवास योग्य भूमि
चारागाह भूमि	पशुओं के चारा के लिए भूमि
शील भूमि	बंजर भूमि
अप्रहत	जंगली भूमि

- अमर सिंह की पुस्तक अमरकोष में 12 प्रकार की भूमि का वर्णन किया गया है।
- **वाणिज्य व्यापार**–इस क्षेत्र में कुमारगुप्त–I के समय तक बहुत अधिक विकास हुआ था। इस समय श्रेष्ठी लोग मुख्य रूप से व्यापार करते थे। व्यापारिक समूह को निगम कहा गया है।
- व्यापारिक कारवाँ का नेतृत्व करने वाला सार्थवाह कहा गया है।
- मंदसौर अभिलेख में रेशम बुनकर (तंतुवाय) का उल्लेख किया गया है। वासुल मंदसौर अभिलेख के लेखक थे।

इस समय पूर्वी क्षेत्र में ताम्रलिप्ति और पश्चिमी क्षेत्र में भड़ौच सबसे प्रमुख बंदगाह था। इथोपिया से हाथी दाँत, चीन से रेशम (चीनाशंकु) और ईरान, ईराक, बैक्ट्रिया से उत्तम नस्ल का घोड़ा आयात किया जाता था।

- गुप्तकाल में दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से सबसे अधिक व्यापार किया जाता था।
- **मुद्रा–व्यवस्था**–वाणिज्य व्यापार को मुद्रा–व्यवस्था ने गति प्रदान की थी।
- इस समय सोने के सिक्के को दीनार कहा गया है।
- फाहियान के अनुसार गुप्तकाल में दैनिक लेन–देन में कौड़ियों का प्रयोग किया जता था।
- बयाना से सबसे अधिक सिक्कों का ढेर मिला है।
- **पतन का कारण**–गुप्त वंश के पतन के लिए अनेक कारण उत्तरदायी हैं, जैसे–

1. अयोग्य उत्तराधिकारी
2. कमजोर आर्थिक स्थिति
3. सामंतवादी प्रथा की भूमिका
4. हूणों का आक्रमण।

संगम काल

संगम का शाब्दिक अर्थ यहाँ पर समारोह या सम्मेलन या गोष्ठी होता है अर्थात् तमिल साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान एक स्थान पर उपस्थित होकर अपने–अपने तमिल साहित्य प्रसिद्ध विद्वान एक स्थान पर उपस्थित होकर अपने–अपने ग्रंथ को प्रकाशित कराने का प्रयास करते थे, जिसको संगम कहा गया।

संगम काल के बारे में अशोक के अभिलेख, मेगास्थनीज की इंडिका, ऐतरेय ब्राह्मण और पाणिनी के अष्टाध्यायी से भी जानकारी मिलता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण जानकारी संगमकालीन ग्रंथों से मिलता है।

संगमकालीन गंथ के अनुसार पाण्डय वंश के शासकों के संरक्षण में तीन संगम का आयोजन किया गया था। इसमें 197 पाण्ड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया और 8598 तमिल कवि शामिल हुए, जो 9990 वर्षों तक चला था। लेकिन प्रोफेसर नीलकंठ शास्त्री के अनुसार संगम का काल 100 ई. 300 ई. के मध्य का माना जा सकता है। तीनों संगम के बारे में निम्नलिखित रूपों में हमलोग देख सकते हैं।

स्थान	अध्यक्ष	उपलब्ध ग्रंथ
(1) मदूरा (मदुरई)	अगतनियार (अगस्त ऋषि)	×
(2) कपाटपूरम (अलवै)	अगतनियार तोलकापियर	तोलकापियम
(3) उत्तरी मदूरा	नक्कीरर	शिल्पादिकारम् मणिमेखलै, जीवक चिन्तामणि, कुरल

- **शिल्पादिकारम्**–इसका शाब्दिक अर्थ नूनुर की कहानी होता है। इसके लेखक का नाम इलांगोआदिगल है। इसका नायक कोवलन और नायिका कन्नगी और गणिका माधवी के रूप में लिखा गया है। यह सामाजिक संदेश देने वाला ग्रंथ है।
- इसको तमिल साहित्य का इलियड कहा गया है।
- **मणिमेखलै**–कोवलन और माधवी की पुत्री का नाम मणिमेखलै था इसलिए यह नाम पड़ गया। जहाँ शिल्पादिकारम की कहानी समाप्त होती है वहीं से इसकी शुरूआत होती है। इसने बौद्ध धर्म को अपनाकर संसारिक मोह माया का त्याग कर दिया। इसके लेखक का नाम सीतलै संतनार है।
- इस ग्रंथ को तमिल साहित्य का ओडिसी कहा गया है।
- **जीवकचिंतामणि**–इसे जैन धर्म का ग्रंथ माना गया है। इसके लेखक तिरूक्कदेवर थे, जो जैन विद्वान थे। इस ग्रंथ में आठ प्रकार के विवाह का उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ को विवाह ग्रंथ, (मणनूल) कहा गया है।
- **कुरल**–इसे तमिल साहित्य का महाकाव्य या रामायण कहा गया है, जिसके लेखक तिरूवल्लूर है।
- **तोलकापियम्**–इस ग्रंथ के लेखक का नाम तोलकापियर है।
- यह दक्षिण भारत का या तमिल साहित्य का **पहला व्याकरण** ग्रंथ है।

संगमकालीन वंश :

- संगमकाल के अन्तर्गत तीन वंशों ने जैसे–**पाण्ड्य वंश, चोल वंश एवं चेर वंश** ने शासन किया। **अशोक के अभिलेख में इन तीनों वंशों** के साथ–साथ एक और वंश सतीयपुत्र का उल्लेख किया गया है। लेकिन इस वंश की पहचान अभी तक नहीं हुई है। तीनों वंश के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित है–
- **पाण्ड्य वंश**–इस वंश के संरक्षण में तीनों संगम का आयोजन हुआ था। इन लोगों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी मेगास्थनीज की इंडिका से मिलता है। मेगास्थनीज के अनुसार पाण्ड्य राज्य का शासन व्यवस्था किसी महिला के हाथ में केंद्रित था अर्थात् मातृसत्तात्मक लक्षण था। इन लोगों का राजकीय चिन्ह मछली था।
- **नेडियोन**–यह पाण्ड्य वंश का संस्थापक था। इसने मदूरा को राजधानी बनाकर शासन किया। इसने समुद्र पूजा की प्रथा को शुरू किया था। इसने समुद्र पूजा की प्रथा को शुरू किया था। इस शासक ने सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान देते हुए पहरूली नदी पर एक बाँध का निर्माण कराया था।
- **पालशलै–मुडुकुड़मी**–पालशलै का शाब्दिक अर्थ एक से अधिक यज्ञ कराने वाला होता है। इस शासक को अधिक यज्ञ संपन्न कराने वाला कहा गया है।
- **नेडूनजेलियन**–यह पाण्ड्य वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसने तलैयालंगानम् के युद्ध में चेर वंश के शासक शेय को पराजित कर दिया जो इसके सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माना गया है। शेय को हाथी के आँख वाला शासक कहा गया है।
- इसी शासक ने निर्दोष कोवलन को फाँसी पर चढ़ा दिया था। सत्य की जानकारी के बाद इसने आत्महत्या कर लिया और इसी के समय में कोवलन की पत्नी कन्नगी ने पाण्ड्य राज्य का त्यागकर चेर राज्य में शरण ले लिया।
- **नलियकोड्डन**–यह पाण्ड्य वंश का अंतिम शासक था। इसके बाद पाण्ड्य वंश का काल कुछ समय के लिए अंधकार का काल माना जाता है। मध्यकाल में यह लोग पुर्नस्थापित हुए थे।

चोल वंश :

- इन लोगों का कार्यस्थली मुख्य रूप से तमिलनाडु का क्षेत्र था। तमिलनाडु में बेल्लार और पेन्नार नदियों के बीच के क्षेत्र को चोलमण्डलम् या तोण्डेण्डलम् कहा गया है। इसी क्षेत्र में इन लोगों ने शासन व्यवस्था को संचलित यिका था। इन लोगों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी अष्टाध्यायी से मिलता है। इनका राजकीय चिन्ह बाघ था। कुछ महत्वपूर्ण शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–
- **इलनजेतचेन्नी**–यह चोलवंश का संस्थापक था। इसने उरैयूर को अपनी राजधानी बनाया।
- उरैयूर सूतीवस्त्र के लिए विश्वविख्यात था।
- **करिकाल**–यह चोलवंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसे जले हुए पैर वाला शासक कहा गया है।

- यह सात सूरों का ज्ञाता भी था। इसने वेण्णी के युद्ध में चेर और पाण्ड्य वंश की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया जो इसी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माना गया है। इसने सिंचाई के लिए लिए कावेरी नदी के तट पर 160 किमी. लंबा बाँध का निर्माण कराया था और वेण्णी ये युद्ध में कैद किये गए सैनिकों को निर्माण कार्य में लगा दिया था।
- इसने कावेरी के तट पर पुहार नामक एक नगर का निर्माण कराया और उरैयूर के स्थान पर पुहार को राजधानी बना लिया।
- पुहार को कावेरीपट्टनम भी कहते हैं, जहाँ से सबसे अधिक जलमार्ग से व्यापार किया जाता था।
- **ऐलोरा**–इस शासक ने श्रीलंका को जीतकर लगभग 50 वर्षों तक वहाँ शासन किया। इसके बाद कुद समय के लिए चोलों का काल अंधकार का काल माना गया। कालांतर में वियालय के द्वारा पुनः चोल वंश की स्थापना की गयी।

चेर वंश :

- संगमकाल के अन्तर्गत चेर वंश एक महत्वपूर्ण वंश था, जिसको केरल पुत्र के नाम से भी हमलोग जानते हैं। इन लोगों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी एतरेय ब्राह्मण से मिलता है। इन लोगों का राजकीय चिन्ह धनुष था। इन लोगों ने वरूर, और वांजी को अपनी राजधानी बनाकर शासन किया। करूर मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। कुछ प्रमुख शासक निम्नलिखित हैं–
- **उदयनजेरल**–यह चेर वंश का संस्थापक था। परम्परा के अनुसार यह माना गया है कि इसने महाभारत के युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों को भोजन कराया था।
- **कुट्टवन**–चेर वंश के इतिहास में इस शासक को अनेक हाथियों वाला शासक कहा गया है।
- **शेनगुट्टवन**–यह चेर वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसको लालचेर भी कहा गया हैं इसी समय में कन्नगी पाण्ड्य राज्य को छोड़कर चेर राज्य में आकर समाधी ले लिया था।
- कन्नगी के स्मृति में इसने कन्नगी पूजा या पत्नी पूजा की पूजा को प्रारंभ किाय।
- **इरम्पोरई**–यह चेर वंश का अंतिम शासक था। इसके समय में पड़ोसी राज्य तडगुर के शासक नडुमानअंजी ने स्वर्ग से गन्ने के पौधे को लाकर दक्षिण भारत में गन्ने की कृषि का कार्य प्रारंभ कराया।

विविध तथ्य :

- राजा प्रतिदिन अपनी सभा में बैठक करता था, जिसका नलवै कहा गया।
- सर्वोच्च न्यायालय को मनरम् और गुप्तचर अैर्रर या वै कहा गया।
- इस समय पुहार नामक बन्दरगाह से सबसे अधिक व्यापार किया जाता था।
- वाणिज्य व्यापार के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी 'पेरिप्लस–ऑफ–द–ऐरिथ्रियन–सी' नामक ग्रंथ से प्राप्त होता है।
- अरिकामेडु से रोम के साथ व्यापार करने का साक्ष्य भी मिला है।
- याल नामक वाद्य यंत्र से मनोरंजन किया जाता था। इस समय भू–राजस्व को कराई और सीमा शुल्क को उलगु कहा गया है।
- सबसे प्रमुख देवता मरूगन थे। इनका प्रतीक चिन्ह मुर्गा था।

पल्लव वंश

- दक्षिण भारत के इतिहास में चोल, चालुक्य और पल्लव तीन महत्वपूर्ण वंशों का नाम शामिल है। पल्लव वंश को द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा का वंशज माना गया है। समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार 350 ई.–575 ई. के बीच पल्लव वंश के 16 शासक हुए, जिसमें समुद्रगुप्त ने अपने अभियान के क्रम में विष्णुगोप को पराजित किया था। यह लोग स्वतंत्र शासन नहीं थे। इतिहासकारों के अनुसार यह लोग कुषाणों के सामंत थे।
- दक्षिण भारत में द्रविड़ शैली के अन्तर्गत इन लोगों ने क्षेत्रीय शैली को जन्म दिया, जिसके लिये याद किया जाता है।

शासक	शैली	शासक	शैली
महेन्द्रवर्मन–I	महेन्द्र शैली	नरसिंहवर्मन–I	मामल्ल शैली
नरसिंहवर्मन–II	राजसिंह शैली	नंदीवर्मन	नंदीवर्मन शैली

- 350 ई. से लेकर 897 ई. के बीच पल्लव वंश के अन्तर्गत निम्नलिखित शासकों ने शासन किया था, जिसमें कुछ प्रमुख का वर्णण यहाँ किया जा सकता है–
- **वप्पदेव**–यह पल्लव वंश का संस्थापक था। यह सामंत के यप में शासन कर रहा था। इसको कुषाणों का सामंत माना गया हैं इसने एक छोटे से क्षेत्र में अपने राज्य को स्थापित किया था।
- **सिंहविष्णु (570–600)** यह पल्लव वंश के प्रथम स्वतंत्र शासक थे। इन्होंने चोलों का क्षेत्र तोण्डेमंडलम् को जीत लिया और इस उपलक्ष्य में अवनी सिंह की उपाधि धारण किया।
- इसको पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक कहा गया है।
- इसके समय में चालुक्यों के साथ संघर्ष प्रारंभ हुआ, जिसमें यह सफल हुए। इसने महाबलिपुरम् में आदिवराह मंदिर का निर्माण कराया, जिससे स्पष्ट होता है कि यह वैष्णव/भागवत धर्म का अनुयायी था।
- इसने **काँची** को अपनी राजधानी बनाया था।
- इसके राजदरबार में प्रसिद्ध विद्वान भारवि रहते थे, जिन्होंने किरतार्जुनीय नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- **महेन्द्रवर्मन–I (600-630) :** इसने महेन्द्रमर्वन शैली का जन्म दिया था। चालुक्यों के साथ संघर्ष में यह भी सफल रहा। इसने विचित्रचित, गुणभर, मातविलास, आदि की उपाधि धारण की थी।
- इसने मतविलास प्रहसन नामक ग्रंथ की रचना की थी।

- शैव धर्म के प्रसिद्ध संत और संगीताचार्य भैरवाचार्य के दिशा निर्देशन में संगीत शास्त्र की पुस्तक कुडमिमालय की रचना की गयी थी, जिससे स्पष्ट होता है कि यह शासक संगीत में भी रूची रखता था।
- **नरसिंहवर्मम–I (630-668) :** यह पल्लव वंश के सबसे महत्वपूर्ण शासक थे। इनके बारे में कुर्रम दानपत्र अभिलेख और कशाकुट्टी अभिलेख से जानकारी मिलता है। यह शासक मामल्ल शैली का जनक था। इसने मामल्ल या महामल्ल की उपाधि किया था। इसने पल्लव राज्य का सबसे अधिक विस्तार किया।
- इसने मामल्लपुरम्/महाबलिपुरम् नामक नगर का निर्माण कराया।
- इसने महाबलिपुरम् में रथमंदिर का निर्माण कराया।
- रथमंदिर को सप्तपैगोडा भी कहा जाता है, जो रथ के आकार का है और पाँच पाण्डव, द्रोपदी और गणेश को समर्पित है।
- **इसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन–II को पराजित कर वतापीकोण्ड की उपाधि धारण की।**
- इसने पुलकेशिन–II को पराजित करने के बाद उसके पीठ पर विजय शब्द अंकित कर दिया। यह शुद्ध शूरमार और परमाण के युद्ध के नाम से विख्यात है।
- इसी शासक के समय में **व्हेनसांग ने काँची** की यात्रा की थी।
- **महेन्द्रवर्मन–II (668-670) :** इसे मध्यम लोकपाल कहा गया है। इसने ब्राह्मणों की संख्या घटिका को दान दिया था, जहाँ पर शिक्षा–दीक्षा का कार्य भी होता था।—
- **परमेश्वरवर्मन–I (670-695) :** शिक्षा के क्षेत्र में अधिक रूची रखने के कारण विधानविनीत की उपाधि दी गयी थी इसने महाबलिपुरम् में गणेश मंदिर का निर्माण कराया।
- **नरसिंहवर्मन–II (695-728) :** हय राजसिंह शैली का जनक था। इसने राजसिंह की उपाधि भी धारण किया था।
- इसने **काँची में कैलाशनाथ मंदिर** और महाबलिपुरम् में समुद्रतटीय मंदिर और एरावतेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।
- दसकुमारचरित के लेखक दण्डिन इसके समकालीन थे।
- **अपराजित (879–897) :** चोल वंश के आदित्य–I ने इसको गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत कर दिया।

चालुक्य वंश

- दक्षिण भारत के इतिहास में चालुक्य वंश का महत्वपूर्ण स्थान है। इन लोगों ने तीन शाखाओं में विभाजित होकर शासन किया था, जिसमें वतापी के चालुक्त सबसे महत्वपूर्ण थे। इन लोगों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **जयसिंह–**यह चालुक्य वंश का संस्थापक था। इसने सामंत के रूप में शासन किया, क्योंकि यह स्वतंत्र शासक नहीं था।
- इसने वतापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
- धार्मिक परम्पराओं के अनुसार चालूक्यों का जन्म भगवान ब्रह्मा के चुलूक से हुआ है, और इसी चुलुक शब्द से चालुक्य शब्द का जन्म हुआ था।
- पृथ्वीराजरासो के अनुसार चालुक्यों का जन्म अग्नि–कुण्ड से हुआ था।
- **रणराज (520–550)–**यह गदा युद्ध में माहिर थे, इसलिए इसे रणराज्ञ की उपाधि से सम्मानित किया गया था। इनकी तुलना भीम के साथ किया था।
- **पुलकेशिन–I (550-567) :** यह प्रथम स्वतंत्र शासक था। इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी। इसने अश्वमेघ यज्ञ भी सम्पन्न कराया था, जिससे स्पष्ट होता है कि इसके समय में क्षेत्र का विस्तार हुआ होगा। इसको चालुक्य वंश का वास्तविक संस्थापक माना गया है।
- **पुलकेशिन–II (609-645) :** यह चालुक्य वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसके **बारे में एहोल अभिलेख** से जानकारी मिलती है, जिनके लेखक रविकृति थे।
- **एहोल को** मंदिरों का नगर भी कहा गया है।
- इसने हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के किनारे पराजित किया था, जिसका उल्लेख एहोल अभिलेख में है।
- इस विजय के उपलक्ष्य में इसने परमेश्वर, सत्याज्ञय, श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराज आदि की उपाधि की। लेकिन पल्लव वंश के शासक नरसिंहवर्मन–I ने इसको पराजित करके युद्ध भूमि में इसकी हत्या कर दी।
- इसी के समय में **व्हेनसांग ने वतापी** की यात्रा की थी।
- **विक्रमादित्य–II (735-745) :** यह अंतिम महत्वपूर्ण शासक था। इसने पल्लव वंश के शासक नंदीवर्मन को पराजित करके कांचिनकोण्ड की उपाधि धारण की।
- इसकी प्रथम पत्नी लोक महादेवी ने पडकल में विरूपाक्ष महादेव मंदिर और दूसरी पत्नी त्रिलोकी महादेवी ने त्रिलोकेश्वर मंदिर का निर्माण कराया, जो द्रविड़ शैली में बना हुआ है, लेकिन इसको चालुक्य शैली कहते हैं।
- **कीर्तिवर्मन–II (745-753) :** यह वतापी के चालूक्यों में अंतिम शासक था। राष्ट्रकूटों ने इसको गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत कर दिया।
- **वेंगी के चालुक्य–**यह आंध्रप्रदेश का क्षेत्र है। पुलकेशिन–II ने वेंगी को जीतकर अपने भाई विष्णुवर्धन को दे दिया जिसने यहाँ पर चालूक्य वंश को स्थापित किया जो वेंगी के चालुक्य कहलाए। कालांतर में यह वंश–चालुक्य वंश के नाम से विख्यात हुआ।
- **कल्याणी के चालुक्य–**यह महाराष्ट्र का क्षेत्र है। तैलप–II ने राष्ट्रकूओं की सत्ता को समाप्त करते हुए कल्याणी में चालुक्य वंश को स्थापित किया। इस वंश के महत्वपूर्ण शासक सोमेश्वर–III ने मानसोल्लास नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक विक्रमादित्य–VI था, जिसने 1076 ई. में चालुक्य संवत् को जारी किया था।
- विक्रमादित्य–VI के राज्य कवि **विल्हण थे, जिन्होंने विक्रमांकदेवचरित नामक** ग्रंथ की रचना की थी।
- इस शासक के समकालिन विज्ञानेश्वर थे, जिन्होंने मिताक्षरा नामक ग्रंथ की रचना की थी जो, हिन्दू उत्तराधिकार से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

- पम्पा, पोन्ना, रन्ना कन्नड़ के त्रिरत्न माने गए हैं।
- इस प्रकार चालुक्य वंश को समाप्त करने का श्रेय राष्ट्रकूटों को दिया जाता है, लेकिन अंततः चालूक्यों ने ही राष्ट्रकूटों की सत्ता को समाप्त कर दिया।

चोल वंश

- चोल वंश के बारे में प्राचीन भारत में दो भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जाता है। (i) संगमकाल के अंतर्गत (ii) नौवीं शताब्दी में विजयालय द्वारा स्थापित चोल वंश।
- उत्तरमेरूर (तमिलनाडु) अभिलेख से इन लोगों के उपलब्धियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। स्थानीय स्वशासन और नटराज की मूर्ति के लिए चोल वंश विख्यात है। इन लोगों ने जिन क्षेत्र में शासन व्यवस्था को संचालित किया, उसे चोलमंडम् या तोण्डेमंडलम् कहा गया है। कुछ प्रमुख शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–
- **विजयालय (850–875)** – यह चोलवंश का संस्थापक था।
- इसने तंजौर को जीतकर राजधानी बनाया और इस उपलक्ष्य में नरकेसरी की उपाधी धारण किया।
- इसने अपनी राजधानी तंजौर में चोलेश्वर मंदिर का निर्माण कराया, जो चोलों का प्रारभिक मंदिर है।
- **आदित्य–I (875-907) :** इसके समय में पल्लवों के साथ संघर्ष हुआ और इसने पल्लव वंश के शासक अपराजित को पराजित करके उस वंश का अंत कर दिया। इस उपलक्ष्य में कोदण्डराम की उपाधी धारण की।
- **परांतक–I (907-955) :** इसने उत्तरमेरूर अभिलेख को जारी किया था, जिससे इस शासक के साथ–साथ चोलों के उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है। इसने पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण करके राजधानी मदूरा को जीत लिया और इस उपलक्ष्य में मदूराकोण्ड की उपाधी धारण की। तक्कोलन (949) का युद्ध चोल और राष्ट्रकूटों के बीच हुआ था। राष्ट्रकूट वंश के शासक कृष्ण–III ने इसको पराजित कर दिया।
- **परांतक–II (956-973) :** इसको इतिहास में सुंदर चोल के नाम से याद किया जाता है।
- **राजराज–I/अरिमोलीवर्मन (985–1014)**–यह सम्राज्यवादी प्रवृत्ति का शासक था। इसने श्रीलंका पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक महेन्द्रपंचम् को पराजित करके उनकी राजधानी अनुराधापुरम् पर अधिकार कर लिया। जीते हुए क्षेत्र का नाम मामुण्डलीचोलमण्डलम् रख दिया और इसकी राजधानी पोलोनरूवा को बनाया।
- इसके समय में शैलेन्द्र वंश के शासक (जावा–सुमात्रा क्षेत्र) श्रीमार–विजयोतुंग–वर्मन ने नागपट्टम में एक बौद्ध मठ का निर्माण कराया था।
- इस शासन ने सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया था साथ ही ऐतिहासिक तिथियों के साथ अभिलेख को भी जारी किया था।
- कला के क्षेत्र में इसने अपनी **राजधानी तंजौर में राजराजेश्वर मंदिर या वृहदेश्वर मंदिर (शैव धर्म) का निर्माण कराया,** जो द्रविड़ कला सर्वोत्तम कृति माना जाता है।
- **राजेन्द्र प्रथम (1014 – 1044)** यह चोल वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसी के समय में सबसे अधिक क्षेत्र का विस्तार हुआ। इसने भी श्रीलंका के विरूद्ध अभियान किया जो सफल रहा। इसने श्रीलंका के राजा, रानी, उनकी पुत्री, वाहन, राजमुकुट पर अधिकार कर लिया। राजमुकुट का अपमान करने के लिए इसकी आलोचना की गयी है। श्रीलंका के शासक महेन्द्र पंचम् तंजौर के कैदखाने में मृत्यु को प्राप्त हुए।
- इसने शैलेन्द्र वंशी शासक श्रीमार–विजयोतुंगवर्मन के साथ भी संघर्ष किया और उनके राज्य पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। इसके साथ ही मालदीव और पीगू के क्षेत्र पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- यह प्रथम शासक था, जिसमें साम्राज्य विस्तार के क्रम में बंगाल के क्षेत्र को भी अपने नियंत्रण में कर लिया।
- गंगा को पार करने एवं इस क्षेत्र में विजयय हासिल करने के उपलक्ष्य में **गंगइकोण्डचोल** की उपाधि धारण की।
- इसने कावेरी नदी के तट पर गंगइकोण्ड चोलपुरम् नामक नगर का निर्माण कराया और इसी स्थल पर वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।
- इसने सिंचाई व्यवस्था हेतु चोलगंगम् नामक नहर (तड़ाग) का निर्माण कराया।
- **राजाधिराज–I (1044-1052) :** इसके समय में कोप्पम का युद्ध सम्पन्न हुआ। इसी युद्ध में घायल होने के कारण युद्ध भूमि में ही वह वीर गति को प्राप्त हुआ।
- **अधिराजेन्द्र (1070) :** यह विजयालय द्वारा स्थापित चोल वंश का अंतिम शासक था। यह आमलोगों के बीच लोकप्रिय नहीं था। जनसमूह के द्वारा इसकी हत्या कर दी गयी।
- **कुलोतुंग–I (1070-1120) :** अधिराजेन्द्र की हत्या के बाद गद्दी का संकट सुलझाने के लिए कुलोतुंग प्रथम को शासक बनाया गया। यहाँ से चोल–चालुक्य वंश की शुरूआत हुई।
- यह प्रथम शासक था, जिसने चीन के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने का सफल प्रयास किया और 72 व्यापारियों का दल चीन भज दिया।
- अभिलेखों में इस शासक को शुंगमितवर्त (करो को हटाने वाला) कहा गया है।
- **राजेन्द्र–III (1250-1279)**-यह अंतिम शासक था, जिसको पाण्ड्य वंश के शासक कुलशेखक ने गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत किया और इन लोगों के क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया।

विविध तथ्य

- प्रशासन के अंतर्गत राजा सर्वोच्च व्यक्ति होता था, जो अपनी सभा (नलवै) में प्रतिदिन बैठक करता था।
- सम्राज्य को मण्डलम में मण्डलम् को कोट्टम में, कोट्टम को नाडू में, नाडू को कुर्रम और कुर्रम को उर में विभाजित किया गया था।
- उर सर्वसाधारण लोगों की सभा थी।
- चोल वंश को स्थानी स्वशासन के लिए याद किया जाता है। इसके अंतर्गत सभा की बैठक तालाब के किनारे, वृक्ष के नीचे सम्पन्न होता था। सभा के सदस्यों का चुनाव लौटरी पद्धति से किया जाता था।
- इस समय वलंगै (दायाँ पक्ष), इडंगै (बायाँ पक्ष) समाज के दो महत्वपूर्ण अंग थे। जिसमें वलंगै के पास विशष अधिकार होता था। इंडगै राजा का विरोध करता था।
- चोल वंश अपने नौसेना के लिए विख्यात थे।
- इस समय शैव धर्म का अधिक विकास हुआ था।
- कला के क्षेत्र में द्रविड़ कला का सबसे अधिक विकास दिखलाई पड़ता है